विद्यालय पत्रिका
के.वि. मन्दसौर
2020-21
THANK YOU FOR CONTINUALL
INSPIRES ME TO DO BEST.
FOUND GUIDENCE,
FRIENDSHIP,LOVE, DISCIPLIN
PERSON. AND THAT PE
IS YOU.

सरस्वती-वंदना

वंदना, शुभ वंदना, शारदे माँ वन्दना।
शुभ प्रभात की, तुम ही पूजा,
दिव्य ज्योति, दिव्य आराधना,
विद्यादात्री तुम हमारी, ज्ञान दीपक तुम हमारी
वंदना, शुभ वंदना, शारदे माँ वंदना।

चन्द्र किरण-सी, धवल उज्जवल,
हंस-वाहिनी, वीणा वादिनी।
मंगल दीप से करें अर्चना।
वंदना, शुभ वंदना, शारदे माँ वन्दना।
सप्तसुर की तुम हो संगम,
बुद्धिबल, तुम भाग्य विधाता।
वंदना, शुभ वंदना, शारदे माँ वन्दना।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

हमारे प्रेरणा स्रोत

श्री सोमित श्रीवास्तव,

उपायुक्त , केंद्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

श्री मनोज पुष्प जिलाधीश , मंदसौर

विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष

केंद्रीय विद्यालय मंदसौर

श्रीमती रानी डांगे

सहायक आयुक्ता , केंद्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

श्रीमती श्रद्धा झा

सहायक आयुक्ता , केंद्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री सोमित श्रीवास्तव

उपायुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन ,भोपाल संभाग

संरक्षक

श्री प्रिय दर्शन गर्ग

प्राचार्य ,केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर

शिक्षक संपादक मण्डल

हिन्दी विभाग

श्री हेमिल्टन मसीह स्नातकोत्तर शिक्षक- हिन्दी

सुश्री सीमा मीणा प्र .स्नातक शिक्षक -हिन्दी

अंग्रेजी विभाग

श्रीमती अंजू सलीम स्नातकोत्तर शिक्षक-अँग्रेजी

श्रीमती लीना रश्मि चौहान प्र .स्नातक शिक्षक - अँग्रेजी

श्री एन के त्रिवेदी प्र .स्नातक शिक्षक - अँग्रेजी

संस्कृत विभाग

श्री मेघराज मीणा प्र .स्नातक शिक्षक - संस्कृत

कला विभाग

श्रीमती प्रतिमा तकियार प्र .स्नातक शिक्षक - कला

प्राथमिक विभाग

श्री ऋत्विक अग्रवाल मुख्याध्यापक

मुख्य पृष्ठ डिज़ाइन तथा पत्रिका के पेज़ों की एडीटिंग, पेज़ बोर्डर डिज़ाइन तथा सौंदर्यीकरण कार्य

श्री मेघराज मीणा प्र .स्नातक शिक्षक - संस्कृत

श्री सोमित श्रीवास्तव , उपायुक्त

SHRI SOMIT SHRIVASTAV

DY. COMMISSIONER

केंद्रीय विद्यालय संगठन ,भोपाल संभाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGTHAN

BHOPAL REGION

मैदा मील के सामने/Opp. Maida Mill -462011

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर परिवार के द्वारा विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चित ही इस पत्रिका से विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को समस्त प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी का लाभ प्राप्त होगा एवं उनमें छिपी प्रतिभा को प्रकट करने का एक नया आयाम मिलेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन एवं उनके बहुमुखी विकास में सहायक सिद्ध होगी।इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्राचार्य, अध्यापकगण, विद्यार्थियों एवं विद्यालय के सभी कर्मचारी प्रशंसा के पात्र है। पत्रिका के प्रकाशन के अनुपम प्रयास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई।

श्री सोमित श्रीवास्तव
उपायुक्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

केन्द्रीय विद्यालय
मंदसौर ,ऋषियानंद नगर ,
रेवास देवड़ा रोड़ मंदसौर–
458001

Kendriya Vidyalaya Mandsaur,
Rishiyanand Nagar,
Rewas - Dewara Road
Mandsaur – 458001

संदेश

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर की ई – विद्यालय पत्रिका के प्रकाशन पर मुझे अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है, विद्यालयीन पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य विद्यालय की गतिविधियों एवं उसमें अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की लेखन प्रतिभा एवं मनोबल को बढावा देना है। ई विद्यालय पत्रिका के संपादक मण्डल ने अपने दायित्व को बखूबी अंजाम दिया है, कोरोना संक्रमण के संघर्ष के इस दौर में उच्चस्तरीय गुणवत्ता के साथ पत्रिका का नियमित ई-प्रकाशन अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ, रचनाएँ, कविताये और लेख बच्चों की रचनात्मकता प्रतिभा तथा उनकी सृजनशीलता का परिचायक है, यह पत्रिका विद्यालय की विविध गतिविधियों का दर्पण है, तथा इसमें विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकों के गतिशील नेतृत्व तथा विद्यालयीन शिक्षण में हुई प्रगति की स्पष्ट झलक दिखती है।

मैं प्राचार्य एवं संपादकीय टीम को उनके मार्गदर्शन एवं कुशल संपादन हेतु बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि वे इस ई- विद्यालय पत्रिका के माध्यम से बच्चों की साहित्यिक रूचि एवं लेखन प्रतिभा को आगे भी इसी तरह मुखरित एवं विकसित करते रहेंगे।

श्री मनोज पुष्प जिलाधीश मंदसौर
विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर

केन्द्रीय विद्यालय
मंदसौर ,ऋषियानंद नगर ,
रेवास देवड़ा रोड़ मंदसौर–458001

Kendriya Vidyalaya Mandsaur,
Rishiyanand Nagar, Rewas -
Dewara Road Mandsaur - 458001

प्राचार्य की कलम से.....

बच्चों का बहुमुखी विकास शिक्षा का उद्देश्य होता है। बच्चों में विषय के ज्ञान के साथ साथ उनमें नैतिकता, अनुशासन और देशप्रेम के गुणों का विकास भी उतना ही आवश्यक है। शिक्षा के व्यापक लक्ष्य हैं, बच्चों के भीतर विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता विकसित करना, दूसरों के कल्याण और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना और समाज व देश के प्रति जिम्मेदारी को समझना। विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, लेखन। रचनाकार अपनी कविता, कहानी, व्यंग्य, लघुकथा, लेख या चित्रों के माध्यम से अपने स्वतंत्र विचारों को खूबी से व्यक्त करता है। विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य इन लेखकीय प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है।

इस पत्रिका में हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत में बच्चों ने अपने विचारों को विभिन्न विधाओं में व्यक्त किया है। ये रचनाएं उनके बालमन की कल्पना की उड़ान भी है और उनकी सृजनात्मकता की पहचान भी है। इनमें आप बच्चों के ज्ञान और विवेक की छबि भी पाएंगे और उनकी मौलिक सोच को भी जान सकेंगे। पत्रिका में बच्चों ने विभिन्न सामाजिक समस्याओं, आर्थिक विषमताओं और एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमारे कर्तव्यों के बारे में भी लिखा है साथ ही हमारे नैतिक मूल्यों और रिश्तों के महत्व को भी अपनी लेखनी में पिरोया है। बच्चों के साथ साथ विद्यालय के शिक्षकों की रचनाओं को भी आप पत्रिका में पाएंगे। बच्चों और शिक्षकों का यह सम्मिलित प्रयास आपको भाएगा, यही उम्मीद है।

प्रियदर्शन गर्ग
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर

स्टाफ लिस्ट 2020-21

क्रम सं	नाम	पदनाम
1	श्री प्रियदर्शन गर्ग	प्राचार्य
2	श्री ऋत्विक अग्रवाल	मुख्याध्यापक
3	श्रीमती अंजू सलीम	स्नातकोत्तर शिक्षक-अँग्रेजी
4	श्री हेमिल्टन मसीह	स्नातकोत्तर शिक्षक- हिन्दी
5	श्री मनीष जायसवाल	स्नातकोत्तर शिक्षक-कम्प्युटर विज्ञान
6	श्री राजेश कुमार उपाध्याय	स्नातकोत्तर शिक्षक-जीव विज्ञान
7	श्री दिनेश सांचोरा	स्नातकोत्तर शिक्षक-भौतिक विज्ञान
8	श्री भूपेन्द्र पुरोहित	स्नातकोत्तर शिक्षक-वाणिज्य
9	श्रीमती अर्पिता शर्मा	स्नातकोत्तर शिक्षक-रसायन विज्ञान
10	श्रीमती डिंपल ताराम	स्नातकोत्तर शिक्षक-गणित
11	श्री सौरभ कुमार सोनी	स्नातकोत्तर शिक्षक-अर्थशास्त्र
12	श्री एन के त्रिवेदी	प्र .स्नातक शिक्षक – अँग्रेजी
13	श्री अंसार अहमद चौधरी	प्र .स्नातक शिक्षक – सामाजिक अध्ययन
14	श्री आर एस मक्कड़	प्र .स्नातक शिक्षक – गणित
15	श्री दुर्गेश कुमार लोहार	प्र .स्नातक शिक्षक – गणित
16	श्री मेघराज मीणा	प्र .स्नातक शिक्षक – संस्कृत
17	श्रीमती वेणु शर्मा	प्र .स्नातक शिक्षक – विज्ञान
18	श्रीमती लीना रश्मि चौहान	प्र .स्नातक शिक्षक – अँग्रेजी
19	श्री मयूर वच्छानी	प्र .स्नातक शिक्षक – सामाजिक अध्ययन
20	सुश्री सीमा मीणा	प्र .स्नातक शिक्षक –हिन्दी
21	श्री संजय दीक्षित	प्र .स्नातक शिक्षक – शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा
22	श्रीमती प्रतिमा तकियार	प्र .स्नातक शिक्षक – कला
23	श्री बलराम पाटीदार	प्र .स्नातक शिक्षक – कार्यानुभव
24	श्री सोमला भूरिया	प्र .स्नातक शिक्षक – पुस्तकालयाध्यक्ष
25	श्री आलोक पंजाबी	प्राथमिक शिक्षक
26	श्रीमती तमन्ना सेवलदासानी	प्राथमिक शिक्षिका
27	श्री कुलदीप गहलोत	प्राथमिक शिक्षक
28	सुश्री लक्ष्मी	प्राथमिक शिक्षक
29	श्री गौरव कुमार	प्राथमिक शिक्षक
30	श्री नीतेश यादव	प्राथमिक शिक्षक
31	श्री रवि प्रकाश सिंह	प्राथमिक शिक्षक
32	श्री महेश कुमार	प्राथमिक शिक्षक
33	श्री अक्षय लाल	प्राथमिक शिक्षक
34	श्रीमती नीता जोशी	प्राथमिक शिक्षिका
35	श्रीमती संगीता वर्मा	प्राथमिक शिक्षक(संगीत)
36	श्री मधुसूदन शर्मा	वरिष्ठ सचिवालय सहायक
37	श्री आलोक सिंह	कनिष्ठ सचिवालय सहायक
38	श्री सुनील कुमार परमार	सब स्टाफ
39	श्री राजेन्द्र कुमार राठौड़	सब स्टाफ
40	श्री ख़ीमा शंकर चौहान	सब स्टाफ

शिक्षकों की
कलम से

दरख्वास्त

प्यार ही प्यार हो अब हर तरफ, नफरतों का अंत हो,
इंसान अब इंसान का कुछ इस तरह मुरीद हो।

न जीत का अहम भरा, न हार से हताश हो,
बस डटें और न हटें, ये वक्त की ताकीद हो।

हो बीमारी या बुराई, मिल कर करे यूँ सामना,
ज़रा हरेक इस एकता का, गवाह चश्मदीद हो।

मुल्क के अमनो चमन का हर नज़ारा जश्न हो,
खुशियाँ बिखेरे हर त्यौहार, चाहे दीवाली या ईद हो

है धरा ये हम सभी की, इसको सजा सँवार दो,
स्वच्छ और निर्मल जमीं पर, मासूम हर खुशामदीद हो

श्रीमती वेणु शर्मा
प्र.स्नातक शिक्षक – विज्ञान

Venu

राजेश कुमार उपाध्याय स्नाकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर (म.प्र.)

एक पत्र शिक्षा आयोग के नाम

महोदय,

पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण कारण और निवारण, जैव विविधता और जैव विविधता संरक्षण, सतत विकास जैसे कई महत्वपूर्ण विषय देश की आजादी के बाद समय समय पर शिक्षा आयोग द्वारा प्रकाशित शिक्षा नीतियों में सम्मिलित किए गए और हमारी पाठ्यपुस्तकों का हिस्सा भी रहे है, विषय अध्यापकों द्वारा पढाये गए और विद्यार्थियों द्वारा पढ़ा भी गया लेकिन उपरोक्त विषयों का अध्ययन और अध्यापन केवल विषयसूची को पूर्ण करने एवं परीक्षा में अंक लाने तक ही सीमित रहा है | हम यह भी देख रहे है कि उपरोक्त समस्याएँ तब से न सिर्फ स्थायी बनी हुई है बल्कि दिन प्रतिदिन बढती ही जा रही है | हमारी शिक्षा पद्धति उपरोक्त संवेदनशील एवं ज्वलंत विषयों पर विद्यार्थियों को संवेंदनशील एवं व्यावहारिक बनाने में नाकाम रही है|

महोदय , उपरोक्त विषय में मेरा सुझाव यह है कि हमें उपरोक्त विषयों का अध्ययन और अध्यापन सिर्फ विद्यालय , विषय-वस्तु ,और विद्यार्थियों के लेखन कौशल तक सीमित ना रखते हुए व्यावहारिक बनाने पर ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है| जैसे विद्यार्थी को कक्षा में उत्तीर्ण तभी माना जाये जब वे सत्रांत तक निम्न तालिका के अनुसार अपने विद्यालय परिसर या अपने घर के आस पास या किसी अन्य स्थान पर पौधरौपण कर उन पौधों को पोषित और संरक्षित करने की जानकारी अपने विद्यालय में प्रस्तुत करें :-

कक्षा	विद्यार्थी द्वारा पौधरौपण कर उन्हें पोषित व संरक्षित करने का लक्ष्य (पौधों की संख्या)	विद्यार्थी द्वारा पौधरौपण कर उन्हें पोषित व संरक्षित करने का कुल लक्ष्य (पौधों की कुल संख्या)
1	1	1
2	2	03 (01 पौधा जो कक्षा 01 में लगाया था + 02 पौधे वर्तमान कक्षा 02 में लगाना है)
3	3	6 (03+03)
4	4	10 (06+04)
5	5	15 (10+05)
6	6	21 (15+06)
7	7	28 (21+07)
8	8	36 (28+08)
9	9	45 (36+09)
10	10	55 (45+10)
11	11	66 (55+11)
12	12	78 (66+12)

नोट :- 1. विद्यार्थी द्वारा उपरोक्त वृक्षारोपण से सम्बंधित प्रस्तुत की गई जानकारी की सत्यता की जाँच करने के लिए विद्यालय द्वारा एक ऑडिट टीम का गठन किया जावें जो समय समय पर विद्यार्थी द्वारा किये गये प्लांटेशन रिकॉर्ड की वास्तविकता की जाँच करें और सम्बंधित विद्यार्थी के पोर्ट फोलियो में अंकित करें |

2. विद्यार्थी उपरोक्त कार्य को पूर्ण करने में अपने पालक,सामाजिक संगठन,सरकार या किसी एन.जी.ओ आदि की सहायता ले सकता है |

3. उपरोक्त विषय को पर्यावरण मित्र 78 (Eco Friendly 78) नाम दिया जा सकता है जो कि पूर्ण रूप से एक प्रायोगिक विषय होगा |

4. उपरोक्त विषय में विद्यार्थी द्वारा किये गये प्रदर्शन को प्रत्येक वर्ष वार्षिक परीक्षा परिणाम में प्रदर्शित किया जायें साथ ही पूरे बारह वर्षों के प्रदर्शन के आधार पर अंक/ग्रेड दी जा सकती है जो कक्षा बारहवी की अंक सूची में प्रदर्शित भी हों |

5 . विद्यार्थी द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में अन्य कोई भी कार्य या योगदान दिया जाता है तो उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिए एवं कक्षा बारहवीं की अंक सूची पर उस कार्य का वर्णन भी होना चाहिए|

6. बिंदु 4 और 5 में विद्यार्थी द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में किये गये उत्तम प्रदर्शन के आधार पर उन्हें शासकीय एवम् अशासकीय नौकरियों में भी वरीयता दी जानी चाहिए|

7.उपरोक्त योजना ZERO INVESTMENT BASED है, क्योंकि विद्यार्थी प्लांटेशन के लिए पौधा सरकारी नर्सरी से मुफ्त में ले सकता है साथ ही ऑडिट टीम का गठन विद्यालय के अध्यापकों के द्वारा किया जा सकता है जिन्हें कोई अलग से पेमेंट करने की आवश्यकता नहीं है |

महत्व:-

1. उपरोक्त बारह वर्षीय शिक्षा योजना के अंतर्गत जब विद्यार्थी कक्षा बारहवी उत्तीर्ण करेगा तब तक वह कुल 78 पौधों को न सिर्फ प्रकृति को समर्पित कर देगा बल्कि उसके द्वारा पिछले बारह वर्षों में रोपित कई पौधे हरे-भरे वृक्षों का आकर ले चुकें होंगें जो जैव मंडल में रहने वाले जीवों को अपने फलों से पोषित कर रहे होंगे उन्हें ठंडी छांव दे रहे होंगे इसके अलावा कई टन प्राणवायु ऑक्सीजन का उत्सर्जन कर चुके होंगे |

2. विद्यार्थी अपने इस बारह वर्षीय व्यावहारिक कार्य के दौरान अपने अनुभवों से प्रकृति को और करीब से समझ पायेगा साथ ही पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में अपनी भूमिका को महसूस करेगा |

3. वर्तमान समय में यदि किसी विद्यार्थी के सामने विकास के नाम पर या अन्य किसी कारण से किसी वृक्ष को काटा जा रहा है या पर्यावरण के साथ किसी प्रकार की छेड़-छाड़ की जा रही है,तो वह अपनी संवेदनाएं ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पता है क्योंकि उसके पास उपरोक्त विषय-वस्तु का केवल सैद्धांतिक ज्ञान है ,लेकिन शिक्षा में उपरोक्त बदलाव के बाद वह अपने अनुभवों से सीखेगा कि किसी पेड़ को बड़ा करने में कितना समय और कितनी मेहनत लगती है? तब हमारा वह विद्यार्थी निर्भीक रूप से पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आएगा |

4. वर्तमान समय की प्रमुख समस्याऔं में जलवायु प्रदूषण, ग्लोबल वॉर्मिंग, भूगर्भीय जल में लगातार कमी (decreasing ground water level) इत्यादि है जो ना सिर्फ हमारे देश की बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्याऐ है जिनका हल केवल और केवल वृक्षारोपण(Re for-estation) से ही संभव है अत: पर्यावरण मित्र 78 (Eco Friendly 78) को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बना दिया जाए न कि पर्यावरण प्रेम का दिखावा मात्र कुछ अवसरों जैसे विश्व पर्यावरण दिवस ,पृथ्वी दिवस पर झंडे, बैनर और होर्डिंग्स लगाकर किया जावें |

5. इन समस्याऔं को हमारी सरकारें हल कर सकें या न कर सकें पर हमारे उर्जावान नन्हें छात्र अवश्य हल कर सकते है, बस एक शुरुआत की आवश्यकता है|

महोदय , आज के समय में कक्षा बारहवी तक अध्यनरत अधिकांश छात्रों का व्याहारिक ज्ञान इतना भी नहीं है कि वे गेहूँ, ज्वार, मक्का और बाजरा आदि के दानों में फर्क कर सकें | इसके अलावा उनके ही विद्यालय के बागान में लगे अधिकांश पेड़ पौधों का नाम तक वे नहीं जानते है| मेरा यह मानना है कि शिक्षा को सिर्फ नौकरी पाने का माध्यम ही न समझा जायें बल्कि शिक्षा वो है जो हमारी कथनी और करनी के अंतर को समाप्त कर सके और हमें स्वावलंबी बना सके|

हम प्रति वर्ष लाखों चिकित्सक, इंजिनीयर्स,सी.ए. इत्यादि इत्यादि पैदा करते है, लेकिन क्या

फायदा जब चिकित्सक स्वयं को अपनी पीठ के पीछे ऑक्सीजन का सिलेंडर बांधकर, मुँह पर मास्क लगाकर कृत्रिम साँस लेते हुए मरीजों का इलाज़ करना पड़ेगा, उद्योगों के बंद होने के कारण इंजिनीयर्स के पास कोई रोजगार नहीं होगा तब सी.ए. कौनसी कंपनी का ऑडिट करेगा? अत: शुद्ध पर्यावरण नहीं तो कुछ भी नहीं |

अंत में केवल इतना कहना चाहता हूँ कि जिस प्रकार हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी के आग्रह पर सम्पूर्ण भारत एक साथ प्रधान मंत्री स्वच्छता अभियान में जुट गया और मात्र पाँच वर्षों में ही भारत की तस्वीर बदल डाली, ठीक उसी प्रकार हमारा Eco friendly-78 विषय भी देश के हर विद्यार्थी, हर परिवार तक पहुंचेगा और देश के प्रत्येक नागरिक को एक पर्यावरण मित्र बना देगा जिसकी कार्य-शैली से कभी भी अपने मित्र(पर्यावरण) का अहित नहीं होगा | इस तरह प्रदूषण मुक्त जल , थल और वायु का हमारा सपना साकार होगा|

आपका बहुत बहुत धन्यवाद |

भवदीय

राजेश कुमार उपाध्याय

स्नाकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर (म.प्र.)

देश का भविष्य नशे की गिरफ्त में

हम सब यह मानते है कि हमारे युवा हमारे देश का भविष्य है जो आने वाले समय में देश के कर्णधार बनेगें और देश को नई ऊँचाईयों पर ले जायेगें लेकिन पिछले दिनों एक समाचार पत्र में छपी खबर के अनुसार देश के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा हमारे देश में नशीले प्रदार्थों के सेवन से सम्बंधित आंकड़े जारी किये गये है, जो यह दर्शाते है कि देश में नशीले प्रदार्थों के सेवन में युवा पीढ़ी का प्रतिशत करीब 80% है , जो नशा करने वाले अन्य आयु वर्गों के लोगों से काफी अधिक है| आंकड़ों से स्पष्ट है कि देश का भविष्य नशे की गिरफ्त में फंस रहा है, हमारे युवाओं में नशे की बढ़ती लत देश में आने वाले गंभीर संकट का संकेत दे रही है |

युवाओ के दिलों-दिमाग में भविष्य में बड़ा बनने और कुछ बड़ा करने का नशा होना चाहिए ना कि वें नशे की लत में फंस कर अपने आने वाले भविष्य को ही चौपट कर दें| बड़े सयाने कह कर गये हैं कि नशा नाश ही करता है|

राजेश कुमार उपाध्याय (पी.जी.टी)
केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर

पढाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें :

१ - पढाई हमेशा कुर्सी-टेबल पर बैठ कर ही करें , बिस्तर पर लेट कर बिलकुल भी न पढ़े । लेटकर पढने से पढ़ा हुआ दिमाग में बिलकुल नही जाता , बल्कि नींद आने लगती है ।

२ - पढ़ते समय टेलीविजन न चलाये और रेडियो या गाने भी बंद रखे ।

३ - पढाई के समय मोबाइल स्विच ऑफ़ करदे या साईलेंट मोड में रखे ,

४ - पढ़े हुए पाठ्य को लिखते भी जाये इससे आपकी एकाग्रता भी बनी रहेगी और भविष्य के लिए नोट्स भी बन जायेंगे ।

५- कोई भी पाठ्य कम से तीन बार जरुर पढ़े ।

६ - रटने की प्रवृत्ति से बचे , जो भी पढ़े उस पर विचार मंथन जरुर करें ।

७ - शार्ट नोट्स जरुर बनाये तांकि वे परीक्षा के समय काम आये ।

८- पढ़े हुए पाठ्य पर विचार -विमर्श अपने मित्रों से जरुर करें , ग्रुप डिस्कशन पढाई में लाभदायक होता है।

९ - पुराने प्रश्न पत्रों के आधार पर महत्वपूर्ण टॉपिक को छांट ले और उन्हें अच्छे से तैयार करें ।

१० - संतुलित भोजन करें क्योंकि ज्यादा भोजन से नींद और आलस्य आता है , जबकि कम भोजन से पढ़ने में मन नही लगता है ,और थकावट, सिरदर्द आदि समस्याएं होती है ।

११- चित्रों , मानचित्रो , ग्राफ , रेखाचित्रो आदि की मदद से पढ़े । ये अधिक समय तक याद रहते है ।

१२- पढाई में कंप्यूटर या इन्टरनेट की मदद ले सकते है!

१३ - जो विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा में भाग ले रहे है वे कम से कम पिछले पांच वर्षों के सम्बंधित बोर्ड के प्रश्नपत्रों को हल करलें जिससे उन्हें प्रश्नपत्र के प्रारूप का तो पता चेलेगा ही, साथ ही परीक्षा में समय प्रबंधन का भी ज्ञान होगा |

१४- सी.बी.एस.ई .बोर्ड द्वारा इस वर्ष 2020-21 की लिए कक्षा दसवी और बारहवी के पाठ्यक्रम से कुछ अध्याय हटा दिये गये है अतः विद्यार्थी उन अध्यायों को रेखांकित कर लें जिनसे इस वर्ष बोर्ड परीक्षा में कोई भी प्रश्न नहीं पूछा जायेगा |

१५- सी.बी.एस.ई .बोर्ड द्वारा इस वर्ष कक्षा दसवी और बारहवी के पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों की ब्लू प्रिंट प्रकाशित करदी गई है, जिसमे विषय में सम्मिलित प्रत्येक अध्याय को आवंटित अंकों के साथ साथ सम्बंधित अध्याय से पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकारों और उनकी संख्या का वर्णन दिया गया है, अतः विद्यार्थी को ब्लू प्रिंट का अवलोकन भी अनिवार्यतः करना चाहिए |

राजेश कुमार उपाध्याय

स्नाकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर (म.प्र.)

संवेदनशील हृदय

मैं संवेदनशील हृदय से,
चित्र उकेरा करता हूँ ।
पर बदरंग न हो जाएँ बस
इसी बात से डरता हूँ ।।

मनोविकारों के सागर में,
कलम छटपटाया करती।
'कैसै चित्र बनें अविकारी',
यही सोच आहें भरती।।

चाहता हूँ कि झाड़-पोछकर,
धोकर शब्द रखूँ आगे ।
जिनसे रसमय काव्य-सृजन हो,
सुप्त करुण-सागर जागे।।

ऐसा सृजन-कर्म हो जो कि,
तन-मन-जन के ताप हरें।
काव्य-कला मानव-जीवन में,
जन-कल्याणी रंग भरें।।

मधु-संचय कर कलम काव्य को,
रस से आप्लावित कर दे।
निखर उठे संवेदन सारे,
हरस बरस मधु-घट भर दे।।

यदि भावों के रूप निखरकर,
चित्ताकर्षक हो जाएँ।
तो साकार हुए संवेदन,
मानवीय ध्वज लहराएँ।।

Sanjay Dixit TGT PHE

सीमा मीणा प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका हिंदी

हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चिन्तन

प्रकृति जीव को जन्म देती है, उसका पोषण करती है। एक जीवन, जीवन के दूसरे रूपों के सहयोग पर ही आधारित हैं ।'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' अर्थात् जीवन एक- दूसरे के सहयोग पर आधारित है। सकल प्राणी- जगत् पारस्परिक सहयोग पर आश्रित हैं। प्रकृति ने मानव को अनूठी प्रतिभा,क्षमता, सर्जनशीलता,तर्कशक्ति प्रदान कर चिंतनशील प्रज्ञाशक्ति और विवेकशील बनाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है ।सामान्यतः मनुष्य का चिंतन जैसा होता है वैसा ही वह कार्य करता है ।एक ही प्रकार के कार्य को भिन्न-भिन्न वृत्ति वाले लोग अलग-अलग ढंग से संपन्न करते हैं।

हिंदी कवियों ने पारिस्थितिक चिंता कई रूपों में प्रकट की है ।विकास के नाम पर सर्वत्र काटे जा रहे पेड़- पौधों की पीड़ा है तो कहीं कहीं खो जाने वाली संस्कृति की पीड़ा हैं । कहीं-कहीं मल्टीनेशनल कंपनियों से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण है और कहीं वंशवाद के कगार तक पहुंचे हुए जानवरों और पक्षियों के आर्तनाद है सहज संतुलित वातावरण सर्वत्र नष्ट हो गया है। भूमि के जीव-जंतुओं पर जब-जब आक्रमण या आतंक होता रहा है तब- तब तक उसका प्रतिरोध भी आदिकाल से लेकर होता आ रहा है ।मनुष्य और प्रकृति के बीच ही आत्मीयता है ।यह पारस्परिकता भारतीय आध्यात्मिक जीवन की मुख्य कड़ी हैं ।भारतीय साहित्य का मेरुदंड इन दोनों के बीच की पारस्परिकता यानी की आत्मीयता है। इसलिए भारतीय परंपरा को आत्मसात् करने वाले रचनाकार साहित्य के मूल में प्रकृति और मनुष्य के बीच के सहसंबंध को सुरक्षित रखते हैं ।

साहित्यकार सहज ही सूक्ष्म दृष्टा होते हैं वे इन प्रतिकूलताओं को जल्दी ही भाँप लेते हैं और अपनी सृजनात्मकता के जरिए उसका प्रतिरोध जाहिर करते हैं कविवर रहीम ने भी पानी के माध्यम से जीवन के तत्वों का ज्ञान कराया है:-

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।।"

वर्तमान संदर्भ में भी यह उक्ति चरितार्थ और उपयुक्त है क्योंकि मनुष्य स्वार्थ के कारण प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता जा रहा है आज आत्यान्तिक स्वार्थ ने मनुष्य के चारों ओर ऐसे निष्करुण और निर्लज्ज संसार की सृष्टि कर दी है जिसने प्रकृति के भौतिक अस्तित्व को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है।

प्रकृति आदिम युग से हमारे जीवन का आधार रही है और आज भी हर पल हमारे साथ रहती है,हमारे राग -विराग, सुख-दुख,विचार - दर्शन और पोषण - सर्जन में गुथी हुई है,उसे आधुनिक जीवन लगातार हमसे छीन रहा है। हम ऋतुएँ और ऋतूत्सव भूलते जा रहे हैं और इसी क्रम से सरलता,निश्छलता, मर्यादा,उल्लास- आनंद यानी अपना व्यक्तिगत सुख और सामूहिक जीवन के रंगारंग पर्व, उत्सव और सरोकार रचनाओं से तेजी से झिरते जा रहे हैं। उनकी जगह भर रहा है एक कृत्रिम -संसार जहां हम एक दूसरे का विश्वास,आत्मीयता और अंतरंगता खोते चले जा रहे हैं और बदले में पा रहे हैं- पारस्परिक आशंका संदेह और अविश्वास।

साहित्य में पानी का कितना अर्थ विस्तार एवं अर्थ गांभीर्य है। उदाहरण के लिए जब कबीर को जीवन की क्षणभंगुरता बतानी होती है तो वे कहते हैं 'पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात।' तथा तुलसी को खल के इठलाने पर व्यंग करना होता है तो कहते हैं -' "छुद्र नदी भरि चली उतराई, जस थोरेहु धन खल इतराई। 'पानी अक्सर स्वभाव की निर्मलता और पारदर्शिता के उपमान के रूप में इस्तेमाल होता हैं।

विकास को लक्ष्य करके निर्मित परियोजनाएँ पर्यावरण नाश की वजह बनने के साथ कई लोगों को बेघर और बेरोजगार बना देती हैं। बाँध बनाने में कृषि भूमि और वनों का बहुतायत विनाश होता है इसके अतिरिक्त भूमि कटाव, बाँढ़ भूकंप आदि की संभावनाएँ बढ़ती जाती हैं ।

त्रिलोचन ने कहा है:-

नदी ने कहा था: मुझे बाँधों

मनुष्य ने सुना और

आखिर उसे बाँध लिया

बाँधकर नदी को

मनुष्य दुह रहा है।

अब वह कामधेनु है।

समकालीन यथार्थ की ओर हिंदी के अनेक कवियों ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है इसी तरह से हिरोशिमा और नागासाकी में हुए बम विस्फोट की याद दिलाते हुए अज्ञेयजी स्वच्छ शहर प्रकृति की कामना को कुछ इस तरह से प्रकट करते हैं-

मुझे चाहिए हरी भरी दुनिया

घने पेड़ों के चलते अँधेरा हुआ रास्ता

बच्चों की दौड़ से हिलता हुआ घर

और अपनी माँ के थनों को हुमकता

गाज भरे मुँहवाला

उजला बछड़ा ।

आज भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से विस्थापन तेज रफ्तार से हो रहा है ।इस विस्थापन में सरकारी अफसरों के साथ मुख्यधारा के समाज द्वारा आदिवासी समाज के संसाधनों पर कब्जा करके उन्हें बेदखल किया जा रहा है ।भूमंडलीकृत इस दुनिया की गिरफ्त में पड़कर दम घुटानेवाले विस्थापित आदिवासियों को बचाने का मार्ग सोच रहे हरिराम मीणा ने लिखा है :-

"विरान, घोटुल, उजड़े हाट, उमंगहीन पर्व

थके माँदल और सिसकती बाँसुरी को थामे

पथरायी आँखों के सहारे

अपने हरे-भरे आँगन में जीवन-अवलंब ढूंढ़ता कोई

कैसे बचे वैश्विक वात्याचक्र से

दिक्कू और देसी दलालों के षडयंत्र से?"

भूमंडलीकरण के साथ संचार माध्यमों का तेजी से विकास हुआ दुनिया गाँव में सिमट गयी साथ ही मानव और मानव के बीच दूरी बढ़ गयी जिस तरह से नदियों की आद्रता विकास के जरिए नष्ट हो गई हैं वैसे ही मनुष्य मानव मूल्यों की आद्रता से वंचित हो गया है।

साहित्यिक क्षेत्र में पर्यावरण विषयों को बहुत समय से स्थान मिलता आ रहा है ।प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास 'रंगभूमि' में वर्षों पहले पारिस्थितिकी का खुला चित्रण किया था।' रंगभूमि' का सूरदास पूर्णत:मनुष्य और प्रकृति के चिर सहचर हैं ।उसका खान -पान भी प्रकृति का है - यहाँ तक कि यह 'षड रस' युक्त अवलेह तैयार हुआ। इस प्राकृतिक सहजता को औद्योगीकरण के द्वारा उससे उत्पन्न मशीनों के द्वारा तहस-नहस कर दिया गया । प्रकृति के साथ पूरा गाँव ही नष्ट हो गया।विकास के नाम पर वायु और पानी का प्रदूषण आज स्वाभाविक प्रक्रिया बन गया है ।संजीव के उपन्यास 'धार' और 'सावधान नीचे आग है' इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं ।नासिरा शर्मा का 'कुइयाँजान' उपन्यास भी नदी और पानी की समस्या पर केंद्रित हैं ।इसी प्रकार मृदुला गर्ग का उपन्यास 'कठगुलाब' परोक्ष रूप से भूमि की बंजरता का प्रतीक है। इस उपन्यास में नारी की बंजरता की वजह बहुत विस्तार से वर्णित है और इसमें प्रतिरोध का मार्ग भी हैं ।नारी का मार्ग जब खुलता है तब यह प्रकृति में आश्रय पाती है स्त्री पुरुष मिलकर शोषण मुक्त मानसिकता से यदि काम करें तो प्रत्येक बंजर भूमि भी उपजाऊ बन जाती है ।

पर्यावरण और संस्कृति के इस प्रदूषण की झलक काशीनाथ जी के चर्चित उपन्यास 'काशी का अस्सी' में देखने को मिलती है। पर्यावरण और मानव संबंध को लेकर निर्मल वर्मा की भी एक कहानी है 'दूसरी दुनिया' यह ग्रेता की दूसरी दुनिया है पेड़ों की दुनिया। पर्यावरण की चिंता उदय प्रकाश की कहानियों में भी है उनकी 'टटकी कहानी ', 'आवरण' में इस चिंता को देखा जा सकता है ।प्रदूषण धरती को हुए कैंसर की तरह है राजू शर्मा के उपन्यास 'हलफनामे' में भी पर्यावरण की समस्या की झाँकी मौजूद है । पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी को भी पेड़ पौधों की प्रकृति और प्रकृति की जानकारी के साथ से गहरा लगाव रहा है ।उनके कई निबंधों के शीर्षक किसी पेड़,फूल,फल के नाम पर हैं । 'अशोक के फूल' 'शिरीष के फूल 'कुटज' 'देवदारू', 'आम फिर बौरा गए!' 'वसंत आ गया' आदि । निर्मल वर्मा जी की कहानियों और उपन्यासों का वातावरण भी पूरी तरह प्रकृति से घिरा रहता है।

समकालीन जीवन प्रकृति से दूर- दूर चला जा रहा है लेकिन इसे बदलाव से आने वाली पीढ़ी को महान विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। आज की विकास योजना की अदूरदर्शिता एवं भूमंडलीकृत दुनिया की यंत्र संस्कृति का जो बोलाबाला हो रहा है ।इन सबके प्रतिरोध की सख्त जरूरत है। इसीलिए आज के कवि कल के इस यथार्थ को चित्रनुमा पेश करते हुए उसका प्रतिरोध भी कर रहे हैं।

श्री हेमिल्टन मसीह स्नातकोत्तर शिक्षक- हिन्दी

* निराला के साहित्य में विद्रोह स्वर *

" तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर से निकालो फिर,
गंगा -जल धारा "

प्रसाद और निराला जी छायावादी आधार स्तंभ होने के साथ -साथ प्रतिस्पर्धी साहित्यकार है । दोनों में लगभग वैसा ही नाता है जैसे इतिहास में परम्परा और विद्रोह के बीच होता है ।1936 के पत्र में निराला प्रसाद को उपनिषदों से नीचे उतारना चाहते हैं । यहाँ उपनिषदों से तात्पर्य काव्य और दर्शन की उस परंपरा से है, जिसके प्रति सीधा विद्रोह निराला में झलकता है. वे हिंदी काव्य की एक हजार वर्ष लम्बी परम्परा से हटकर मुक्तछंद लिखते हैं । ब्राह्मण की बनाई शुद्ध घी की कचौड़ी को छोड़, वे तेल की गरम पकौड़ी में रस लेते हैं और अभिजात कुल की रूपसी बजाय उनका ध्यान काली कहारिन पर केंद्रित होते हैं. यह विद्रोह प्रसाद से निराला का अलग स्वभाव है -व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों स्तरों पर । इसीलिए डॉ. प्रेमशंकर का निचोड़ है कि "निराला आरम्भ से ही क्रांतिकारी रहे हैं और उनकी विद्रोही भावना उनके काव्य में स्पष्ट,
झलकती है ।

निराला के काव्य -व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि "यह विलक्षण बात है कि उसमें क्लासिकी रोमांटिक तथा आधुनिक तत्व घुले -मिले हैं।" भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों की जीवंत उपस्थिति एक कवि में विलक्षण संयोग है । यह संयोग निराला के क्रांतिकारी स्वछंदतावाद के कारण संभव हुआ है । उनकी क्रांति की यह आकांक्षा और विद्रोह की भावना 1923 में प्रकाशित 'शिव
तांडव 'कविता में दिखाई दिया ।

आलोचकों ने एक स्वर से स्वीकारा है कि छंद के सन्दर्भ में निराला का विद्रोह अधिक स्पष्ट एवं मुखर है । एक और उनकी चिंता थी कि उनके गीत सामान्य जन और कलावंतों के होठों पर वैसे ही बस जाये वैसे ही बस जाय जैसे अब तक ब्रज भाषा में रचित ख्याल के बोल और पदों की स्थिति रही है ।

दूसरी ओर पारम्परिक छंद को तोड़कर उसे नये ढंग से बनाने में उनका विशेष ध्यान रहा है. तीसरी ओर छंद विधान के आंतरिक स्वरूप को नए -नए ढंग से व्यवस्थित करने की तीव्र उत्सुकता थी ।सबसे महत्व की बात है कि मुक्त छंद को उन्होंने जातीय मुक्ति के व्यापक सन्दर्भ से जोड़ा ।उन्होंने लिखा है कि "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है ।उनके अनुसार मुक्त छंद से स्वाधीन चेतना फैलती है।" ध्यान रहे कि यह' मुक्त छंद 'है न कि छंद मुक्त '।निराला की कविता का अपना एक आतंरिक छंद है और आतंरिक लय है ।छंदों की रीतिबध्दता को तोडना एक क्रांतिकारी कदम है इस प्रकार मुक्त छंद समूचे स्वछंदतावाद की आत्मा है ।

मुक्त छंद केवल काव्य के बाह्य स्वरूप का परिवर्तन ही नहीं अपितु एक क्रांतिकारी सामाजिक बदलाव का भी सूचक है ।निराला की कल्पना -शक्ति, प्रखर भावावेग, निर्बंध यौवन, प्राणवत्ता छंदो के बंधन में समाहित नहीं हो सकती थी।निराला के कवि व्यक्तित्व के विकास में मुक्तछंदो का अहम् भूमिका रही है।इसका कारण स्पष्ट है कि वे अपने काव्य जीवन का आरंभ 'जूही की कली 'से मानते है ।यह समूचे हिंदी काव्य जगत में मुक्त छंद की प्रथम रचना है ।

निराला की सबसे बड़ी विशेषता है कि न केवल उन्होंने परंपरा से विद्रोह किया वरन स्वयं अपनी उपलब्धियों से भी विद्रोह किया, जिनको कालांतर में परंपरा बनना था ।उनके काव्य -विकास के तीन चरण -तत्सम, तद्भव, देशज बहुत कुछ इसी मनोवृत्ति को प्रतिफलित करते हैं ।इस मनोवृत्ति के लिए उनका काव्य -वैविध्य भी जिम्मेदार माना जाता है.

निराला को अपने समकालीनों द्वारा मुक्त छंद को लेकर काफ़ी खरी खोटी सुननी पड़ी थी.'रबर छंद ' केंचुआ छंद आदि विशेषणों से इसको नवाजा गया. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने शालीन भाषा में इसे ' बेमेल चरणों चरणों की विलक्षण आजमाइश ' कहा. निराला ने मुक्त छंद अपनी सुविधा के लिए नहीं अन्वेषित किया था वरन अपने काव्य प्रवाह में गति लाने के लिए किया था. निराला सूरदास के बाद हिन्दी के प्रथम छंद प्रयोक्ता हैं. 'तुलसीदास'में निराला ने 6 पंक्तियों का छंद चुना है.

दरअसल, निराला का सम्पूर्ण काव्य -व्यक्तित्व 'विरोधों का सामंजस्य' की उस अवधारणा से विकसित हुआ जिसे शुक्लजी ने आनंद का साधनावस्था की उच्चतम रचनाभूमि का कारक तत्व स्वीकार किया है.

निराला ने मुक्त छंद का प्रवर्तन किया है तो 'तुलसीदास'me सबसे कठिन छंद और तुक विधान का प्रयोग किया है.'राम की शक्ति पूजा'में तत्सम शब्दों का आग्रह है तो 'कुकुरमुत्ता 'में ठेठ देसी भंगिमा है. श्रृंगार गीतों में प्रणय की उद्दाम स्थितियों का उन्मुक्त अंकन है. उन्होंने ऐसे दृश्यों की सृष्टि की जैसी प्रसाद ने 'आंसू'और 'लहर'के गीतों में भी नहीं की है.

निराला के काव्य में सामाजिक सरोकार एक विद्रोही कवि के रूप में देखने को मिलता है जिसका स्वर प्रतिवादात्मक है. छायावादी काव्य में निराला ही एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने साधारण मनुष्य को करीब से देखा और अपनी रचनाओं द्वारा तत्कालीन विदेशी सत्ता के खिलाफ विद्रोह करने को भी प्रोत्साहित किया गया. निराला का विद्रोही व्यक्तित्व सृजनात्मक था. अपने समय की सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक, आर्थिक और साहित्यिक सभी क्षेत्रों की गलित मान्यतायों, रूढ़ीगत संस्कारों एवं मूल धाराणायों के प्रति उन्होंने विद्रोह किया. नियम तोडना निराला ने आज की पीढ़ी को सिखाया. नियम भंग तो निराला के जीवन व व्यक्तित्व के साथ एक रूप हो गया था. उनके नियम भंग के साथ विद्रोह जुडा हुआ था. इसी विद्रोह को उनके काव्य में स्थान मिलता गया. अनेक आलोचकों और विद्वानों ने निराला के काव्य की विभिन्न रूपों में समीक्षा की है समाज की यथास्थिति के प्रति उनका स्वर सदैव विद्रोही रहा है.वे मूलत्ता क्रांतिकारी कवि रहे हैं केवल कथनी में ही नहीं,करनी में भी. सरोज स्मृति कविता इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उन्होंने आजीवन रूढ़ियों परंपराओं कुंठित मर्यादाओं का विरोध किया. काव्य के क्षेत्र में भी और अपने व्यक्तिगत जीवन में भी उन्होंने लिखा है:

" दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूं जो आज तक नहीं कहीं".

संपूर्ण आधुनिक कविता पर निराला की विद्रोही चेतना का प्रभाव बार-बार परिलक्षित होता है. उनका विद्रोही व्यक्तित्व दुराग्रह से मुक्त है उन्होंने निरर्थक किंतु प्राचीन मान्यताओं का डटकर विरोध किया है तथा उन परंपराओं एवं व्यवस्थाओं को उचित महत्व दिया है,जो हमारी नवीन मान्यताओं एवं विचारों के लिए ट्रेड आधार का काम कर सकता है निराला ने न केवल द्विवेदी युगीन कविता पर प्रहार किया वरन छायावादी कविता पर भी जहां जड़ता परिलक्षित कोई करारा आघात किया. जब भी कोई काव्य प्रगति रोड़ी ग्रस्त होकर निर्जीव होने लगी निराला ने उस में प्राण का संचार किया. निराला का विद्रोह प्रगति मुल्क है.उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में उन तत्वों का डटकर विरोध किया जो हमारी प्रगति के लिए अभिशाप है. निराला जी हर नई चीज के समर्थक थे और ना ही पुरानी चीज के विरोधी हमारे भावी साहित्य में प्रगति और परंपरा को ऐसे ही कड़ी जोड़नी चाहिए.वस्तुतः निराला का प्रगतिवाद उस तरह का शास्त्रीय प्रगतिवाद नहीं है जैसा कि साम्यवादी राजनीतिक विचारधारा के नियमों और आदर्शों के अंतर्गत किया जाता है.उसमें प्रगतिवाद होकर प्रगतिशीलता है, समाजवाद है,मानवतावाद है.

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

श्री हेमिल्टन मसीह
स्नातकोत्तर शिक्षक- हिन्दी

पिता (कविता)

पिता होते हैं सारथी
उनके कुशल हाथों में
वल्गा थमाकर
निश्चिंत होता है परिवार
उनके कहे शब्द सुलझाते हैं
जीवन की अनसुलझी गुत्थियां ।
घर की सीमा पर
पिता होते हैं प्रहरी
हिमालय की तरह,
झेलते हैं अपने सीने पर
सारे झंझावात
बाहर के तूफान
और भीतर की जरूरतें ।
पिता रहते हैं आँगन में
किसी कल्पवृक्ष की तरह
जिस पर नित्य
लगते हैं फल
गुड्डे गुड़ियों,

चॉकलेट और आइसक्रीम के

आँगन में खड़ा यह कल्पवृक्ष
खुशी से तब तब झूमता है
जब आ जाते हैं
बच्चों के अच्छे अंक
और ले आते हैं वो
खेलकूद में कोई ट्रॉफी
जब बेटे की पहली
तनख्वाह घर आती है
और बिटिया ब्याह के बाद
आंखों में खुशी लेकर
मायके में माँ से मिलती है
तब पिता की आंखों में
खुशियों के फूल खिले होते हैं।

----आलोक पंजाबी

हिन्दी

बादलों का देश

प्रस्तुत कविता में सूखी एवं जल हीन भूमि पर रहने वाले लोगों की परिस्थिति एवं आशाओं का वर्णन करने का प्रयत्न:

मन भी सोचने ठहर जाता है,
जब भी ख्याल आता है|
रूह कांप जाती है,डर सा लगता,
मन को विचलित कर जाता है|
'कहां गया वह?'
'क्या कभी था ही नहीं?'
बादलों का देश...!!

जहां कभी हो ना कमी,
भरे जल-सागर की|
मन माती हो वो खुशी,
देख हरियाली जहां की|
'क्यों हो रहा नष्ट यह...?
वातावरण-जल प्रदूषित?'
जाना पड़ता है क्यों?,
'लेने जल मिलो कहीं??'
'क्यों हो रहे ?,
बादल भी घमंडी??'
कहां गया वह बारिश का मजा,
बारिश में नाव का बहाना!
क्या कहीं हवा हो गया या बादलों
में समा गया|
कहीं तो होगा वह बादलों का देश!

- रविराज जैन
नवीं ब

कोरोना महामारी

महायुद्ध सी महामारी ये,
जिसका नाम कोरोना
पी.एम. सी.एम सब समझाऐ
लाकडाउन ही हल है इसका
बिना वजह निकलो ना
सब घर के अंदर जा बैठे
बाहर बढा कोरोना
महायुद्ध सी महामारी ये,
जिसका नाम कोरोना

- महीमा पाटीदार 7 ब

फौजियों का जीवन

फ़ौजी लोग हमारे देश पर बाहर से हमला करने वाले दुश्मनों से मुक़ाबला करते हैं । वे लोग जो हमारी रक्षा करते हैं । वो सुबह ४ बजे उठकर उनकी दिनचर्या शुरू करते हैं । वे लोग अपने परिवार वालो से भी बहुत कम बातें करते हैं । वे लोग पूरे दिन में सिर्फ़ १ या २ बार ही बात कर सकते हैं । उन लोगों को शाम को सारी जानकारी अगले दिन की दे दी जाती हैं । इन लोगों को सिर्फ़ १ साल में सिर्फ़ १ या २ महीने ही छुट्टी दी जाती हैं । वे अपने परिवार वालों को बहुत ही याद करते है ।

एन्जेल भाटिया कक्षा 8 ब

झंडा ऊंचा रहे हमारा

झंडा ऊंचा रहे हमारा
देखो बच्चों यह झंडा प्यारा.
तीनों रंगों का मेल सारा!
रहे सदा यह झंडा ऊँचा.
आकाश को हो रहा है छूता!
सदा करो तुम इसका मान.
कभी ना करना इसका अपमान,
झंडा ही है देश की शान.
बना रहे हैं यह सदा महान !

दिव्यांशु पंवार

8 ब

-तीन लालची आदमी-

एक बार की बात है, तीन घनिष्ठ दोस्त एक बार सफर पर निकले थे, थोड़ी देर चलने के बाद उन्हे तीन चमकदार सोने की ईटें रास्ते पर पड़ी मिली तीनो का मन ललचाया तीनों ने एक-एक ईट ले ली फिर वे सभी आगे चल दिए। कुछ समय बाद तीनो को बहुत भूख लगी , बहुत तलाशने के बाद उन्हे एक गांव दिखा तो उनमे से दो ने खाना लाने की सोची और वे चले गए फिर तीनो के मन मे लालच आ गया था। जो दो लोग खाना लेने गए थे,उन दोनों ने खाने में जहर मिला दिया । जो एक था वह भी दोनों को मारने के लिए चाकू लिए बैठा था सब ने अपनी तरकीब बना ली थी। जब वे खाना लेकर आए जो गाँव गए थे । उनको जो गांव नही गया था, उसने बाकी दो को मार दिया था फिर उसने तीनों ईटें ले ली।

वह भूख से बिलख रहा था फिर उसने खाना खाया। उसे नहीं पता था कि खाने में जहर है वह खाना खा कर मर गया।

इसी तरह वे तीनों ही मर गए और इसी तरह उन ईटों को आज तक कोई नही ले जा पाया।

शिक्षा-लालच बुरी बला है।

मोहम्मद जीशान

कक्षा 9 अ

जंगल के स्कूल का रिजल्ट

हुआ यूँ कि जंगल के राजा शेर ने ऐलान कर दिया कि अब जंगल में कोई अनपढ़ नहीं रहेगा। हर पशु को अपना बच्चा स्कूल भेजना होगा। स्कूल सबको, पढ़-लिखाकर प्रमाणपत्र बाँटेगा। सब बच्चे स्कूल जाने लगे। हाथी का बच्चा भी आया, शेर का भी, बंदर का भी आया और मछली की बच्ची भी, खरगोश का बच्चा भी आया तो कछुए की बिटियाँ भी, ऊँट का बच्चा भी और जिराफ का भी....! टेस्ट होने पर हाथी का बच्चा फेल हो गया। "किस विषय में फेल हो गया जी?" हाथी के पिताजी ने टीचर से पूछा ! "पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गया, तुम्हारा बच्चा !" हाथी के पिताजी बोले कि "अब क्या करें?" "ट्यूशन दिलवाओ, कोचिंग में भेजो।" अब हाथी के जिन्दगी का एक ही मक़सद था कि हमारे बच्चे को पेड़ पर चढ़ने में पहला स्थान हासिल कराना है ! किसी तरह साल बीता। फाइनल रिज़ल्ट आया तो हाथी, ऊँट, जिराफ सबके बच्चें फेल हो गए। बंदर की बच्ची प्रथम आयी ! प्रिंसिपल ने उसे मंच पर बुलाकर मेडल दिया। बंदर ने उछल-उछल के कला- बाजियाँ दिखाकर, गुलाटियाँ मार कर खुशी का इजहार किया। उधर अपमानित महसूस कर रहे हाथी, ऊँट और जिराफ ने अपने-अपने बच्ची को बहुत डाटा ओर कहा की "बच्चों , इतने महँगे स्कूल में पढ़ाते हैं तुमको... ट्यूशन-कोचिंग सब लगवाए हैं, फिर भी आज तक तुम पेड़ पर चढ़ना नहीं सीखे? सीखो , बंदर के बच्चें से सीखो कुछ, पढ़ाई पर ध्यान दो !" फेल तो हालांकि मछली की बेटी भी हुई थी.... बेशक़ स्विमिंग में प्रथम आयी थी पर बाकी विषय में तो फेल ही थी। टीचर बोली, "आपकी बेटी कभी- कभी ही स्कूल आती है तो आप कृपया थोड़ा ध्यान दो !" मछली ने बेटी को आँखें दिखाई.... बेटी ने समझाने की कोशिश की कि, "माँ, मेरा दम घुटता है इस स्कूल में... मुझे साँस ही नहीं आती। मुझे नहीं पढ़ना इस स्कूल में ! हमारा स्कूल तो तालाब में होना चाहिये ना?" "नहीं, ये शेर का स्कूल है, तालाब वाले स्कूल में भेजकर मुझे अपनी नाक नहीं कटानी... समाज में कुछ इज्जत, है मेरी ! तुम्हें इसी स्कूल में पढ़ना है... बातों की जगह पढ़ाई पर ध्यान दो ! हाथी, ऊँट और जिराफ अपने-अपने बच्चों को पीटते हुए ले जा रहे थे। रास्ते में बूढ़े बरगद ने पूछा, "क्यों पीट रहे हो, बच्चों को?" जिराफ बोला, "पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गए,!" बूढ़ा बरगद ने कहा की... "पर इन्हें पेड़ पर चढ़ाना ही क्यों है ?" बरगद ने कहा, "हाथी तुम अपनी सूंड उठाओ और सबसे ऊँचा फल तोड़ लो... जिराफ तुम अपनी लंबी गर्दन उठाओ और सबसे ऊँचे पत्ते तोड़-तोड़ कर खाओ.... ऊँट भी गर्दन लंबी करके फल पत्ते खा लेगा.. हाथी के बच्चे को क्यों चढ़ाना चाहते हो पेड़ पर? मछली को तालाब में ही सीखने दो ना?" "दुर्भाग्य से आज स्कूली शिक्षा का पूरा काम सिर्फ बंदर के बच्चे के लिये ही बनाया गया है ... इस स्कूल में 35 बच्चों की क्लास में सिर्फ बंदर ही प्रथम स्थान पर आएगा... बाकी सबको फेल होना ही है ! हर बच्चे के लिए अलग काम अलग विषय और अलग स्कूल होना चाहिये ! हाथी के बच्चे को पेड़ पर चढ़ाकर अपमानित मत करो... जबर्दस्ती उसके ऊपर फेलियर का ठप्पा मत लगाओ ! ठीक है, बंदर का उत्साहवर्धन करो पर शेष 34 बच्चों को नालायक, कामचोर,लापरवाह, घोषित मत करो।

शिक्षा - अपने बच्चों की क्षमताओं व प्रतिभा की कद्र करें ! चाहे वह पढ़ाई, खेल, नाच, गाने, कला, अभिनय, खेती, बागवानी, मेकेनिकल, किसी भी क्षेत्र में हों, उन्हें उसी दिशा में अच्छा करने दें ! जरूरी नहीं कि सभी बच्चे पढ़ने में ही अव्वल हों ! उनमें केवल अच्छे संस्कार व नैतिक मूल्यों की जरूरत है, जिससे बच्चे गलत रास्ते नहीं चुनें !*

नाम - खुशबु चौहान
कक्षा - 9th "A"

बाल मजदूरी क्यो ?

आज सुबह मैं जब विद्यालय जाने के लिए घर से निकली तो मैंने देखा कि कुछ बच्चे जो लगभग मेरी ही उम्र के थे वे पास ही की एक खदान में मजदूरी करने जा रहे थे। वे मुझे देख कर थोड़ा रूके ओर फिर वे निराश होकर अपनी राह पर चल दिए। मुझे लगा की वे मुझसे कुछ कहना चाहते हैं या मेरे विद्यालय के कपड़े व मेरी पुस्तकें देखकर सोचने लगे कि काश हम भी विद्यालय पढ़ने जाते। मुझे ना तो उनके चेहरे पर इस काम को लेकर उत्साह दिख रहा था क्योंकि इस वजह से उनसे उनकी पढ़ाई ,उनका बचपन छिन चुका था और ना ही उनके चेहरे पर उदासीनता थी क्योंकि उन्होंने इस काम को ही अपना जीवन मान लिया था उन्होंने परिस्थितियों के आगे घुटने टेक लिए थे। उन्हें देखकर विचार आया कि उनका जीवन कितना दु:ख दायी है। अभी उनके पढ़ने लिखने की उम्र है और उनके ऊपर मजदूरी के बोझ को लाद दिया गया है। जिन हाथों में कागज कलम और खिलौने होने चाहिए उन हाथों में मजदूरी की जंजीरों को बांध दिया गया है। उनसे उनके बचपन की खुशियां व आजादी छीन ली गई है। इन बच्चों के अशिक्षित रहने से इनका भविष्य अंधकारमय हो जाएगा और यही बच्चे आगे चलकर देश का भविष्य है और जब इन्हीं का भविष्य सुरक्षित नहीं है तो देश का भविष्य कैसा होगा देश प्रगति पथ पर बढ़ पाएगा या नहीं। यह हमारे देश के नागरिकों व सरकार के लिए गहरी चिंता का विषय है। एक प्रगतिशील देश के लिए उसके सभी नागरिकों का शिक्षित होना आवश्यक है। यह सरकार का कर्तव्य है कि वह अपने देश के सभी बच्चों को शिक्षा का पूर्ण रूप से अधिकार प्रदान करें।

"शिक्षा सभी बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार है।"

धनुराज कुंवर

9वीं 'ब'

मेरी माता

मेरी माता मेरी माता |
माता को मैं शीश झुकाती ||
सुबह - सवेरे वह मुझे जगाती |
मधुर-मधुर संगीत सुनाती ||
रोज कराती है तैयारी |
मेरी मम्मी कितनी प्यारी ||
दूध नाश्ता मुझे खिलाती |
नहलाकर कपड़े मुझे पहनाती ||
हरदम काम किया करती है |
वह आराम नहीं करती है ||
उनके बिन लगता है घर खाली |
जैसे हो बगिया बिन माली ||

अचला देवड़ा 7 - अ

माता - पिता

मां की ममता सबसे प्यारी,
सारे जग में सबसे न्यारी,
सबके दिल को भाने वाली,
प्यार का मोल सिखाने वाली।

पिता का प्यार भी है अनोखा,
सारे जीवन को उमंगों से भरता,
हाथ पकड़कर चलना सिखाए,
जीवन की नई राह दिखाएं।

माता पिता की सेवा करना,
प्यार नमता में ही चलना,
सदाचार अपनाते रहना,
जीवन खुशियों से तुम भरना।

लेखक – देव सेठिया
कक्षा – सातवीं 'ब'

जैसे को तैसा

एक जमींदार के लिए उसके कुछ किसान एक भुना हुआ मुर्गा और एक बोतल फल का रस ले आए। जमींदार ने अपने नौकर को बुलाकर चीजें अपने घर ले जाने को कहा। नौकर बहुत चालाक था। यह जानते हुए जमींदार ने उससे कहा, देखो, उस कपड़े में जिंदा चिड़िया है और बोतल में जहर है। खबरदार, जो रास्ते में उस कपड़े को हटाया, क्योंकि अगर उसने ऐसा किया तो चिड़िया उड़ जाएगी। और बोतल सूंघ भी ली तो तुम मर जाओगे। समझे?

नौकर भी अपने मालिक को खूब पहचानता था। उसने एक आरामदायक कोना ढूंढा और बैठकर भुना मुर्गा खा गया। उसने बोतल में जो रस था वह भी सारा पी डाला। एक बूंद भी नहीं छोड़ा।

उधर जमींदार भोजन के समय घर पहुँचा और पत्नी से भोजन परोसने को कहा। उसकी पत्नी ने कहा, "जरा थोड़ी देर ठहरो। खाना अभी तैयार नहीं है। जमींदार ने कहा, मैंने जो मुर्गा और रस की बोतल नौकर के हाथ में दी है वही दे दो। वही काफी है।

उसके गुस्से की सीमा न रही जब उसकी पत्नी ने बताया कि नौकर तो सुबह का गया अभी तक लौटा ही नहीं।

बिना कुछ बोले गुस्से से भरा जमींदार अपने काम की जगह वापस गया तो देखा नौकर तान कर सो रहा है। उसने उसे लात मारकर जगाया और किसान द्वारा लाई गई भेंट के बारे में पूछा।

लड़के ने कहा, मालिक, मैं घर जा रहा था तो इतने जोर की हवा चली कि मुर्गे के ऊपर ढका कपड़ा उड़ गया और जैसा आपने कहा था, वह भी उड़ गया। मुझको बहुत डर लगा कि आप सज़ा देंगें और मैंने बचने के लिए बोतल में जो जहर था वह पी लिया। और अब यहाँ लेटा-लेटा मौत के आने का इंतजार कर रहा था।

क्रिन्जल चौधरी

कक्षा 9 अ

सच्चा मित्र

एक दिन सुबह-सुबह दो मित्र समुद्र में नौका-विहार करने निकले। वे शांत समुद्र में नाव खेते और गपशप करते हुए जा रहे थे। देखते-ही-देखते वे किनारे से बहुत दूर गहरे समुद्र में जा पहुँचे।

तभी एकाएक आसमान में काले-काले बादल घिर आए। तूफानी हवाएँ चलने लगीं। समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं। उनकी नाव लहरों के साथ हिचकोले खाने लगी। अब मृत्यु उनकी आँखों के सामने नाचने लगी। इतने में सौभाग्य से उन्हें पास ही तैरता हुआ लकड़ी का एक पल्ला दिखाई पड़ा। डूबतों को जैसे तिनके का सहारा मिल गया। दोनों मित्रों ने झटपट नाव से छलाँग लगाई और तैरते-तैरते उस पल्ले को पकड़ लिया। पर पल्ला बहुत ही हल्का था। वह दोनों का भार वहन नहीं कर सकता था।

तब एक मित्र ने दूसरे मित्र से कहा,देखो भाई, तुम शादीशुदा हो। तुम्हारी पत्नी है, बच्चे हैं। उनके लिए तुम्हारा जिंदा रहना ज्यादा जरूरी है। मैं ठहरा अकेला। इसलिए मैं मर भी गया, तो कोई हर्ज नहीं!

शादीशुदा मित्र ने जवाब दिया, "नही भाई, तुम्हारी माँ है, बहन है! अगर तुम मर गए, तो उनकी देखरेख कौन करेगा?

उनकी देखरेख का जिम्मा अब मैं तुम पर डालकर जा रहा हूँ।कहते हुए पहले मित्र ने पल्ला छोड़ दिया। वह समुद्र में डूबकर मर गया।

शादीशुदा युवक पल्ले के सहारे तैरते-तैरते किसी तरह किनारे आ लगा। उसकी जान बच गई। वह सकुशल घर पहुँच गया। उसने अपने दिवंगत दोस्त की माँ और बहन की जिंदगी भर परवरिश की।

शिक्षा -सच्चे मित्र एक दूसरे के सुख - दु:ख मे सहभागी होते है।

क्रिन्जल चौधरी

9 अ

वर्षा ऋतु

आई रे आई वर्षा ऋतु आई,
सुखी धरती को देखो ,
अब मुस्कुराए
और अपने पौधों में नया जीवन भर आई
आई रे आई वर्षा ऋतु आई
आज किसानों को देखो ,कितने खुश मालूम पड़े
हल को लेकर, बैल को लेकर , खेत में साथ खड़े ।
ताल - तलैया नद को देखो कैसे तृप्त हो उठे।
मेंढक भी है खूब टरराई, और जन- जन में उमंग भर लाई
सूखी धरती को देखो अब कैसे मुस्कुराई
आई रे आई वर्षा ऋतु आई ||

नाम- खुशबू पुरुषवानी
क्लास-8,अ

परिवार

मेरा प्यारा परिवार है
मेरा सुंदर परिवार है
मेरा बड़ा परिवार है
मेरा सुंदर परिवार है।
मेरे लिए वह सब कुछ है
मेरा प्यारा परिवार
मेरा सुंदर परिवार है ।
मेरे मम्मी पापा अच्छे है
बच्चों को वे बहुत प्यार देते हैं
उनके लिए वह सब कुछ करते हैं।
उसमें बहुत सारा प्यार है
मेरा प्यारा परिवार है
मेरा सुंदर परिवार है।

वन्दना धनगर
कक्षा 6

Covid-19 वैश्विक महामारी

कोरोना एक ऐसा वायरस है, जो संक्रमण के माध्यम से पूरी दुनिया में बहुत तेजी से फैलने वाली बीमारी बन गया है। विश्व स्वास्थ्य संघटन जिसे हम लोग WHO कहते है। उस संघटन ने कोरोना बीमारी को वैश्विक महामारी के रूप में पुष्टि कर दी है। जिसे हम COVID-19 भी कहते है। क्योंकि यह बीमारी दुनिया के आधे से ज्यादा देशों मे फैल गई है।

ऐसा कहा जाता है की, कोरोना वायरस की उत्पत्ति चीन के एक शहर वुहान में हुई थी। दुनिया के सबसे पहले कोरोना वायरस के मरीज इसी शहर में पाए गए थे। फिलहाल तो कोरोना वायरस से पूरी तरह ठीक होने की कोई दवा इस दुनिया में उपलब्ध नहीं है। लेकिन इस दुनिया में हर देश के वैज्ञानिक कोरोना वायरस को ठीक करने के लिए कई सारे प्रयोग कर रहे है।
जिसे बहुत ज्यादा वक्त लग सकता है।

लेकिन उन्होंने इस बीमारी से जुड़े कुछ लक्षण हमे बताए है, जिससे हम लोग इस वायरस से बच सकते है। इसमे अगर किसी को सर्दी, ज्यादा खांसी, सांस लेने में तकलीफ होती है, तो ये सामान्य लक्षण होते है।
कोरोना वायरस से ठीक होने की फिलहाल तो कोई दवाई नहीं है। लेकिन इस वायरस से बचने के कुछ उपाय है। जिससे हम लोग इस वायरस से बच सकते है। जैसे की अपने हाथ सैनिटाइज़र या फिर साबुन से 1 मिनट तक धोए ।

कोविड खतरा बड़ा है ,बचना मात्र विकल्प।
रहें संक्रमण रहित हम ,रख कर दृढ़ संकल्प।

कोविड से लड़ना अभी ,हम सब का है धर्म।
घर पर रह कर ही करें ,अपने सारे कर्म।

प्रस्तुतकर्ता- एलिस शर्मा

कक्षा 8 ब

जन्म से अंत तक ढाई अक्षर की यात्रा

मुझे ठीक से याद नहीं है कि मैने कहाँ पढा था
"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय, ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय"
अब पता लगा ये ढाई अक्षर क्या है-
ढाई अक्षर के ब्रह्मा और ढाई अक्षर की सृष्टि
ढाई अक्षर के विष्णु और ढाई अक्षर की लक्ष्मी
ढाई अक्षर के कृष्ण और ढाई अक्षर की कान्ता (राधा रानी का दूसरा नाम)
ढाई अक्षर की दुर्गा और ढाई अक्षर की शक्ति
ढाई अक्षर की श्रद्धा और ढाई अक्षर की भक्ति
ढाई अक्षर का त्याग और ढाई अक्षर का ध्यान
ढाई अक्षर की तुष्टि और ढाई अक्षर की इच्छा
ढाई अक्षर का धर्म और ढाई अक्षर का कर्म
ढाई अक्षर का भाग्य और ढाई अक्षर की व्यथा
ढाई अक्षर का ग्रन्थ और ढाई अक्षर का सन्त
ढाई अक्षर का शब्द और ढाई अक्षर का अर्थ
ढाई अक्षर का सत्य और ढाई अक्षर की मिथ्या
ढाई अक्षर की श्रुति और ढाई अक्षर की ध्वनि
ढाई अक्षर की अग्नि और ढाई अक्षर का कुण्ड
ढाई अक्षर का मन्त्र और ढाई अक्षर का यन्त्र
ढाई अक्षर की श्वांस और ढाई अक्षर के प्राण
ढाई अक्षर का जन्म ढाई अक्षर की मृत्यु
ढाई अक्षर की अस्थि और ढाई अक्षर की अर्थी
ढाई अक्षर का प्यार और ढाई अक्षर का युद्ध
ढाई अक्षर का मित्र और ढाई अक्षर का शत्रु
ढाई अक्षर का प्रेम और ढाई अक्षर की घृणा
जन्म से लेकर मृत्यु तक हम बंधे हैं ढाई अक्षर में।
हैं ढाई अक्षर ही वक़्त में और ढाई अक्षर ही अन्त में।
समझ न पाया कोई भी है रहस्य क्या ढाई अक्षर में।

अग्रिमा मिश्रा
६ अ
केंद्रीय विद्यालय, मंदसौर

मम्मी-पापा का प्यार

मम्मी मेरी प्यारी है,
पापा मेरे अच्छे है,
मम्मी लाड़ - दुलार दिखाती
पापा गुस्सेदार!

पर उनके गुस्से में छुपा है ढेर सारा प्यार
मम्मी अच्छी चीज़े बनाती
पापा अच्छी चीज़े लाते,
मम्मी पापा दोनों प्यारे !!

उन दोनों के हम दो राज दुलारे
मम्मी मेरी प्यारी है
पापा मेरे अच्छे है!

आची पाटीदार
कक्षा 7 ब

"प्रवासी पक्षी"

उड़कर चला तो जाता हैं,
दाने पानी की तलाश में ,
पर ढूंढता रहता है।
कोई अपना,
पूरे आकाश में ।
सुबह शाम
सुख में दुःख में
देखता है,
अपने पुराने घोसलों को
अपनो से दूर,
रोज बनते बिगड़ते
होंसले को।
तिनका -तिनका सहेजता है,
छोटे से नीड़ में ।
उंगलियों पर गिन लेता है,
अपनो को,
परिचितों की भीड़ में ।
तपती धूप
सर्द हवाएं
सब सह लेता है।
कभी सबको,
कभी स्वयं को ही,
सब कह लेता है ।
सीखता है, चहकता है,
नई - नई भाषा में ।
चुन - चुनकर सहेजता है, पुराने शब्द,
अपनों से मिलन की आशा में ।

भूमिका भट्ट
कक्षा, 8.B

मां

मां और मां का प्यार निराला है।
जो कोई ना समझ सकें वह
समझ लेती हैं,
मेरे सारे दुखों को हर लेती हैं,
मेरी लाख गलतियों पर मुझे माफ
कर देती हैं,
अपनी इच्छा छोड़ अपने बच्चों
की खुशियों की दुआ करती है,
मां तो जन्नत का फूल है और
उनका प्यार करना असूल है,
मैं कब घुटनों से रेंगते रेंगते पैरों
पर खड़ी हुई,
तेरी ममता की छांव में जाने कब
मैं बड़ी हूं।

सुमन खारोल
कक्षा 8"ब"

लन्दन आई

लंदन आई, या मिलेनियम व्हील, लंदन में साउथ बैंक ऑफ थेम्स नदी पर एक कैंटिलीवर अवलोकन पहिया हैं | यह यूरोप का सबसे लम्बा कैंटिलीवर ऑब्जरवेशन व्हील हैं, और यह यूनाइटेड किंगडम में सालाना 3 मिलियन से अधिक आगंतुको के साथ सबसे लोकप्रिय टूरिस्ट आकर्षण है, और इसने लोकप्रिय संस्कृति में कई प्रस्तुती दी हैं | यह 9 मार्च 2000 में खुला था, इसकी मूल्य 70 मिलियन पाउंड यानि 5,19,13,85,500.00 रुपये हैं, यह 30 मिनट में एक चक्कर पूरा करता हे, यह लगभग 0.6 मील घंटे की गति से यात्रा करता हैं, इसके मालिक मर्लिन एंटरटेनमेंट्स हैं, इनको 2001 मे इन्स्टिट्यूशॅन ऑफ स्ट्रक्चरल इंजीनियर्स स्पेशल अवार्ड भी मिला था | जब यह 2000 में जनता के लिए खोला गया तो यह दुनिया का सबसे लम्बा फेरिस व्हील था | इसकी उचाई 160 मीटर (525 फीट) से अधिक थी | लंदन आई लंदन में सबसे अधिक सार्वजनिक द्रश्य बिंदु पेश करती थी | मार्च 2020 में लंदन आई ने अपना 20वां जन्मदिन मनाया गया |

नाम = मयंक निंगवाल

कक्षा = 8 'ब'

रोल नं = 8219

क्लास मॉनिटर

जो क्लास में बने मॉनिटर
कोरी 'शान' दिखाते हैं
आता जाता कुछ नहीं
पर हम पर रोब जमाते हैं
जब क्लास में टीचर नहीं
तो खुद टीचर बन जाते हैं
कॉपी पेंसिल लेकर
बस नाम लिखाने लग जाते हैं
खुद तो बातें करें
हमें चुप करवाते हैं
अपनी तो बस गलती माफ
हमें बलि चढ़ाते हैं
क्लास तो संभाल पाते नहीं
बस सीखते और चिल्लाते हैं
भगवान बचाए इन मॉनिटर से
इन्हें हम नहीं चाहते हैं

रुचि धाकड़ आठवीं अ

पेड़, एक सैनिक

सैनिक की परिभाषा में सैनिक का अर्थ हम रक्षक या रक्षा करने वाला ले सकते हैं। पेड़ का भी कार्य समान है, हमारी रक्षा करना, हमें जीवित रखना। पेड़ ही है जिसके कारण हम पृथ्वी पर जीवित है। पेड़ ना होते तो हम ना होते। पेड़ का महत्व हम सभी जानते हैं, फिर भी हम पर्यावरण के इस अमूल्य अंग को नष्ट कर रहे हैं, जीवन की इस जरूरत को हमें नष्ट नहीं करना चाहिए। हमें इस जरूरत को बचाना है। भविष्य में इसकी कमी के कारण सभी का जीवन नष्ट हो जाएगा। मनुष्य ने अपने लालच के कारण बहुत से पेड़ों को नष्ट कर दिया है। इसके बाद हमें क्या करना चाहिए?

हमें नए पौधों को लगाना चाहिए ताकि वे पेड़ बन कर एक सैनिक की तरह हमारी रक्षा करें।हमें ऑक्सीजन प्रदान करें जीवन जीने के लिए।पेड़ की कमी से जीवन का वरदान नहीं रहेगा। सभी जगह अनदेखी तबाही हो जाएगी। पेड़ हमारे जीवन का कारण है, इसे हमें बचाना होगा।

यह चिंता की बात है कि पेड़ आज बड़े स्तर पर नष्ट हो चुके हैं, परंतु भविष्य में हमें इस कमी को भरना होगा, पेड़ एक सैनिक है सिद्ध करना होगा।

जानवी जगरवाल

VIII A

प्रार्थना

हाथ जोड़कर करे वंदना,
चरणों में तेरे यही प्रार्थना |
निश्छल प्रेम सभी का पायें,
जीवन में कभी न पछतायें|
पढना-लिखना मेरा काम,
देश का करुंगा ऊंचा नाम|
प्रभु ऐसे करवाना कर्म,
सबसे पहले सेवा धर्म |
मैं बालक हूँ नादान,
सदा रखना मेरा ध्यान |
हाथ जोड़कर करें वन्दना,
चरणों में तेरे प्रार्थना |

साक्षी धनगर
कक्षा- ग्यारहवीं वाणिज्य

कबीर के कार्य में गुरु महिमा

१.गुरु सो ज्ञान जु लीजिये, सीस दीजये दान।

बहुतक भोंदू बहि गये, सखि जीव अभिमान॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि अपने सिर की भेंट देकर गुरु से ज्ञान प्राप्त करो | परन्तु यह सीख न मानकर और तन, धनादि का अभिमान धारण कर कितने ही मूर्ख संसार से बह गये, गुरुपद – पोत में न लगे।

२.गुरु की आज्ञा आवै, गुरु की आज्ञा जाय।

कहैं कबीर सो संत हैं, आवागमन नशाय॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि व्यवहार में भी साधु को गुरु की आज्ञानुसार ही आना जाना चाहिए | सद् गुरु कहते हैं कि संत वही है जो जन्म - मरण से पार होने के लिए साधना करता है |

३.गुरु पारस को अन्तरो, जानतं हैं सब सन्त।

वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि गुरु में और पारस - पत्थर में अन्तर है, यह सब सन्त जानते हैं। पारस तो लोहे को सोना ही बनाता है, परन्तु गुरु शिष्य को अपने समान महान बना लेता है।

4. कुमति कीच चेला भरा, गुरु ज्ञान जल होय।
जनम – जनम का मोरचा, पल में डारे धोया॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि कुबुद्धि रूपी कीचड़ से शिष्य भरा है, उसे धोने के लिए गुरु का ज्ञान जल है। जन्म – जन्मान्तरो की बुराई गुरुदेव क्षण ही में नष्ट कर देते हैं।

5. गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि - गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है, भीतर से हाथ का सहार देकर, बाहर से चोट मार - मारकर और गढ़ - गढ़ कर शिष्य की बुराई को निकालते हैं।

6. गुरु समान दाता नहीं, याचक शीष समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान॥

अर्थ: कबीर दास जी कहते है कि गुरु के समान कोई दाता नहीं, और शिष्य के सदृश याचक नहीं। त्रिलोक की सम्पत्ति से भी बढकर ज्ञान – दान गुरु ने दे दिया।

द्वारा - आस्था पोरवाल

कक्षा12 - वीं विज्ञान

महादेवी वर्मा के साहित्य में छायावाद

हिंदी साहित्य में कुछ नाम अमर हो गये हैं, जिनमें से एक महादेवी वर्मा भी हैं। छायावाद युग में अपनी कविताओं के जरिये खास पहचान बनाने वालीं महादेवी वर्मा की रचनाओं में प्रतीकात्मकता, रहस्य, अलंकारिता और चित्रात्मकता के अद्भुत संगम को देखकर हर कोई असमंसज में पड़ जाता है कि आखिर इन सबका समावेश करते हुए इतनी अच्छी तरह से कोई कैसे ऐसी रचना कर सकता है, जो हर किसी के मन को भा जाने वाली और मन को भी बेहद सुकून देने वाली हो

» उपलब्धियां ·वर्ष 1956 में महादेवी वर्मा को पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही वर्ष 1988 में वे पद्म विभूषण से भी सम्मानित हुईं।

अपने काव्य संकलन 'यामा' के लिए महादेवी वर्मा ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित की गई थीं। ·हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें भारतेंदु पुरस्कार देकर भी सम्मानित किया था।

» अंतिम पड़ाव

महादेवी वर्मा न केवल एक सफल कवयित्री रहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में सेनानी की भी भूमिका निभाई और महिला अधिकारों के लिए भी लड़ा। प्रयाराज में उन्होंने 11 सितंबर, 1987 को अपनी आंखें मूंद ली, मगर उनके साहित्य ने उन्हें अमर कर दिया।

» ऐसी रही काव्य साधना

छायावादी युग की महादेवी वर्मा की रचनाओं पर छाप रही है। छायावाद का मतलब होता है कि किसी सुंदर दिखने वाली प्रिय चीज का मानवीकरण कर देना। मतलब यह हुआ कि छायावाद में सुंदरता की सजीवता सामने रखी गई है। छायावाद के बाकी रचनाकारों से महादेवी वर्मा इस मायने में भिन्न रहीं कि उन्हें बाकी कवियों की तरह से प्रकृति में खुशी या उल्लास की जगह गम या वेदना का अनुभव हुआ।

» भाषा शैली

महादेवी वर्मा की कविताएं गीति-काव्य की श्रेणी के अंतर्गत आती हैं, जिसकी दो शैलियां चित्र और प्रगीत शैलियां हैं। महादेवी वर्मा ने चित्र शैली का प्रयोग करते हुए रात्रि और संध्या का चित्रण अपनी कविताओं में विरह वेदना को व्यक्त करने के लिए किया है, जिसमें उन्होंने प्रतीकों का सहारा लिया है। हालांकि, इससे कहीं अधिक उन्होंने प्रगीत शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में महादेवी वर्मा ने किया है, जिसमें आपको सजीवता के एहसास के साथ भावनाओं की भी अनुभूति होती है। जहां तक भाषा की बात है, एक तो उन्होंने संस्कृत के आसान शब्द और कठिन तत्सम शब्दों का मिश्रण इस्तेमाल में लाया है, जि

» निष्कर्ष

शब्दों में महादेवी वर्मा की कृतियों के व्याख्यान को समेट पाना संभव नहीं है। बड़ी ही परिपक्वता से उन्होंने जीवन के सुख-दुःख एवं इसे जीने के लिए मौजूद आंतरिक शक्ति से अपनी रचनाओं में हमारा परिचय करवाया है। बताएं, आपने महादेवी वर्मा की कौन-कौन सी रचनाएं पढ़ी हैं?

आयुषी खालोटिया

कक्षा ग्याहरवीं ब वाणिज्य

माँ

वह है जो हमें जन्म देने के साथ ही हमारा लालन-पालन भी करती हैं। माँ के इस रिश्ते को दुनियां में सबसे ज्यादा सम्मान दिया जाता है। यही कारण है प्रायः संसार में ज्यादेतर जीवनदायनी और सम्माननीय चीजों तो माँ के संज्ञा दी गयी है जैसे कि भारत माँ, धरती माँ, पृथ्वी माँ, प्रकृति माँ, गौ माँ आदि। इसके साथ ही माँ को प्रेम और त्याग की प्रतिमूर्ति भी माना गया है। इतिहास कई सारी ऐसे घटनाओं के वर्णन से भरा पड़ा हुआ है। जिसमें मताओं ने अपने संतानों के लिए विभिन्न प्रकार के दुख सहते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। यही कारण है कि माँ के इस रिश्ते को आज भी संसार भर में सबसे सम्मानित तथा महत्वपूर्ण रिश्तों में से एक माना जाता है।

प्रस्तावना माँ वह है जो हमें जन्म देती है, यही कारण है कि संसार में हर जीवनदायनी वस्तु को माँ की संज्ञा दी गयी है। यदि हमारे जीवन के शुरुआती समय में कोई हमारे सुख-दुख में हमारा साथी होता है तो वह हमारी माँ ही होती है। माँ हमें कभी इस बात का एहसास नही होने देती की संकट के घड़ी में हम अकेले हैं। इसी कारणवश हमारे जीवन में माँ के महत्व को नकारा नही जा सकता है।

मेरे जीवन में मेरी मा का महत्व माँ एक ऐसा शब्द है, जिसके महत्व के विषय में जितनी भी बात की जाये कम ही है। हम माँ के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकते हैं। माँ के महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इंसान भगवान का नाम लेना भले ही भूल जाये लेकिन माँ का नाम लेना नही भूलता है। माँ को प्रेम व करुणा का प्रतीक माना गया है। एक माँ दुनियां भर के कष्ट सहकर भी अपने संतान को अच्छी से अच्छी सुख-सुविधाएं देना चाहती है।

एक माँ अपने बच्चों से बहुत ही ज्यादे प्रेम करती है, वह भले ही खुद भुखी सो जाये लेकिन अपने बच्चों को खाना खिलाना नहीं भूलती है। हर व्यक्ति के जीवन में उसकी माँ एक शिक्षक से लेकर पालनकर्ता जैसी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती है। इसलिए हमें अपनी माँ का सदैव सम्मान करना चाहिए क्योंकि ईश्वर हमसे भले ही नाराज हो जाये लेकिन एक माँ अपने बच्चों से कभी नाराज नही हो सकती है। यही कारण है कि हमारे जीवन में माँ के इस रिश्ते को अन्य सभी रिश्तों से इतना ज्यादे महत्वपूर्ण माना गया है।

निष्कर्ष मेरी माँ मेरे जीवन का आधारस्तंभ है, वह मेरी शिक्षक तथा मार्गदर्शक होने के साथ ही मेरे सबसे अच्छी मित्र भी है। वह मेरे हर समस्याओं, दुखों और विपत्तियों में मेरे साथ खड़ी रहती है और मुझे जीवन के इन बाधाओं को पार करने शक्ति प्रदान करती है, उसके द्वारा बतायी गयी छोटी-छोटी बातों ने मेरे जीवन में बड़ा परिवर्तन किया है। यही कारण है कि मैं अपने माँ को अपना आदर्श और सबसे अच्छा मित्र भी मानता हूं।

लेख - अन्नू जाट 12th वाणिज्य

बेटी है तो कल है

विधाता ने जब पहली बार किसी बेटी को बनाया होगा।

मानव के निर्माण के लिये इस धरती पर छोड़ने आया होगा।।
उस दिन विधाता भी सारी रात सोया नहीं होगा।
बेटी की जुदाई में सारी रात रोया होगा।।
कई जन्मों के पुण्योदय के बाद घर में बेटी का जन्म होता है।
इसलिये तो कन्यादान करना बहुत बड़ा धर्म होता है।।
बेटी पिता व पति दोनों के घरों के सम्मान का पूरा ध्यान रखती है।
उसके कलेजे पर चाहे पत्थर पड़े हों पर चेहरे पर मुस्कान रखती है।।
बेटी की आत्मा से उस दिन भी सिर्फ दुआओं के फूल बरसते हैं। जिस दिन राखी के कच्चे धागे भाई की कलाई को तरसते हैं।।
माँ बाप की दखल से बेटी के कई ख्वाब पूरे नहीं होते।
फिर भी बेटी की नजर में माँ बाप कभी बुरे नहीं होते।।

गम हो मगर चेहरे पर खुशी की परछाई होती है।

कठोर दिल बाप भी रो देता है जब बेटी की विदाई होती है।।
बेटी माँ बाप की लंबी उमर की हमेशा दुआएँ माँगती है।
वह सुख में हो या दुःख में चौखट पर उनका ही रास्ता निहारती है।।

तो हे ईश्वर.....मेरा तुझसे बस इतना ही कहना है।
तू कुछ दे या न दे हर घर में एक प्यारी सी बेटी जरूर देना।।

प्रियांशी बैरागी ग्याहरवीं वाणिज्य

आज हंसी कल आंसू होंगे

1

क्यूं न सहेज कर रख ले
इस प्रकृति को
आने वाले कल के लिए
आने वाले अपनों के लिए
ये कटते वृक्ष
ये सूखती नदियां
ये सिमटते पर्वत
एक रोज
यूं ही खत्म हो जाएंगे

2

आज हम कुछ कर सकते हैं
इस रोती हुई प्रकृति के आंसू
हम पोछ सकते हैं
एक वक्त बाद प्रकृति के
सारे आंसू सूख जाएंगे
पर आंसू होंगे
हमारी आंखों में
जिसे चाह कर भी
हम पोंछ नहीं पाएंगे

3

हम पुकारेंगे प्रकृति को
अपनी मदद के लिए
मौत की ख़ामोशी ओडे
वो बेजान पड़ी
बस यूं ही देखती रहेगी

जाह्नवी सोलंकी
12 वी विज्ञान

हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान

नारी के योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो अथवा किसी अन्य क्षेत्र में , वह हर क्षेत्र में आज पीछे नहीं हैं। आज सभी क्षेत्र में नारी ने पुरुष से साझेदारी निभाई हैं। महिलाओं में बढ़ती चेतना और जागरूकता ने उनकी पारंपरिक छवि को तोड़ा हैं।

साहित्य में भी महिलाओं की भागीदारी जिस तेजी से हो रही हैं, उसे देखते हुए नारी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य पर हैरान होने जैसी कोई बात नहीं रहेगी | आजादी की लड़ाई के समय जो स्वर साहित्य में उभरा, उसमें देश की परिस्थितियाँ और देश-प्रेम की अभिव्यक्ति स्पष्ट लक्षित होती थी | सुभद्रा कुमारी चौहान , महादेवी वर्मा , सरोजिनी नायडू आदि कई लेखिकाओं ने अपने समय को अभिव्यक्ति दी और उनके सशक्त लेखन का योगदान हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुआ।

आज़ादी के बाद भारतीय समाज में शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और नारीवादी आंदोलनों का ही प्रभाव रहा , जो शिक्षित और स्वावलंबी स्त्रियों के निर्णय लेने की शक्ति में लक्षित होता हैं । महिला लेखन चाहे मात्र कुछ प्रतिशत साक्षर महिलाओं तक ही पहुँच रहा हैं, परंतु फिर भी वह अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहा हैं।

उपासना गरवाल

11 वीं 'अ'

हॉकी

हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है । हॉकी एक लोकप्रिय खेल है, जिस प्रकार यह खेल भारतवर्ष में कई वर्षों से खेला जा रहा है उससे यह प्रतीत होता है कि यह खेल भारतीय है । वास्तविकता यह है, कि भारतवर्ष में हॉकी को अंग्रेजों ने शुरू किया था । भारतीय इस खेल में दक्ष हो गए और अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में विजय प्राप्त करके नाम कमाया हॉकी का स्थापना - हॉकी का जन्म 1886 में तब हुआ जब हॉकी एसोसियेशन की स्थापना हुई ।
इसके बाद इंग्लैण्ड और आयरलैंड के मध्य वर्ष 1895 में पहला अन्तर्राष्ट्रीय मैच खेला गया । हॉकी खेल के नियम - हॉकी का खेल दो टीमों के मध्य खुले मैदान में खेला जाता है । प्रत्येक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं । प्रत्येक टीम गोल करने का प्रयत्न करती है । हॉकी का मैदान 92 मीटर लम्बा और 52 से 56 मीटर चौड़ा होता है | हॉकी के खेल में गेंद, हॉकी, चुस्त ड्रैस, हल्के मजबूत और सही नाप के केनवास के जूते, झंडियां, गोल के खंभे तथा तख्ते तथा गोल की जालियां आदि चीजें काम आती हैं | हॉकी का खिलाड़ी स्वस्थ तथा मजबूत होना चाहिए | हॉकी का भारत मे इतिहास - भारत ने ओलम्पिक हॉकी में सन् 1928 में पहली बार भाग लिया । भारत में अंतिम स्पर्धा में हालैंड को 3० गोल से पराजित करके हॉकी जगत में अपने नाम का सिक्का जमा दिया । चार वर्ष बाद लॉस एंजिल्स में भारत ने फिर से स्वर्ण पदक प्राप्त किया |भारतीय खिलाड़ी ड्रिबलिंग में कुशल थे | 1936 की भारतीय हॉकी टीम के कप्तान मेजर ध्यानचंद को जिन्हें हॉकी का जादूगर कहा जाता था और उन जैसा हॉकी का जादूगर विश्व में अभी तक नहीं हुआ है । देश में अभी हाल ही में उनका 100वां जन्मदिवस मनाया गया | भारतीय खिलाड़ियों का गेंद पर सदैव नियंत्रण रहता था और वे पास देने में भी कुशल थे । प्रत्येक खिलाड़ी प्रतिरक्षा तथा आक्रमण करना जानता था | भारतीय खिलाड़ियों में टीम की भावना थी । वे राष्ट्र के लिए खेलते थे। भारतीय खिलाड़ी ड्रिबलिंग में कुशल थे । 1936 की भारतीय हॉकी टीम के कप्तान मेजर ध्यानचंद को जिन्हें हॉकी का जादूगर कहा जाता था और उन जैसा हॉकी का जादूगर विश्व में अभी तक नहीं हुआ है । देश में अभी हाल ही में उनका 100वां जन्मदिवस मनाया गया । भारतीय खिलाड़ियों का गेंद पर सदैव नियंत्रण रहता था और वे पास देने में भी कुशल थे । प्रत्येक खिलाड़ी प्रतिरक्षा तथा आक्रमण करना जानता था | भारतीय खिलाड़ियों में टीम की भावना थी । वे राष्ट्र के लिए खेलते थे।

मोनिका परमार कक्षा - 10वीं 'ब'

इंटरनेट की उपयोगिता

नाम :- पायल गेहलोत

कक्षा - 10th

इंटरनेट ने संचार क्षेत्र में जिस तेजी से अपनी पहचान बनाई और शक्ति का अहसास कराया दुनिया मुट्ठी में सिमट कर रह गई। इंटरनेट के विकास का ही परिणाम है कि छोटे से मोबाइल से हम सम्पूर्ण विश्व के किसी भी कोने के बारे में घर बैठे आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। संसार में क्या घटित हो रहा है पल-पल की सूचना प्राप्त कर सकते हैं। घर पर ही नहीं कहीं भी क्यों न हो , बस में,रेल में, हवाईजहाज में, समुद्री जहाज में, आफिस में,बाजार में कोई जगह ऐसी नहीं की जहां इंटरनेट की पहुँच न हो। ग्रामीण क्षेत्रों में भी इस माध्य्म ने अपनी प्रभावी पैठ बनाली है।

सर्वव्यापी और सार्वभौम बन गया है सूचना क्रांति का यह माध्यम। इस के महत्व को इसी से समझ जा सकता है कि मोबाइल का नेट चार्ज कब खत्म हो रहा है हमें चिंता बनी रहती है। किसी भी अन्य काम में हम विलंब कर देते हैं पर नेट का चार्ज समय पर ही करा लेते हैं। ऐसा न हो कि नेट खत्म हो जाये। इंटरनेट पर आधारित मोबाइल,टीवी,कंप्यूटर,लेपटॉप आदि साधन हमारी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। आज के दिन संचार माध्यमों के महत्व के प्रति जागरूक करते हैं। हमारा भारत देश दूर संचार क्रांति की वजह से ही विकासशील देशों में तेजी से आगे बढ़ा है और हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती को भी पंख लगे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत लम्बी छलांग लगा रहा है।

दूरसंचार के इस माध्यम ने जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नही छोड़ा जो अछूता हो। मनोरंजन के साथ-साथ, शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी, व्यापार, कृषि, रोजगार, उद्योग, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में बहुआयामी जागरूकता और विकास के साथ-साथ संस्कृति संरक्षण, धर्म एवं आध्यात्म का वातावरण बनाने का प्रभावी माध्यम बन गया है। अनेक वेब साइट और एप्स हैं विभिन्न जानकारी प्राप्त करने के लिए। चैनल्स पर निरंतर नवीन समाचारों का प्रसारण होता रहता हैं।

कोरोना महामारी की विषम परिस्थिति में जब कि सभी को घर मे रहने को बाध्य होना पड़ रहा है ऐसे में यह माध्यम वरदान सिद्ध हो रहा है। बच्चे इस माध्यम से पेंटिंग्स,संगीत,नृत्य,वाद्य वादन,वीडियो बनाना सीखने के साथ-साथ शिक्षा में भरपूर उपयोग कर अपनी रचनात्मकता को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। धार्मिक,सामाजिक सीरियल्स, फिल्म्स आदि परिवार का मनोरंजन कर रहे हैं। फोन कॉल,वीडियो कॉल्स, व्हाटऐप्स आदि से प्रियजनों के हालचाल मालूम कर रहे हैं। कोरोना की स्थिति की ताजा अपडेट और इस से जुड़ी हर नई गतिविधि की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

इंटरनेट ने संचार क्षेत्र में जिस तेजी से अपनी पहचान बनाई और शक्ति का अहसास कराया दुनिया मुट्ठी में सिमट कर रह गई। इंटरनेट के विकास का ही परिणाम है कि छोटे से मोबाइल से हम सम्पूर्ण विश्व के किसी भी कोने के बारे में घर बैठे आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। संसार में क्या घटित हो रहा है पल-पल की सूचना प्राप्त कर सकते है। घर पर ही नहीं कहीं भी क्यों न हो , बस में रेल में, हवाईजहाज में, समुद्री जहाज में, आफिस में,बाजार में कोई जगह ऐसी नहीं की जहां इंटरनेट की पहुँच न हो। ग्रामीण क्षेत्रों में भी इस माध्यम ने अपनी प्रभावी पैठ बनाली है।

कृ.प.उ.———

सर्वव्यापी और सार्वभौम बन गया है सूचना क्रांति का यह माध्यम। इस के महत्व को इसी से समझ जा सकता है कि मोबाइल का नेट चार्ज कब खत्म हो रहा है हमें चिंता बनी रहती है। किसी भी अन्य काम में हम विलंब कर देते हैं पर नेट का चार्ज समय पर ही करा लेते हैं। ऐसा न हो कि नेट खत्म हो जाये। इंटरनेट पर आधारित मोबाइल,टीवी,कंप्यूटर,लेपटॉप आदि साधन हमारी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। आज के दिन संचार माध्यमों के महत्व के प्रति जागरूक करते हैं। हमारा भारत देश दूर संचार क्रांति की वजह से ही विकासशील देशों में तेजी से आगे बढ़ा है और हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती को भी पंख लगे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत लम्बी छलांग लगा रहा है।

दूरसंचार के इस माध्यम ने जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नही छोड़ा जो अछूता हो। मनोरंजन के साथ-साथ, शिक्षा, स्वास्थ्य,तकनीकी,व्यापार,कृषि,रोजगार, उद्योग ,पर्यावरण आदि क्षेत्रों में बहुआयामी जागरूकता और विकास के साथ-साथ संस्कृति संरक्षण, धर्म एवं आध्यात्म का वातावरण बनाने का प्रभावी माध्यम बन गया है। अनेक वेब साइट और एप्स हैं विभिन्न जानकारी प्राप्त करने के लिए। चौनल्स पर निरंतर नवीन समाचारों का प्रसारण होता रहता हैं।

कोरोना महामारी की विषम परिस्थिति में जब कि सभी को घर मे रहने को बाध्य होना पड़ रहा है ऐसे में यह माध्यम वरदान सिद्ध हो रहा है। बच्चे इस माध्यम से पेंटिंग्स,संगीत,नृत्य,वाद्य वादन,वीडियो बनाना सीखने के साथ-साथ शिक्षा में भरपूर उपयोग कर अपनी रचनात्मकता को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। धार्मिक, सामाजिक सीरियल्स, फिल्म्स आदि परिवार का मनोरंजन कर रहे हैं। फोन कॉल, वीडियो कॉल्स, व्हाट्सएप ऐप आदि से प्रियजनों के हालचाल मालूम कर रहे हैं। कोरोना की स्थिति की ताजा अपडेट और इस से जुड़ी हर नई गतिविधि की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

नाम :- पायल गेहलोत

कक्षा - 10th

कवि की कल्पना

कवि तो बहुत देश मे जन्मे,
मैं तो बस उनकी छाया हूँ।
राष्ट्र प्रेम से औत-प्रोत,
कुछ शब्द उठाकर लाया हूँ।।

किस्से तो बहुत सुने थे,
जब दादाजी गीत सुनाते थे।
बापू जी और भगत सिंह के,
किस्से हमें बताते थे।।

भारत में पैदा होने पर,
यहाँ स्वाभिमान भरपूर रहे।
चाहे ईद मने या बैसाखी,
सबका बचपन खुशियों में चूर रहे।।

जब घरों में मनती थी दीवाली,
हर घर में खुशियाँ बँटती थी।
जब जन्म मनाते यीशु का,
वो रात खुशी से कटती थी।।

क्या राजनीति की राह बनी,
मातम मे भी माँगे ये वोट।
हमसे झूठे वादे कर के,
ये दिल पर करते गहरी चोट।।

ये नोट बाँटकर वोट नहीं,
मौतों का सौदा करते हैं।
एक बार मौका मिलते ही,
ये घर अपना भर लेते हैं।।

कर्म करें कुछ ऐसे ये,
मेरा शब्दकोष कम पढ़ जाए।
अगर ब्रह्मा भी लेख लिखे इन पर,
शायद वो भी कुछ ना कह पाएँ।।

भ्रष्ट नहीं सब लोग यहाँ पर,
कुछ देश को आगे बढ़ाते हैं।
कुछ अपने सुख और लोभ त्याग कर,
जग में नाम देश का करते हैं।।

कवि तो बहुत देश में जन्मे,
मैं तो उनकी छाया हूँ।
राष्ट्र प्रेम से औत-प्रोत,
कुछ शब्द उठाकर लाया हूँ।।

SHREYANSH PANDIT
23-09-2020
श्रेयांश पंडित

खेल पर निबंध

खेल एक शारीरिक क्रिया है, जिसके खेलने के तरीकों के अनुसार उसके अलग-अलग नाम होते हैं। खेल लगभग सभी बच्चों द्वारा पसंद किए जाते हैं, चाहे वे लड़की हो या लड़का। आमतौर पर, लोगों द्वारा खेलों के लाभ और महत्व के विषय में कई सारे तर्क दिए जाते हैं। और हाँ, हरेक प्रकार का खेल शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यह एक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। नियमित रुप से खेल खेलना हमारे मानसिक कौशल के विकास में काफी सहायक होता है। यह एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कौशल में भी सुधार करता है। यह हमारे अंदर प्रेरणा, साहस, अनुशासन और एकाग्रता लाने का कार्य करता है। स्कूलों में खेल खेलना और इनमें भाग लेना विद्यार्थियों के कल्याण के लिए आवश्यक कर दिया गया है। खेल,

कई प्रकार के नियमों द्वारा संचालित होने वाली एक प्रतियोगी गतिविधि है।

खेल बहुत अच्छे शारीरिक और मानसिक व्यायाम के लिए सबसे अधिक आसान और आरामदायक तरीका है। यह व्यक्तित्व के वृद्धि तथा विकास के साथ ही देश के लिए भी उपयोगी होता है। हम नियमित रुप से खेलने के लाभ और महत्व को कभी भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं। खेल एक व्यक्ति को अच्छी भावना प्रदान करता है और स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

यह हमें हमेशा तंदुरुस्त और स्वस्थ रखने के साथ ही मादक पदार्थों की लत, अपराध और विकारों की समस्याओं से दूर रखता है। सरकार द्वारा बच्चों और विद्यार्थियों को खेलों में भाग लेने के लिए बढ़ावा देने और इनके माध्यम से लोकप्रियता प्रदान करने के लिए खेलों का राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आयोजन किया जाता है। कई सारे खेल बहुत ही साधारण होते है हालांकि इनमें महारत हासिल करने के लिए नियमित रुप से अभ्यास, ध्यान और मेहनत करने की आवश्यकता होती

नाम- पुरषोत्तम माहेश्वरी

कक्षा-11th commerce

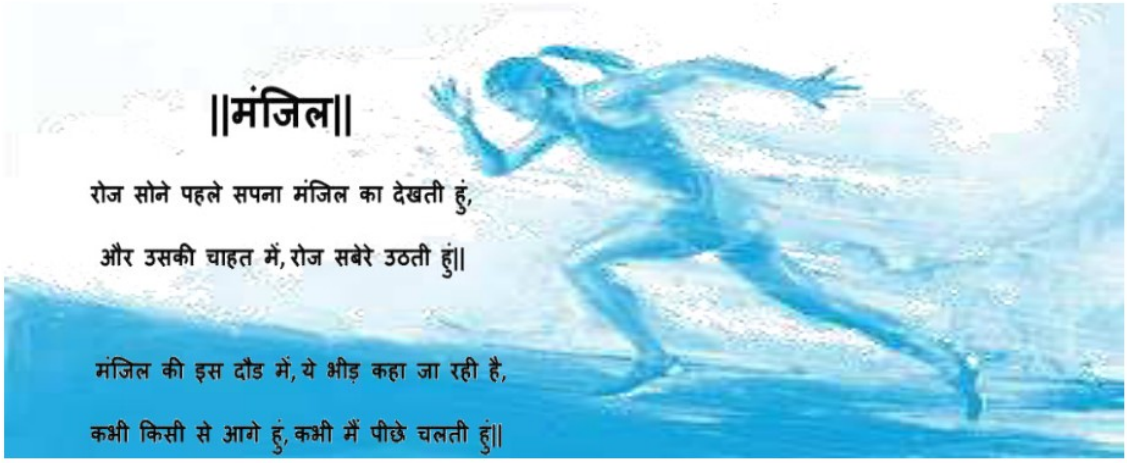

||मंजिल||

रोज सोने पहले सपना मंजिल का देखती हुं,

और उसकी चाहत में, रोज सबेरे उठती हुं||

मंजिल की इस दौड में, ये भीड़ कहा जा रही है,

कभी किसी से आगे हुं, कभी मैं पीछे चलती हुं||

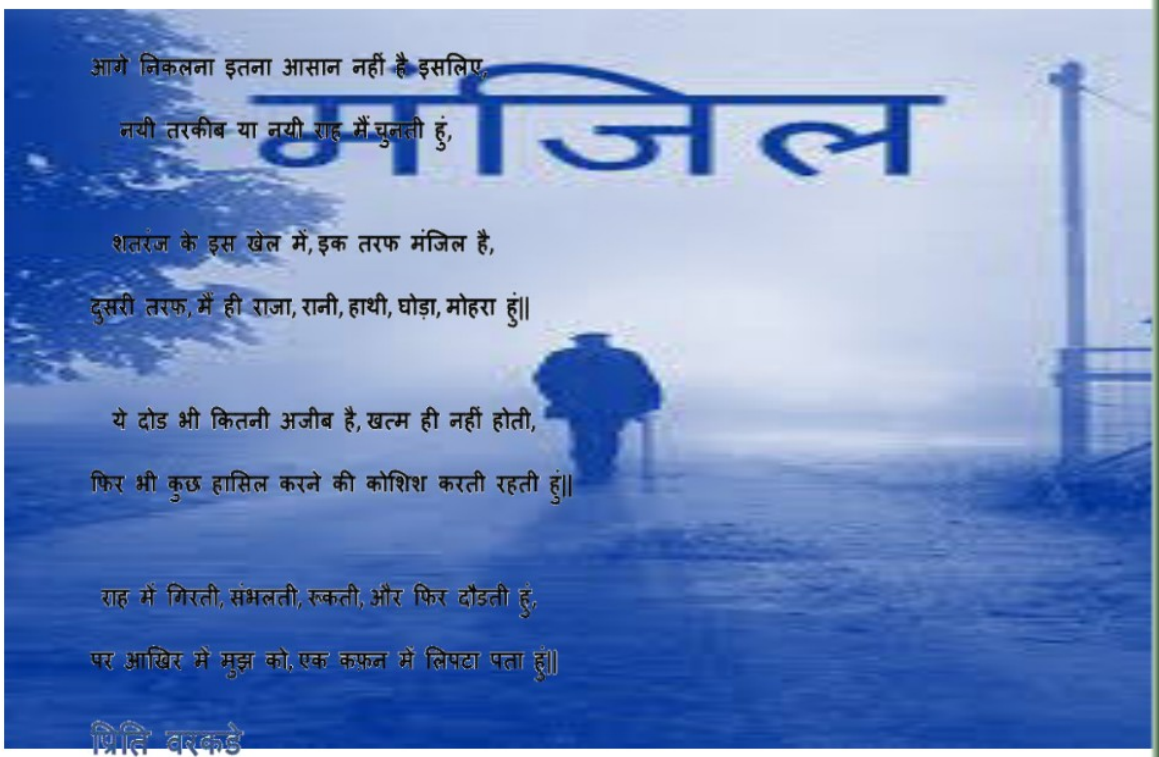

आगे निकलना इतना आसान नहीं है इसलिए,

नयी तरकीब या नयी राह मैं चुनती हुं,

शतरंज के इस खेल में, इक तरफ मंजिल है,

दुसरी तरफ, मैं ही राजा, रानी, हाथी, घोड़ा, मोहरा हुं||

ये दोड भी कितनी अजीब है, खत्म ही नहीं होती,

फिर भी कुछ हासिल करने की कोशिश करती रहती हुं||

राह में गिरती, संभलती, रूकती, और फिर दौडती हुं,

पर आखिर में मुझ को, एक कफ़न में लिपटा पता हुं||

प्रिति वरकडे

कक्षा- ग्यारहवीं विज्ञान

नई शिक्षा नीति 2020

भारतीय भाषा, कला, और संस्कृति का प्रचार

NEHA CHOUHAN

• भारतीय भाषा, कला और संस्कृति का प्रचार न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि व्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति बच्चों में विकसित होना जरूरी है, इससे उनमें विभिन्न संस्कृतियों की पहचान सुदृढ़ हो।

• सभी प्रकार की भारतीय कलाओं को शिक्षा के सभी स्तरों पर स्थापित किया जाए।

• भारतीय भाषाओं के शिक्षण और सीखने को हर स्तर पर स्कूल और उच्च शिक्षा के साथ एकीकृत किया जाए। भाषाओं के प्रासंगिक और जीवंत बने रहने के लिए, इन भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों, कार्य पुस्तिकाओं, वीडियो, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों, पत्रिकाओं आदि सहित उच्च गुणवत्ता वाली प्रकाशित सामग्री की एक स्थिर धारा हो।

• भाषाओं को व्यापक रूप से प्रसारित किए जाने वाले अपने शब्दकोष हों जिनका लगातार आधिकारिक अपडेट हो।

• बच्चों में भाषा, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हों पहल—स्कूल के सभी स्तरों पर संगीत, कला और शिल्प पर हो अधिक जोर; बहुभाषावाद को दिया जाए बढ़ावा, इसके लिए तीन-भाषा सूत्र का प्रारंभिक कार्यान्वयन हो; जहां संभव हो घर/स्थानीय भाषा में शिक्षण हो; अधिक अनुभवात्मक भाषा सीखने का संचालन हो; ज्ञानी प्रशिक्षकों के रूप में उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, शिल्पकारों और अन्य विशेषज्ञों की भर्ती हो; मानविकी, विज्ञान, कला, शिल्प और खेलों में जनजातीय और अन्य स्थानीय ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

• भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शन आदि देश भर में विकसित किए जाएंगे, 4 वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में इन विषयों में दोहरी डिग्री विकसित की जाए।

• कला और संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, पुरातत्व संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन और उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर वेब डिजाइन में डिग्री भी बनाई जाएं।

• उच्च शैक्षणिक संस्थानों के छात्र जाएंगे देश भर में, यह न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सों की विविधता, संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान की समझ बढ़ाएगा।

• संस्कृत को स्कूल में मजबूत प्रस्ताव के साथ मुख्यधारा में लाया जाए-जिसमें तीन -भाषा सूत्र में भाषा के विकल्पों में से एक के साथ-साथ उच्च शिक्षा भी शामिल हो। संस्कृत विश्वविद्यालय भी उच्च शिक्षा के बड़े बहु-विषयक संस्थान बनने की ओर अग्रसर होंगे।

• पूरे देश में संस्कृत और सभी भारतीय भाषा संस्थानों और विभागों को और सुदृढ़ किया जाए।

• भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए, अकादमियों की स्थापना होगी। आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं के लिए ये अकादमियां केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श या सहयोग से स्थापित की जाएंगी। अन्य अत्यधिक बोली जाने वाली भारतीय भाषाओं के लिए भी अकादमियां इसी तरह केंद्र और/या राज्यों द्वारा स्थापित की जा सकती हैं।

• भारत में सभी भाषाओं, और उनकी संबंधित कला और संस्कृति को एक वेब-आधारित प्लेटफॉर्म/पोर्टल/विकी के माध्यम से प्रलेखित किया जाएगा, ताकि लुप्तप्राय और सभी भारतीय भाषाओं और उनके संबंधित समृद्ध स्थानीय कला और संस्कृति को संरक्षित किया जा सके।

ADITI PALIWAL
23/09/2020

स्कूल मस्ती

गेम्स पीरियड में खेलते बच्चे
उनको खेलता देख
खो जाती हूँ अपने आप में
याद आते हैं अपने स्कूल के दिन।

न ग्राऊंड, न खेल
बस कहीं भी बैठ खाना खाते
खेल के नाम पर बस
कुछ तेरी मेरी बातें कर जातें।

कितना स्वच्छंद हो गया है स्कूली
जीवन
कुछ पढ़ाई बाकी मस्ती
जिंदगी बन गई है उनके सस्ती
छोटी छोटी बातों पर भूल जाते
दोस्ती।

माना जमाना बदल गया है
पर स्कूली जीवन में
बदलाव ज्यादा आया है
जिंदगी को लक्ष्यहीन बनाया है।

वो भोलापन अब समाप्त हो रहा है
सोशल मीडिया का असर हो रहा है
उग्रता अधिक ,वैमनस्य बढ़ रहा है
शालीनता मानो लुप्त हो रहा है।

रिसेस व गेम्स पीरियड
जहाँ देते जीवन मूल्य
वहीं आज कर रहे मूल्यों का हनन
टीम बना लड़ने में लगता है मन।

शिक्षक तो शिक्षक अभिभावक परेशान
पढ़ाई में बच्चों का नहीं ध्यान
कहा वे अब किसी का न मानते
अपनी मन मर्जी हर जगह चलाते।

गुरू शिष्य परम्परा
नहीं दिखती है अब
मनचली मस्ती बढ़ने लगी है
परिणाम अब नज़र आते हैं।

संस्कृति का वाहन होगा तब
सुसंस्कृत स्कूल जीवन होगा जब
चरित्र निर्माण ध्येय बनेगा जब
जीवन सफल हो जाएगा तब।

Name : Aditi Paliwal Class: 10th ' B '

कोरोना

हर घर में यहीं नारा है,
कोरोना को हराना है।
इसने कैसा चक्कर चलाया,
बड़े बड़ों को घर में बैठाया,
अब इसको भी भागना है,
फिर से घूमने जाना है।
थाली से सब्जी गायब ,
मुंह से पान और मावा गायब,
महंगा दौर जमाना हैं,
फिर से पनीर पापड़ खाना है।
कोरोना को हराना है॥

निखिल लाड़ना कक्षा 10 अ

तुलसीदास की जीवनी

संस्कृत से वास्वतिक रामायण को अनुवादित करने वाले तुलसीदास जी हिन्दी और भारतीय तथा विश्व साहित्य के महान कवि हैं। तुलसीदास के द्वारा ही बनारस के प्रसिद्ध संकट मोचन मंदिर की स्थापना हुयी। अपनी मृत्यु तक वो वाराणसी में ही रहे। वाराणसी का तुलसी घाट का नाम उन्हीं के नाम पर पड़ा है।

गोस्वामी तुलसीदास एक महान हिन्दू संत, समाजसुधारक के साथ ही दर्शनशास्त्र और कई प्रसिद्ध किताबों के भी रचयिता थे। राम के प्रति अथाह प्रेम की वजह से ही वे महान महाकाव्य रामचरित मानस के लेखक बने। तुलसीदास को हमेशा वाल्मिकी (संस्कृत में रामायण और हनुमान चालीसा के वास्वतिक रचयिता) के अवतरण के रुप में प्रशंसा मिली। तुलसीदास ने अपना पूरा जीवन शुरुआत से अंत तक बनारस में ही व्यतीत किया।

नाम : डिम्पल चौहान

कक्षा : 10 ' ब '

निर्बल का बल

निर्बल का बल राम है।
हृदय ! भय का क्या काम है।।
राम वही कि पतित-पावन जो
परम दया का धाम है,
इस भव - सागर से उद्धारक
तारक जिसका नाम है।
हृदय, भय का क्या काम है।।
तन-बल, मन-बल और किसी को
धन-बल से विश्राम है,
हमें जानकी - जीवन का बल
निशिदिन आठों याम है।
हृदय, भय का क्या काम है।।

हिमांशु सोपरा
कक्षा 12 विज्ञान

राम

राम...जिनके नाम का उच्चारण ही सुकून, सकारात्मक ऊर्जा और शक्ति का संचार करता है। जिन्होंने स्थापना की न्याय की। जिन्होंने संघर्ष की कलम से विजय की दास्तान लिखी। रावण प्रतीक है अन्याय का, अभिमान का और उनके अभिमान को ध्वस्त किया राम ने।

रावण के पास वैभव खूब था। साम्राज्य भी था और शक्ति भी थी। किन्तु जीवन में इसका महत्व तभी है जब विनम्रता हो। उदारता हो। न्याय हो। जब पाप बढ़ता है तो राम आते हैं। अन्याय को मिटाने के लिए। अनीति ओर पाप को जलाने के लिए।

राम ने संसार को मर्यादा की जो परिभाषा दी, वह प्रेरक भी है और अनुकरणीय भी है। आज के समय में जब युवा पीढ़ी अपनी मौज में आकर संस्कारों को बिसराती जा रही है, राम को जीवन में उतारने की आवश्यकता है। उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। राम जिनमे राज्य पाने का कोई लालच छू भी नहीं पाया बल्कि अपने कर्तव्य के लिए वे राज पाट छोड़कर 14 वर्षों के कठिन वनवास पर चले गए। आज्ञापालन और त्याग का ऐसा अभूतपूर्व उदाहरण और कहाँ मिलेगा? राम का चरित्र त्याग, संघर्ष और अन्याय के विरुद्ध अभियान छेड़ने की प्रेरणा देता है। जो विपत्तियों से घबराकर मुँह छिपाने की नहीं बल्कि आखिरी सांस तक जूझने की सीख देता है।

राम को जीवन में लाना है तो संघर्ष-सच्चाई और न्याय को स्थापित करना होगा।

-मृदुला पंजाबी

12वीं विज्ञान

गोस्वामी तुलसी दास के साहित्य में मानवीय चेतना

विश्व में ऐसे अनेक कवि हुए जिन की कृतियां कालजयी हुई वह सभी कालों के और संपूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ कवियों के रूप में मान्य हुए। ऐसे कवियों ने समाज, जनता और देश काल की परिस्थितियों के अनुसार उस समय के जनमत को बहुत अच्छे से निखारा। इन्हीं कवियों ने समाज में जन क्रांति की लहर को जन्म दिया महान भारत भूमि में ऐसे कितने ही कवि हुए जो केवल भारत के लिए ही नहीं संपूर्ण विश्व के लिए रत्न बन गए। इन कवियों ने कविता को नए स्तरों पर पहुंचाया।वे वास्तविक रुप से कविता के सच्चे उपासक थे। हिंदी साहित्य जिस काल को अपना स्वर्ण काल मानता है उस भक्ति काल में तो ऐसे कवियों की गणना ही क्या करना जो ईश्वर और मानव के पारस्परिक संबंध को समाज के संबंधों से ऊंचा बताते हुए सदैव मानवता के उपासक रहे। इन्होंने कालाजयी दिव्य रचनाओं का निर्माण किया ,ऐसी ही रचनाओं में रामचरितमानस अमर है और इसके कवि श्री तुलसीदास तो आज भी भारत में सम्मान को प्राप्त है। तुलसीदास जी ने जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों की अपने काव्य में उपासना की वह एक अनुपम उदाहरण है। तुलसी के साहित्य के प्रमुख ग्रंथ माने जाने वाले रामचरितमानस में ऐसी मानवीय मूल्य परक उपासना मिलती है जो अपने आप में अत्यंत उत्तम उदाहरण है।तुलसी सामाजिकता और आदर्श के कवि हैं, उनके काव्य में राम एक आदर्श पुत्र हैं, लक्ष्मण एक आदर्श भाई हैं, राम एक आदर्श राजा भी हैं एक आदर्श मित्र भी है तुलसी के राम किसी बंधन में नहीं बंधे हैं।

कृ.प.उ.———-

वे सभी के लिए समान है तुलसी का साहित्य जहां एक और मानव जीवन के आदर्शों को स्थापित करता है वही समाज में जन क्रांति के लिए आह्वान देता है। तुलसी हर वर्ग के प्रति संवेदनशील हैं वे मित्रता में किसी को छोटा या बड़ा नहीं मानते।उनके अनुसार मानव का परम धर्म उपकार रत रहना ही है तभी तो वे कहते हैं" पर हित सरस धरम नही भाई",वे समभाव के उपासक हैं तभी कहते हैं "हरि व्यापक सर्वत्र समाना" उनकी इन्हीं विशेषताओं ने उन्हें हर जाति-धर्म में सम्मान दिलाया। भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में उनकी कृतियों को सम्मान दिया जाता है आज भी हर भारतीय के मन में उनके राम की नायक वाली छवि अंकित है। मेरा विश्वास है की तुलसी के सच्चे अर्थों को समझकर हम विश्व को एक ऐसे पद पर ले जा सकते हैं जहां एक दूसरे के प्रति भेद की बात ना हो केवल और केवल जहां समानता और प्रेम की बात हो। तभी विश्व एक ऐसी अवस्था में पहुंचेगा जहां इस महान मनुष्य ने उसका सपना देखा था।

लेख -
ईशान कौशिक
कक्षा 10 ब

महाप्रलय

(ईश्वर मनुष्य से तर्क करते हुए)

दोष तू तो दोषी में,
जाम तू मदहोशी में
अधूरा तू समृद्ध मे
जो लोभी तू तो बुद्ध में
चले जो तू वह राह हूं मैं
बना है तू फना हूं मैं
माता हूं मैं पिता हूं मैं
कुरान हूं गीता हूं मैं
ईसा मसीह में नानक हूं
सुहाना हूं भयानक हूं
आकाश हूं पाताल हूं
शरीर हूं कंकाल हूं
भूत मैं पिशाच मैं
शमशान का हूं नाच में
कुबेर हूं फकीर हूं
नसीब की लकीर हूं
कटोच तू तो प्यार में
जो चीख तू पुकार में
मैं स्वर्ग हूं मैं नर्क हूं

जवाब तू में तर्क हूं
तबाह करे वह बाढ़ हूं
ज्वालामुखी पहाड़ हूं
किए जो तूने पाप है
रखा मैंने हिसाब है
छुपा नहीं है मुझसे कुछ
खुली तेरी किताब है
कुकर्म जो तू कर गया
घड़ा जो तेरा भर गया
किया जो तब डरा नहीं
परिणाम से क्यों डर गया
की धरती पर जब मैं आऊंगा
महाप्रलय मैं लाऊंगा
ना रहेगा जीव जंतु
नाश में कर जाऊंगा||

आदिश वीरानी 11th अ
विज्ञान

ENGLISH

My Teacher

you are like a friend to me
when I was no where to go,
you were the only one whom I know

you are like my mother,
who is always there to wipe my tear.

you are just a Gardner for me
when ever needed you pour the knowledge
of wisdom on me and help me to grow.

Oh my very dear teacher
bless me never to be in fear
as you are the ocean
I am your drop that follows you throughout.

Karti Morya VI A

Lt Kiran Shekhawat : First Woman Martyr of Indian Navy

Early life

Lt Kiran Shekhawat was born on 01 May 1988 in Mumbai into a Naval family. Daughter of Hon Lt Vijendra Singh Shekhawat and Smt Madhu Chauhan, Lt Kiran Shekhawat belonged to Sefarguwar village in Khetri Tehsil of Jhunjhunu district in Rajasthan. She completed her schooling from Kendriya Vidyalaya-II in Vishakhapatnam and then graduated with a Bachelor of Science from Andhra University. She then worked with a private bank before joining the Indian Naval Academy (INA) in Ezhimala, Kerala in 2010. Lt Shekhawat had married a fellow naval officer Lt Vivek Singh Chhoker from Kurthala near Gurgaon, where her mother-in-law Sunita Chhoker was a sarpanch and the family had some agricultural land.

Naval Career

Commissioned on July 5, 2010, Lt Shekhawat joined the Indian Naval Air Squadron (INAS) 310 — a premier IW squadron nicknamed Cobras. In her five-year career, she was posted across various Naval stations and was transferred to Goa in 2015. Being an expert on intelligence warfare, she was recording the environment charts and various other parameters required for intelligence analysis during the ill-fated training sortie.

Lt Kiran Shekhawat's life was all about the Navy — her death too. She was born to a Navy sailor and joined the Navy herself. She was extremely focused and a disciplined officer. Lt Shekhawat had a passion for flying and when she wasn't on duty, she loved dancing and listening to the tracks of Enrique Iglesias and Shania Twain. A big fan of author Nicholas Sparks, she made sure she either read all his books or watched the movies based on them. Lt Shekhawat, an Observer, had taken part in the first all-women marching contingent of the Navy during the Republic Day parade of Jan 2015. Lieutenant Shekhawat's father retired from the Navy as Master Chief Petty Officer and is now running a charitable organization called, "Lt Kiran Shekhawat Foundation" in her honour. Her husband Lt Cdr Vivek Singh Chhoker is also a naval officer currently serving as an instructor in the Naval Academy in Ezhimala in Kerala.

Indian Navy Dornier Crash: 24th March 2015

The Indian Navy Dornier that crashed during a night sortie on 24th March 2015 was being flown by a competent and experienced team comprising Lt Kiran Shekhawat, co-pilot Lt Abhinav Nagori and Commander Nikhil Joshi. Lt Kiran was operating in a combat role as an observer in the tactical sorties flown over the ocean for tracking and engaging hostile ships violating the country's maritime boundaries. Her body and that of the co-pilot Lt Abhinav Nagori were recovered two days after the crash, while the pilot Commander Nikhil Joshi was rescued by a fisherman. The wreckage of the Dornier was found about 60 m under the sea at the south-west of Goa coast. The body of Lieutenant Shekhawat was found inside the fuselage of the aircraft.

Legacy

Lt Kiran Shekhawat was a brave and a committed soldier who became the first Naval woman officer to die in harness. Lt Kiran Shekhawat will always be remembered for her service to the nation and her story will continue to inspire future generations of India.

Lt Kiran Shekhawat is survived by her parents and a brother.

A Shaheed Park has been developed in the honour of Lt Kiran Shekhawat on a 2 acres land at Kurthala (Nuh) in Haryana.

A life-size statue of Lt Kiran Shekhawat has been installed in the Shaheed Park at Kurthala.

A 7.5 Kilometres of road stretch between Chechera and Village Bighwali has been named after Lt Kiran Shekhawat in her honour.

Lt Kiran Shekhawat's family has established a society in March 2016 named "Lt Kiran Shekhawat Foundation" to work for weaker sections of society and to organize periodical events with an aim to inspire the young generation

Agrima Mishra
6th A
Kendriya Vidyalaya, Mandsaur (M.P.)

SCIENTIFIC FACTS

1.Turritopsis dohrni (jellyfish) is the only species who can not destroy itself.

2.we are born with 300 bones, but by the age of 18, by coming in, our bones become 206 only.

3. 25% of our body bones are in our feet.

4. Currently Saturn has the highest number of moons which is 82 moons.

5. Methanol fire is the only type of fire which is invisible.

6.Hot water turns into ice more fastly than the cold water because of the Mpemba effect.

7.The photon which require only 8 min. 16 sec to come to earth from sun the same photon requires 40000 years to come from sun's core to its surface.

8.Mars is red because in its surface ferrous oxide is present which forms rust and the rust continuously float in its atmosphere.

9. Camels don't actually store water in their humps they store the water in their bloodstream.

10.Octopuses have three hearts, nine brains and blue blood.

BY – DEV SETHIYA

CLASS – 7th 'B'

Article On Nature

Nature loves everyone.Nature is inspiration to lives. Each other helps human beings is totally depended on nature. Nature gives food, fruit and many other essential things for living and human beings return pollution, noise pollution, air pollution and water pollution but we want to nature friend us every time to aware for nature and stoping pollution. Nature is very important of our life, animal life and plants life. Nature is depended on trees, plants, water. Nature is our sourrounding. Nature gives water we drink, air we breath, food we eat, land we lives. Trees is house of birds because birds build nest in trees. There are three parts of nature - trees, plants, water. Morning air is very healthy for our live. In morning we also do exercise, yoga and all things are good for health.

Aachi Patidar VII

Thanks mom, Thanks dad

Thank you, mom.
Thank you, dad.
Three small words.
So much to add.
For all your love.
And your support.
A million words.
Word be to short.
The words,
"I LOVE YOU
Seem to few.
To express the love.
I have for you.

NAME = KIRAN. ARYA.

THE TRUE FRIEND

Once there were two friends - a squirrel and a puppy. They used to live and play together. The squirrel was very sporty and always won the game. The puppy used to feel bad and thought that it was of no use.

One day, it started raining heavily. The squirrel was in high spirits. He started doing antics but suddenly, lost his balance and fell in the rain water.

He called his friend , the puppy for help.
The puppy came to his rescue. The squirrel climbed on its back and reached a safe place.
He thanked his friend for saving his life.

NAME - KIRAN ARYA
CLASS - 6TH B
CLASS - 6 th B

Spring Spring Spring

Spring Spring Spring
Is here with a bling

We can see the flowers blooming
People are enjoying by roaming

We can see the colors all over
Don't miss the chance to enjoy before it's over

Spring Spring Spring
Is here with a bling

Angel Bhatiya
8th A

APJ ABDUL KALAM

We are most miliar with the accomplishments of Dr APJ Abdul Kalam as a defence scientist. As a result of it, the alliance of N. D. A. government made him the contender for the post of leader of India in 2002. With about 90% vote, he swore as the eleventh president of India on 25 July 2002 in Parliament within sight of Prime Minister Atal Bihari Vajpayee and his bureau of ministers.Sir Abdul Kalam was a vegan and carefully followed discipline throughout his life. Even though he didn't have connections with a political field, he was politically productive on account of his idea of patriotism and his devotion towards open government assistance. He has been the central President who has never had any association with legislative issues or political exercises.In his few books, Kalam Sir has explained how he turned into the president of India. Through this book, he has explained numerous occasions that happened with him turning into the president.This book recommends that he again wanted to be the president of India. However, the conditions didn't permit him to do as such. By going through his books, we can easily understand the thought of his interest and ability recorded as a hard copy.

Vishal Rathore

Class - 8 A

Rani Lakshmi Bai

Rani Lakshmi Bai was one of the leading warriors of India's first struggle for independence. A symbol of bravery, patriotism and honour. Rani Lakshmi Bai was born on 19th November 1828 at Pune but her actual name of Manikarnika. Her father Moropant tambe was a court advisor and mother Bhagirathi was a scholarly women. At a very early age she lost her mother. Her father raised her in an unconventional way and supported her to learn to ride elephants and horses and also to use weapons effectively. She grew up with Nana Saheb and Tattiya tope who were active participants in the First revolt of independence.

In 1842, Rani Lakshmi Bai got married to Raja Gangadhar Rao who was the Maharaja of Jhasi. After her marriage she came to be known as Lakshmi Bai. In 1851, she gave birth to a son but unfortunately, he died in his fourth month. After this tragic incident, Damodar Rao was adopted by the Maharaja of Jhasi as his son. Due to poor health Maharaja Gangadhar Rao he died on 21st November 1853. Rani lakshmi Bai was just 18 years old when the Maharaja died, but she didn't lose her courage and took up her responsibility.

Lakshita Nikhade

7th B

THE SQUIRREL

A fable
The mountains and the squirrel
Had a quarrel;
And the farmer called the latter 'Little Prig'
Ban replied
"you are doubtless very big;
But all sorts of things and weather
Must be taken in together
To make up a year
And a sphere.....
And I think it's no disgrace
To occupy my place.
If I am not so large as you,
And not half so spry.
If I'll not deny you make
A very pretty squirrel track;
Talents differ ;all is well and wisely put;
If I can not carry forest on my bag,
Neither can you crack a nut "

- HARSHITA PRAJAPATI X 'A'

RANI LAXMI BAI

Rani laxmi bai was the queen of jhansi, india [1834-1858]. She was the bravest soldier of the first war of indian independence against the british rule during the period of lord dalhousion who introduced a system named "doctrine of lapse. in 1857 the sepoy regiment stationed at jhansi till 1858 finally the british army surrounded her though she tried to retreat with joined forces of taty a tope but she was fatally wounded and died on the battlefield in 1858. even her enemies praised her indomitable spirit as a fighter to save the country. Her brave deeds inspired future generations to fight against the british rajs

Nidhi Mandliya
Class 10th

Indian economy and the participation of youth in economy

It is essential for any country who wanted development to ensure the empowerment of its youth, because we know youth is the most important category of any country. Youth is the the future power of country. India is a developing country and it insure to empower its economy the empowerment of economy is based on employment. The Economists of the world classify some categories of working classes, among them ,the youth has the most intelligence ,health and potential for work but the problem is of unemployment. As we think that for insurance the growing of economy of India it is most important to train youth, to give them employment because they can use their full potential. Before independence we thinks of a better living which can ensure the development of people and the nation but before independence the problem of unemployment is solved by the common people as the most people in India are the farmers so they can solve their problem with the help of agriculture .they works in fields also those who are not farmers did other agriculture related works like animal husbandry and those who did not do this both works they used to work on there ancestors like gold something and other works. In this time the problem of unemployment is being solved by this old method we need to improve the basic concept of the Indian economy and we should move to the the old method of ensuring the empowerment of economy what is the old method? the old method is of the work of agriculture.Mainly India is agricultural country based on highly agriculture products we know, everyone wants food and other products produced by agriculture.

P.T.O. .....

So, to ensure the improvement and the participation of youth in economy we does not want any kind of hard work. We must have to return on the work of agriculture which can be insure the participation of youth in economy. India is a growing economy and if we should move to agriculture with the full potential of youth the agriculture grows more effectively as we think. By this work we can ensure more producing of agricultural products. After heaving a large number of this products we can become one of the largest producers in the world. Also this can resolve the problem of unemployment and the youth mind can also make revolutionary changes and experiments in the field of agriculture so I think we should move to this and let's make a better India.

Article by-Ishan kaushik

Class-10th "b

The Havoc of Corona

The havoc means comes true,
with the deal of covid.
Comes in a Higher mean,
When April Rises Up.
The Lockdown term comes true,
One...two...three,rises so long.
The mask Comes on Mouths,
And we trapped in house.
It become serious from May,
Thousands of cases Positively charged a day.
Lockdown comes to end in July,
But cases not yet.
What will happens?...No one knows,
The vaccine comes not now.
But remember, Ones from the darkness,
The sun will rises up.

-Raviraj Jain
9th 'B'[2020-21]

FACT FILE

The human brain is more active at night than during the day.
the nail of the middle finger grows faster than the other finger.
Facial here grows faster than any other hair on the body.
The acid in your stomach is strong enough to dissolve zinc. It doesn't destroy the stomach because his stomach was constantly renew themselves.
Women's heart beats faster than men's.
Men burn fat faster than women by a rate of about 50 calories a day.
300 million of your body cells die every minute.
300 hundred billion of new cells are created every day.
You need to use 200 muscles to take a single step.
Water can freeze and while at the same time.

JANVI JAGARWAAL

9 B

The world has changed due to COVID-19 pandemic. Global spread of COVID-19 has overwhelmed all health systems and has incurred widespread social and economic disruption. The authorities are struggling to ramp up the healthcare systems to overcome it. Anaesthesiologists are facing long duty hours, have fear of bringing disease home to their families, being companion to critically ill patients on long term life support, being on front line of this pandemic crisis, may take toll on all aspects of health of corona warriors- physical, mental, social as well as the emotional.At this juncture, we must pause and ask this question to ourselves, "Buried under stress, are we okay?"

By - Akshay Verma
12 th Commerce

CORONA WARRIOR

The world has changed due to COVID-19 pandemic. Global spread of COVID-19 has overwhelmed all health systems and has incurred widespread social and economic disruption. The authorities are struggling to ramp up the healthcare systems to overcome it. Anaesthesiologists are facing long duty hours, have fear of bringing disease home to their families, being companion to critically ill patients on long term life support, being on front line of this pandemic crisis, may take toll on all aspects of health of corona warriors- physical, mental, social as well as the emotional.At this juncture, we must pause and ask this question to ourselves, "Buried under stress, are we okay?"

Peace

A dark hand touching a light hand,
A young face looking into an old,
All people working together,
For a goal to be told.

I stranger and stranger together,
A foe and a foe are now friends,
All people helping each other,
Making beginnings meet ends.

A heart understanding another,
A soul reaching out to a soul,
All people feeding their elders,
With plate, fork, spoon and bowl.

A rich man helping a poor man ,
A convict dancing with a child,
all people put aside their differences,
And share a hope that is wild.

A shout comes out from the open,
Like a foot step falling on sand,
All people together proclaim,
"Now there is peace in this land!"

~by Akshita Bairathi
XII Science

Best Friend

Friendship is one of the greatest blessings that not everyone is lucky enough to have. We meet a lot of people in the journey of life but there are only a few who leave a mark on us. My best friend is one such person who has been able to make a positive impact on my life. We have been a part of each other's lives for the longest time and our friendship is still developing. Most importantly, I feel extremely fortunate to have someone as a best friend in my life. In this essay on my best friend, I will tell you about how we became friends and about her best qualities.

ANU JAT CLASS 12TH

Our Friendship

Our friendship started when my best friend came in as a new admission to our class. Both of us were hesitant to talk to each other at first, but gradually we developed a bond. I remember the first time my best friend tried to talk to me; I rolled my eyes because I thought there was no use and we wouldn't hit it off. However, to my surprise, we became best friends by the end of the session year.

We learned so many things about each other and found out that our taste in music was so similar. Since then, there was no stopping us. We spent all our time together and our friendship became the talk of the class. We used to help each other out in studies and visited each other's home as well.

By =Annu jat
12th commerce

I wandered lonely as a cloud

I wandered lonely as a cloud
That floats on high o'er vales and hills,
When all at once I saw a crowd,
A host, of golden daffodils;

Beside the lake, beneath the trees,
Fluttering and dancing in the breeze.
Continuous as the stars that shine
And twinkle on the milky way,
They stretched in never-ending line
Along the margin of a bay:
Ten thousand saw I at a glance,
Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced; but they
Out-did the sparkling waves in glee:
A poet could not but be gay,
In such a jocund company:
I gazed—and gazed—but little thought
What wealth the show to me had brought:
For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that inward eye

They stretched in never-ending line
Along the margin of a bay:
Ten thousand saw I at a glance,
Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced; but they
Out-did the sparkling waves in glee:
A poet could not but be gay,
In such a jocund company:
I gazed—and gazed—but little thought
What wealth the show to me had brought:
For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that inward eye
Which is the bliss of solitude;
And then my heart with pleasure fills,
And dances with the daffodils.

By:Anuja Shrotriya
12th Science

(Ch 7 verse 4)

Earth, water, fire, air, ether, mind, intellect, and ego—all together these eight constitute My separated material energies.

The verse mentioned above throws light on mass and energy relations. Almost the same theory was announced by Dr Albert Einstein- centuries after the Bhagavadgita was recited.

The same theory was used by Robert Oppenheimer to make 'little boy' a nuclear bomb containing tremendous destructive potential.

After a successful experiment, he quoted the following shloka:

(Ch 11, verse 32)

I am powerful Time, the source of destruction that comes forth to annihilate the worlds. Even without your participation, the warriors arrayed in the opposing army shall stop existing.

Even the words ' दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ' (a thousand suns were to blaze forth together in the sky) indicate the generation of enormous illumination during the bombardment on Hiroshima and Nagasaki.

Bhagavad Gita- a scripture of science ~ Anushka verma (12th sci)

(Ch 2 verse 22)

Just as a man removes worn-out clothes and puts on new ones, so also the embodied Self leaves worn-out bodies and adopts another body which is new.

The immortality of the soul is considered to be the permanence of energy in the universe which is neither generated nor destroyed.

The examples are, thus, endless. One can conclude with a quotation:

"Gita can be seen as the main literary support for the great religious civilization of India, the oldest surviving culture in the world."

When the entire world civilization was in the cradle, the sages of India had already recited the Vedas. The ancient texts of India are considered to be a treasure of knowledge. The scriptures in ancient India were penned with extraordinary scientific temperament. The Bhagavad Gita, among all, is studied, analyzed and interpreted the most.

The Advantages and Importance of Online Learning

Some say that wisdom comes with age while others insist that it comes from learning. Nowadays, thanks to the internet, learning is open to all. Hence, people in the countries where traditional learning is facing various obstacles can take advantage of online courses. So far, e-learning has been effective to the people that understood its value. It offers the chance to have great results for lower costs and sometimes for no costs at all. Despite these, online learning has many other advantages. Education may have several purposes, and online courses help to fulfill it. Some even say that e-learning can revolutionize education as it provides new opportunities for traditional learning. Taking online classes has a lot of advantages and below are some of the most important

When people choose to pursue a study program in numerous cases they need to move to another city, away from their home, family, and friends. Meanwhile, there are countries where gender issues prevent young women from accessing education. In such cases, online learning helps to eliminate borders and barriers, both social and physical. Online courses are a great solution to the challenges that these people face as they are provided with high-quality education and on their own place and time.

There was this article 'Use these two words on your college essay to get into Harvard'. If this would work Harvard or Stanford wouldn't be what they are. On the other hand, it may happen to anyone to not get accepted into his or her favorite university. Therefore, they give up the dream to pursue a given field of studies and research. Meanwhile, online courses allow you to study whatever you want or anything that triggers your curiosity. Prestigious universities provide free courses because education must be free to everyone.

It happens to young students to find themselves into a highly competitive learning environment. Some people like this as it motivates them to work hard but there are others that feel overwhelmed. No matter the fact that failure is essential to success, there are persons that can't bear failure among others. Meanwhile, it is easier to accept it at home. This makes people feel comfortable. Speaking of comfort, online courses help to avoid long classes and uncomfortable classrooms. The bed or the couch are more comfortable.
Further on, you can save time and cut the cost of commuting from home to the campus. Another thing that a lot of people agree is the fact that there will be no need to wake up early in the morning. Yet, keep in mind that in order to be successful it is important to leave your comforClasa- 12th science.

By-Laya Mourya

Class- 12th science

Sovereignty and Partition of India

On 15th August 1947 midnight, India's partition occurred separating two different nations for the Hindu and Muslims, namely Pakistan and India. British people left India and provided them with freedom and a right to be sovereign as a nation.

India's partitions were a massive event in India's history, as it leads to several riots, struggles, bloodbaths, and massacres. People had to leave their families, property forcefully, and they were also tortured. The root cause for partition was British people who damaged the relationship between the Indian National Congress and the Muslim League leaders leading to the partition

India's partition gives a lot of importance to all the Indians, especially among Hindus and Muslims. This event led to India's partition and resulted in creating two different sovereign states: India and Pakistan. The British Empire ruled India before the partition. All the people irrespective of their religions lived together.

The partition of India took place in August 1947. The reason for the partition and the conflict among Hindu and Muslims started from the year 1900 when the Indian National Congress refused to represent the Indian Muslim's demands and rights.

By -Akshat farkya

Class-12th science

Education for school students

Education is an important tool which is very useful in everybody's life. Education is what differentiates us from other living beings on earth. It makes man the smartest creature on earth. It empowers humans and gets them ready to face challenges of life efficiently. With that being said, education still remains a luxury and not a necessity in our country. Educational awareness needs to be spread through the country to make education accessible. But, this remains incomplete without first analyzing the importance of education. Only when the people realize what significance it holds, can they consider it a necessity for a good life. In this essay on Education, we will see the importance of education and how it is a doorway to success.

Importance of Education

Education is the most significant tool in eliminating poverty and unemployment. Moreover, it enhances the commercial scenario and benefits the country overall. So, the higher the level of education in a country, the better the chances of development are.

In addition, this education also benefits an individual in various ways. It helps a person take a better and informed decision with the use of their knowledge. This increases the success rate of a person in life.

Subsequently, education is also responsible for providing with an enhanced lifestyle. It gives you career opportunities that can increase your quality of life.

Similarly, education also helps in making a person independent. When one is educated enough, they won't have to depend on anyone else for their livelihood. They will be self-sufficient to earn for themselves and lead a good life.

By-Garima Sharma
-12 commerce

Education in the covid-19 times

- **Harshita Telkar (12 science)**

Although, human race suffered a lot and still suffering form the deadly viral disease ," COVID-19 But students are the major sufferers in this period . For the sake of students and as a medium of education is introduced throughout the country though online education is just an option not the alternative of the offline one hence students have to compromise the basic facilities that are available only in schools so the graph of education goes down !

However schools and teachers are trying their best but the live experience can't be taken online and what about the practical knowledge of subjects like physics, chemistry and biology. Now, in the present times conditions of students is "out of the frying pan and Into the fire"!

Additional, the higher a part of the Governments across the globe have quickly closed academic establishments making an attempt to comprise the unfold of the COVID-19 pandemic. In India as effectively, the federal government as a facet of the nationwide lockdown has closed each academic institution, as a

consequence of which, learners going from school-going kids to postgraduate college students, are affected.

However, Covid-19 has prompted specialists to rethink the traditional mode of training. Digital training seems to be a viable reply for make up for within the shortfall for classroom training for a interval of three to 4 months whereas limiting the probabilities of any an infection to college students until courses resume. Extra considerably, it has additionally introduced the hitherto peripheral problem of digital training in India to the middle stage. Thinking of a better future ahead is now need of the hour!

SCIENCE FICTION & TECHNOLOGY

- KAMAL PARIHAR (12 SCIENCE)

"Today science fiction is the most important

artistic genre,

It shapes the understanding of the public on things like artificial intelligence and biotechnology, which are likely to change our lives and society more than anything else in the coming decades. Now a days , sci-fi movies & and sci-fi books are the major attractions of youth in the class of entertainment!

Science fiction is a genre of speculative fiction that contains imagined elements that don't exist in the real world. Science fiction spans a wide range of themes that often explore time travel, space travel, are set in the future, and deal with the consequences of technological and scientific advances

In most science fiction books and movies about artificial intelligence, the main plot revolves around the moment when the computer or the robot gains consciousness and starts having feelings .Sci-fi novels take readers on adventures from faraway galaxies to underwater worlds and everywhere in between, introducing them to otherworldly characters and technologies along the way. That's why this is the most fascinating genre in present times.

Dr. Bhimrao Ambedkar

Born on April 14th, 1891, Bhimrao Ramji Ambedkar was an Indian nationalist, jurist, Dalit leader and a Buddhist revivalist. But most importantly, he was the chief architect of the Indian constitution. Born into a poor family, he spent his entire life fighting social discrimination against the lower castes. He overcome numerous social and financial obstacles to become the first 'untouchable' to obtain a college degree. He went on to earn a degree in law, and then doctorates in economics, and political science.

Throughout his early life, Ambedkar was subjected to intense social discrimination; but his father who had received some formal education, encouraged all his children to go through school. He also gave them a thorough knowledge of the Indian classics. Though Ambedkar attended school, he faced segregation by the teachers as well as the upper caste students, he too like other untouchable children, was not allowed to touch the earthen jar containing water. If there was no peon to pour him a drink, he went thirsty.

As he entered college in Bombay, he became increasingly disturbed by the discrimination that he faced. Though,, excelling in academics, he was still treated as an 'untouchable' by most people. After completing his degree in economics and political science from the USA, he was recognised as a leading Indian scholar and was invited to chair the committee set up to draft the constitution of India. He

became independent India's first law minister and was conferred the Bharat Ratna posthumously in 1990. He relentlessly fought for the promotion of education and socio – economic upliftment of the depressed classes. He launched active movements against untouchability and started public protests to open and share public drinking water resources. He also began a struggle for the right to enter Hindu temples. He strongly believed that 'God helps those who help themselves' and being an 'untouchable' was no excuse for remaining a supressed and backward community. They had to improve their way of living through 'education, organisation and agitation'.

When drafting the constitution he drew his inspiration from the Buddhist scriptures which he had read extensively. Voting by ballots, rules of debate and the formation of committees were incorporated from these scriptures. Thus, Ambedkar drew up a constitution that was shaped upon western models but was Indian in spirit. In it he provided a number of clauses that would help eradicate socio-economic inequalities and lack of opportunities. He also sought to expound gender equality in laws of inheritance, marriage and equality

Ambedkar was a major influence in transforming the way India looks at socio-economic policies today. Regarded highly as a scholar, he passionately believed in the freedom of the individual. He was highly critical of any caste system and his conversion to Buddhism played a vital role in the revival of Buddhism in India and abroad. He remained an important member of the Rajya Sabha until his death on 6th December, 1956.

Anjali Rathore
12th science

Last modified: 22:58

Thoughts to life

Ups & downs in life do not have any trend
As some feeling deeper in hearts never end.....
From my birth people around me are same
With them till death I have to play life games.....
I don't actually have a big friend range
But still situations become strange ....because
There is a huge difference between
How do I feel &
How do they deal....
Day by day expectations are increasing
So time by time feelings are decreasing.....
I wonder!
Why do I find everything tough in my case
Why everything seems difficult to face
I think I m somewhere last in the race .....
From book of my life
Whenever I turn a page

My imaginations lead me into a cage.....

From birth till today

A lot of beautiful things ,I gain

Still there are things which give me pain....

My blood group is positive

But thoughts are negative.....

So to understand this simple thing , a long time I took

That my thoughts are more ugly then my look.....

- Shruti Sharma
12th 'science'

Importance of Education

Education forms the essence of all human actions in society. Education is a tool that extends the horizons of our knowledge with other economic, social, and emotional constraints. Society tends to behave depending upon the status of education and literacy of its people.

Societies that lack or are unable to provide Education to its people push them to unethical activities to feed and nourish their families. This leads to the deprived, malnourished fate of the individual as well as the society

- **Empowers Individual:** Education in the society leads to self-empowerment of an individual and keeps one aware of their surroundings as well as the laws and regulations in the society.
- **Removes Poverty:** Education is a valuable tool that helps in removing poverty in society. An educated person gains access to a good job that is required to fulfil the basic needs and removes the stains of poverty from the society.
- **Empowers Women:** An educated society empowers its women and abolishes old customs such as Child Marriage, Dowry System, Sati, etc. Educated women stand against injustices and help in the development of society as well as the natio

The importance of education in society helps people make the right decisions and helps them distinguish false promises. It helps society make the right choices that boost growth and Development.

By- Chinu Bairagi

Class- 12th science

Live Life, Don't Just Exist

To lead a life of adventure is certainly very exciting and amazing. It involves breaking free of certain social conditioning and challenging yourself to work upon your mental fears, which are mostly in your mind, and discovering unlimited freedom and opportunities. We, therefore, need to be willing to undertake adventure as it is a necessary part of happy existence. It is important to spend your limited time on earth doing some of those things that make a difference and give one enjoyment rather than simply sinking all the time playing the normal routine game of "delayed gratification".

Taking action helps one to build a more enriching life and enables you to embrace life with more passion each day. The desire for sameness never contributors to anything exciting but makes our life and spirit dull. A variety of sports and recreation are adventurous to a lot of people today. Some people race cars, skydivers jump out of a aeroplane, mountain-climbers scale peaks etc you can do anything which is adventure to you it is not necessary that you do this things. This helps them to escape their daily stress and gives them a 'high'. So it is important to live life to the fullest and it is also surely worth making the effort to 'live' with an adventurous spirit.

By- Lovelesh Rathore

Class- 12th science

ARTIFICIAL INTELLIGENCE

AI generally is undertaken in conjunction with machine learning and data analytics. Machine learning takes data and looks for underlying trends. If it spots something that is relevant for a practical problem, software designers can take that knowledge and use it to analyze specific issues. All that is required are data that are sufficiently robust that algorithms can discern useful patterns. Data can come in the form of digital information, satellite imagery, visual information, text, or unstructured data.

Adaptability

AI systems have the ability to learn and adapt as they make decisions. In the transportation area, for example, semi-autonomous vehicles have tools that let drivers and vehicles know about upcoming congestion, potholes, highway construction, or other possible traffic impediments. Vehicles can take advantage of the experience of other vehicles on the road, without human involvement, and the entire corpus of their achieved "experience" is immediately and fully transferable to other similarly configured vehicles. Their advanced algorithms, sensors, and cameras incorporate experience in current operations, and use dashboards and visual displays to present information in real time so human drivers are able to make sense of ongoing traffic and vehicular conditions. And in the case of fully autonomous vehicles, advanced systems can completely control the car or truck, and make all the navigational decisions.

By - ***Jalaj Dubey***
12th Science

CHILD LABOUR

Poverty and unemployment in developing nations are the leading cause of child labour. As per the statistics of the U.N. of 2005, more than 1/4th of people globally are existing in extreme poverty. Deficiency of admittance to proper education in many nations. In 2006, it was found that about 75 million children were far from school life. Breaking laws about child labour give way to prolonged essay child labour in any developing nation. Poor social control provides rise to child labour in agriculture or household work.

Limited rights for children and labors affect labour's living standards to a high degree, which is also a significant issue. Many children start working to improve the income of their family so that they can manage at least two times of food. They are appointed by the companies to make more production at reduced labour cost.

Child labour is a huge social obstacle that requires to be resolved on an instant basis with the help of both, people (particularly parents and teachers) and government. Children are very small however they lead a flourishing future of any developing country. So, they are the big responsibility of all the adult citizens and should not be used in negative ways. They should get a proper chance to evolve and grow within the happy atmosphere of family and school. They should not be restricted by the parents only to secure the economical scale of the family and by the companies to get labour at a low cost.

By-Himanshu sopra

Class 12th science

Lack of Civic Sense

In the society, people of different types and different opinions live. They do not think for the betterment of the society. They only think about themselves. They have become selfish and narrow in their thought. In India, people hardly follow any rules. They have no respect for public property. On railway platform, they do not follow any instructions. They spit anywhere or at any place. They do not care for what they are doing. They even throw away the polythenes, water bottle etc. on the platform. They lack civic sense. Inculcating a civic sense is the need of hour. Parents must inculcate civic sense among children at an early age. The values of cleanliness, discipline and tolerance must be inculcated among them. Parents must encourage their children to keep their surroundings clean. All these things must be taught at an early age. They are the future of the nation and they must take the responsibility of a responsible citizen.

Sourabh Chouhan

12th Science

Save Water-Are we doing enough?

By Abhay

'Water -the elixir of life'. When people have ample facilities, they don't care but when they are short of it then only, they realise how important it is to them. As water scarcity is all around in the metro cities, the situation is alarming. The man's body is 70% water. Water is probably the most important resource on earth. Water is essential for life, i.e., plant life, animal life as well as human life. It is also needed for many human activities, such as cooking and washing.

What would the future be without water? Are we doing enough to save it? Perhaps not. Human callousness towards the misuse of water is taking him to a dungeon of its scarcity. The acute shortage of water is going to affect adversely on all. People throw garbage in the Yamuna. Water pollution is on the rise. The day is not so far away when it will prove right, 'Water water everywhere, not a drop to drink'.

Information Technology

By HARSH JAIN

Science has made our lives more comfortable. Modem technology has contributed towards the progress of society. Gone are the days of rubber and pencil, nib and pen. Children need not strain their heads for memorising dirty maths tables or go on cramming formulae or facts. In short the memory of students need not be overloaded. Science has done wonders for us. Today we have access to knowledge contained in books in any language, experiments or research going on in various countries. Newspapers, magazines and periodicals are becoming obsolete. Information technology has been revolutionised with the invention of computers. It has opened a new window on the world. Computer based information technology has increased efficiency and human capacity to work. One person can do the work of fifty persons and that too more efficiently and precisely. Computer technology may be used for storing, transferring and improving knowledge. The inter-linking of computers through worldwide network like Internet provides instantaneous knowledge and service. Electronic mail (E-mail) and electronic commerce (E-commerce) have come in vogue. Computer has indeed opened new vistas for humanity. The future of information technology is bright.

LIFE

Life is beautiful but not always easy, it has problems too, and the challenge lies in facing them with courage, letting the beauty of life act like a balm, which makes the pain bearable, during trying times, by providing hope.

Happiness, sorrow, victory, defeat, day-night are the two sides of the me coin. Similarly life is full of moments of joy, pleasure, success and comfort punctuated by misery, defeat, failures and problems. There is no human being on Earth, strong, powerful, wise or rich, who has not experienced, struggle, suffering or failure.

No doubt, life is beautiful and every moment – a celebration of being alive, but one should be always ready to face adversity and challenges. A person who has not encountered difficulties in life can never achieve success.

Life has not been a bed of roses for them. The adage 'Uneasy lays the head that wears the crown' has been rightly used for people, who are successful and are enjoying power and authority.

To sum up, life is beautiful just as roses but it has challenges which are like thorns and have to be faced and overcome by all. Those, who accept these, challenges and succeed, are the ones, who know how to live life in its true sense. Thus, enjoy life but also be prepared to bear the pricks of pain.

– Sakshi Tepan
(12th Sci)

Science and technology

Science and technology are important parts of our day to day life. We get up in the morning from the ringing of our alarm clocks and go to bed at night after switching our lights off. All these luxuries that we are able to afford are a resultant of science and technology. Most importantly, how we can do all this in a short time are because of the advancement of science and technology only. It is hard to imagine our life now without science and technology. Indeed our existence itself depends on it now. Every day new technologies are coming up which are making human life easier and more comfortable. Thus, we live in an era of science and technology.

Essentially, Science and Technology have introduced us to the establishment of modern civilization. This development contributes greatly to almost every aspect of our daily life. Hence, people get the chance to enjoy these results, which make our lives more relaxed and pleasurable.

Benefit of science and technology

If we think about it, there are numerous benefits of science and technology. They range from the little things to the big ones. For instance, the morning paper which we read that delivers us reliable information is a result of scientific progress. In addition, the electrical devices without which life is hard to imagine like a refrigerator, AC, microwave and more are a result of technological advancement.

BY:PUSHPENDRA SINGH
DEORA

Don't Give Up

If you keep on going,
And never stop.
You can make it to the top.
Life is full of mountains,
Dome are bug and some are small.
But if you don't give up,
You can overcome them all.
So keep on going,
You can make it to the top.

-Tikam Sharma
-XII Sci

Because I could not stop for Death

Because I could not stop for Death –
He kindly stopped for me –
The Carriage held but just Ourselves –
And Immortality.

We slowly drove – He knew no haste
And I had put away
My labor and my leisure too,
For His Civility –

We passed the School, where Children strove
At Recess – in the Ring –
We passed the Fields of Gazing Grain –
We passed the Setting Sun –

Or rather – He passed Us –
The Dews drew quivering and Chill –
For only Gossamer, my Gown –
My Tippet – only Tulle –

We paused before a House that seemed
A Swelling of the Ground –
The Roof was scarcely visible –
The Cornice – in the Ground –

Since then – 'tis Centuries – and yet
Feels shorter than the Day
I first surmised the Horses' Heads
Were toward Eternity –

By- Simran Bhati
12th sci

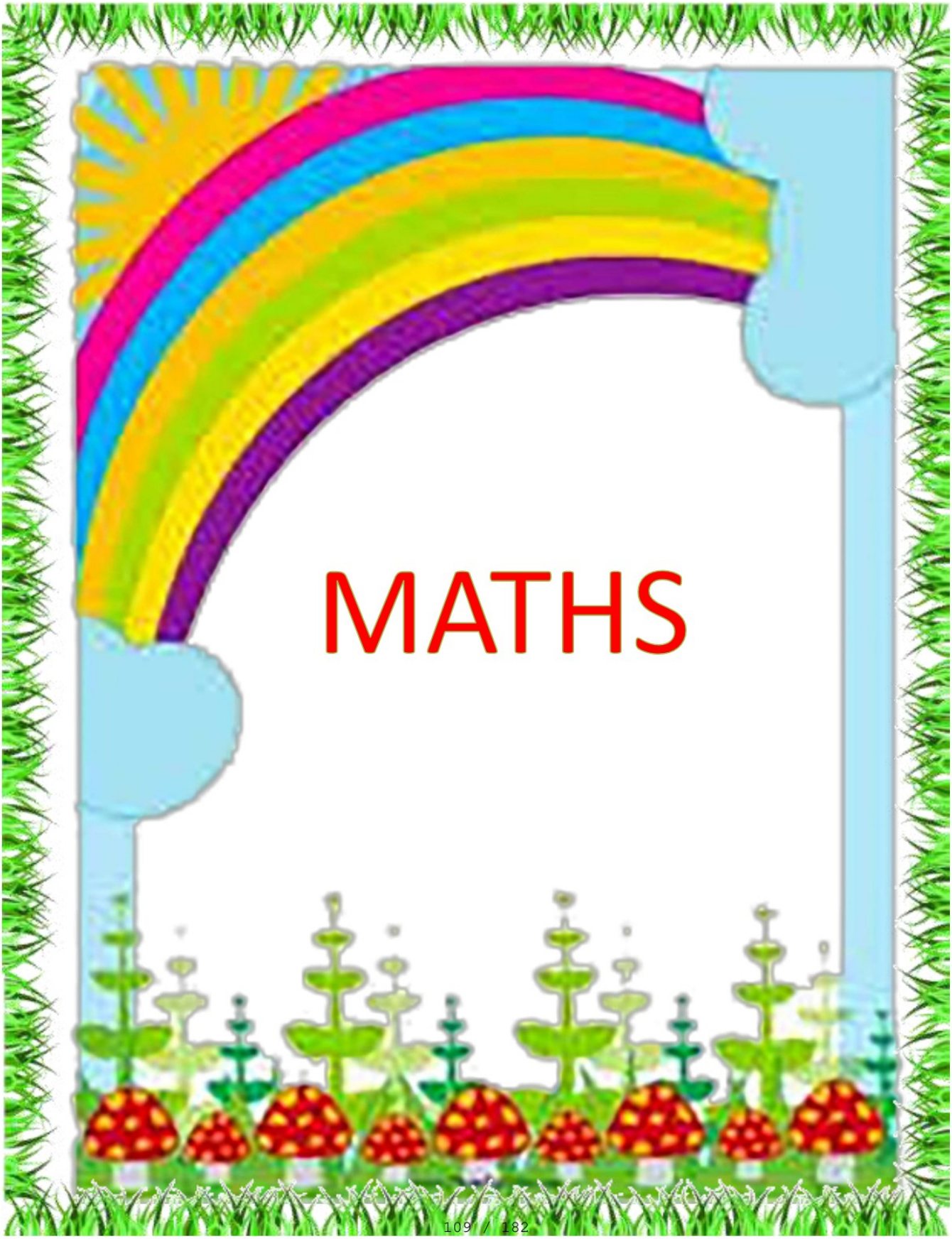
MATHS

MAGICAL PATTERNS OF NUMBERS

By : SUYASH JAIN (10th'B')

(1)

1 X 1 = 1

11X11=121

111X11 = 12321
1111X1111 = 1234321
11111X11111=123454321
111111 X 1111 =12345654321

(2) $1^2 = 1$
$2^2 = 1+3$
$3^2 = 1+3+5$
$4^2=1+3+5+7$
$5^2=1+3+5+7+9$
$6^2=1+3+5+7+9+11$
$7^2= 1+3+5+7+9+11+13$

(3)

(Magical numeral 142857)

142857 X 1 = 142857

142857 X 2 = 285714

142857 X 3 = 571428

142857 X 4 = 714285

142857 X 5 = 714285

142857 X 6 =857142

(Result of multiplication is cyclic)

(4)

12345679 X 9 = 111 111 111

12345679 X 18 = 222 222 222

12345679 X 27 = 333 333 333

12345679 X 36 = 444 444 444

12345679 X 45 = 555 555 555

12345679 X 54 = 666 666 666

12345679 X 63 = 777 777 777

12345679 X 72 = 888 888 888

12345679 X 81 = 999 999 999

(5)

9 X 9+7=88

9 X 98+6=888

9 X 987+5=8888

9 X 9876+4= 88888

9 X 98765+3=888888

9 X 987654+2=8888888

9 X 9976543+1=88888888

9 X 98765432+0=888888888

(6)

0 X 9 +1=1

1 X 9+2=11

12 X 9+3=111

123 X 9+4=1111

1234 X 9+5=11111

(7)

111÷(1+1+1)=37

222÷(2+2+2)=37

333÷(3+3+3)=37

444÷(4+4+4)=37

.

.

.

999÷(9+9+9)=37

संस्कृतम्

सम्पादक

मेघराज मीना

प्रशिक्षित स्नातक

शिक्षक (संस्कृत)

प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत् ॥

हिंदी अर्थ : सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी को शुभ दर्शन हों और कोई दु:ख से ग्रसित न हो|

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी ।

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

भावार्थ :

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार, वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम ।अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करती हूँ , मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें ।

एलिस शर्मा

कक्षा 8 ब

संस्कृत सूक्तयः (सूक्तियां)

1.सत्यं वद धर्मं चर

संस्कृत अर्थ- त्वं सर्वदा अपि सत्यवचनानि एव वद, सर्वदा एव धर्मानुसारम् आचरणं कुरु।

हिंदी अर्थ- तुम हमेशा सत्य वचन ही बोलो, हमेशा धर्म के अनुसार ही आचरण करों ।

2. वद वाक्यं शुभं सदा

संस्कृत अर्थ-त्वं सर्वदा एव शुभकरं प्रीतिकरं कर्ण प्रियं च वाक्यं वद

हिंदी अर्थ- तुम हमेशा ही शुभ, प्रिय एवं श्रेष्ठ वाक्य बोलो ।

3. नहि सत्यात् परं धनम्

संस्कृत अर्थ- सर्वश्रेष्ठ धनम् सत्यम् एव अस्ति, अस्मिन् संसारे सत्यात् श्रेष्ठं धनं किमपि नास्ति।

हिंदी अर्थ- सर्वप्रथम धन सत्य ही हैं । इस संसार में सत्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं हैं. अतः हमें हमेशा सत्य का ही पालन करना चाहिए ।

एन्जेल भाटिया

कक्षा 8 अ

संस्कृत सूक्तयः

1. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः

संस्कृत अर्थ- यद्वचनं हितकरम् अस्ति कर्णप्रियं चापि अस्ति । तादृशं वचनं एकत्र न मिलति । अर्थात यद्वचं हितकर भवति प्रायः तद्वचं मनः प्रियं न भवति । अतः हितकर वचनं सर्वदापि ग्राह्यम् अस्ति । तत्र मनोहरस्य अपेक्षा न करणीया ।

हिंदी अर्थ- जो वचन हितकारी हैं और कानों को सुनने में प्रिय भी है । वैसा वचन अर्थात जिसमें दोनों ही गुण हो मिलना कठिन हैं । क्योंकि प्रायः जो वचन हितकारी होता हैं वह वचन मन को प्रिय लगने वाला नहीं होता हैं । तथा मन को प्रिय लगने वाला वचन ही हमेशा हितकारी नहीं होता हैं । इसलिए हितकारी वचन ही हमेशा ग्रहण करना चाहिए, मन को प्रिय लगे ऐसी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

2. कीर्तिः यस्य सः जीवति

संस्कृत अर्थ- यः मनुष्यः उत्तमानि कार्याणि कृत्वा यशः अर्जयति तस्य एव जीवनम् सार्थकम् अस्ति । यस्य यशः नास्ति तथ्य जीवनम् मृत्युसमः एव अस्ति । अतः सत्कार्याणि कुर्वन्तः वयं यशः अर्जेयम।

हिंदी अर्थ- जो मनुष्य श्रेष्ठ कार्यों को करके यश कमाता हैं उसी का जीवन सार्थक हैं । जिसका यश नहीं हैं, उसका जीवन मृत्यु के समान ही हैं । इसलिए हमें सत्कार्य करते हुए यश को ही अर्जित करना चाहिए ।

भूमिका भट्ट 8 ब

संस्कृत के प्रेरणादायक श्लोक

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

अर्थ – व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन आलस्य होता है। व्यक्ति का परिश्रम ही उसका सच्चा मित्र होता है। क्योंकि जब भी मनुष्य परिश्रम करता है तो वह दुखी नहीं होता है और हमेशा खुश ही रहता है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थ – व्यक्ति के मेहनत करने से ही उसके काम पूरे होते हैं। सिर्फ इच्छा करने से उसके काम पूरे नहीं होते। जैसे सोये हुए शेर के मुंह में हिरण स्वयं नहीं आता, उसके लिए शेर को परिश्रम करना पड़ता है।

अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यम निष्ठुरं वचनम।

पश्चातापश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च।।

अर्थ – अपमान करके देना, मुंह फेर कर देना, देरी से देना, कठोर वचन बोलकर देना और देने के बाद पछ्चाताप होना। ये सभी 5 क्रियाएं दान को दूषित कर देती है।

मनस्वी पाण्डेय

8 ब

संस्कृत के प्रेरणादायक श्लोक

वाणी रसवती यस्य,यस्य श्रमवती क्रिया।

लक्ष्मी: दानवती यस्य,सफलं तस्य जीवितं।।

अर्थ – जिस मनुष्य की वाणी मीठी हो, जिसका काम परिश्रम से भरा हो, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त हो, उसका जीवन सफ़ल है।

यस्तु संचरते देशान् यस्तु सेवेत पण्डितान्।

तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भसि।।

अर्थ – जो व्यक्ति भिन्न-भिन्न देशों में यात्रा करता है और विद्वानों से सम्बन्ध रखता है। उस व्यक्ति की बुध्दि उसी तरह होती है जैसे तेल की एक बूंद पूरे पानी में फैलती है।

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते !

अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः !!

हिन्दी अर्थ :- जो बिन बुलाये ही किसी सभा/स्थान पर पहुँच जाता है और बिना पूछे ही बोलता रहता है तथा विश्वास न करने योग्य लोगों पर भी विश्वास कर लेता है, वह मूर्ख है।

मुस्कान परिहार

8 ब

जय जयतु सुरवाणि

जय जयतु सुरवाणि ॥

वेदमन्त्रसामर्थ्यवर्धिनि भारतरामायणविहारिणि ।
साङ्ख्ययोगवेदान्तबोधिनि ज्ञानामृतनिर्झरिणि ॥ १॥

मन्त्ररूपिणि सूत्ररूपिणि शास्त्ररूपिणि भाष्यरूपिणि ।
काव्यकलासङ्गीतरूपिणि विपदहृदयमोहिनि ॥ २॥

त्वं सरस्वति काव्यरूपिणि नानाविध गुणगणोद्भासिनि ।
शब्दार्थलङ्कारशोभिणि रसालन्ददायिनि ॥ ३॥

विविध गिराम भारतेऽसि जननि सुपरिपोषिणि बलविवर्धिनि ।
एकात्मकता समाधायिनि सङ्घटनाकारिणि ॥ ४॥

आची पाटीदार कक्षा 7 ब

अनुशासनम्

मा कुरु दर्पं, मा कुरु गर्वं मा भज मानी, मानय सर्वम् ।

मा भज दैन्यं, मा भज शोकं मुदितमना भव, मोदय लोकम् ॥ १॥

मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थं

न चल कुमार्गे, न कुरु अनर्थम् ।

पाहि अनाथं, पालय दीनं

लालय जननी-जनक-विहीनम् ॥ २॥

तनयं पाठय, तनयां पाठय शिक्षय सुगुणं, कुगुणं वारय ।

कुरु उपकारं, कुरु उद्धारं अपनय भारं, त्यज अपकारम् ॥ ३॥

मा पिब मादकवस्तु अपेयं

मा भज दुर्व्यसनं परिहेयम् ।

मा नय क्षणमपि व्यर्थं समयं

कुरु सकलं निजकार्यं सभयम् ॥ ४॥

आदर्श कुमार अंशु कक्षा 7 अ

संस्कृत प्रहेलिका:

संस्कृत प्रहेलिका 1

नान्न फलं वा खादामि न पिबामि जलं किंचित

चलामि दिवसे रात्रौ, समय बोध्यामि च |

उत्तरम्- घटी

संस्कृत प्रहेलिका 2

मुखं कृष्ण वायुः क्षीणः मंजूषाया च संस्कृतम

घर्षण में दहयत्याशु रसवत्यां वसामह्यम ।

उत्तरम्- अग्निपेटिका

संस्कृत प्रहेलिका 3

एकचक्षुरन काकोऽयं बिलमिच्छं पन्नग:

क्षीयते वर्धते चैव, न समुद्रों न चन्द्रमा ।

उत्तरम्- सूचिका

संस्कृत प्रहेलिका 4

सुतोऽपि नेत्रे न निमीलयामि जलस्य मध्ये निवसामि नित्यम्

स्वजातिजीमा मम भोजनानि, वदन्तु मान्यः मम नामधेयम ।

उत्तरम्- मत्स्यः

विदित कंठाली 8 ब

तृषितः काकः कथा

चतुरः काकः एकः काकः अस्ति । सः बहु तृषितः । सः जलार्थं भ्रमति । तदा ग्रीष्मकालः । कुत्रापि जलं नास्ति । काकः कष्टेन बहुदूरं गच्छति । तत्र सः एकं घटं पश्यति । काकस्य अतीव सन्तोषः भवति । किन्तु घटे स्वल्पम् एव जलम् अस्ति । 'जलं कथं पिबामि ?' इति काकः चिन्तयति । सः एकम् उपायं करोति । शिलाखण्डान् आनयति । घटे पूरयति । जलम् उपरि आगच्छति । काकः सन्तोषेण जलं पिबति । ततः गच्छति ।

साहित्य विजय

कक्षा 6 ब

भगवद्गीता के महत्वपूर्ण श्लोक

नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥ (अध्याय 2 श्लोक 23)

अर्थ:- अर्थार्थ आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती है। न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है।

भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, डर मत, अपना कर्म कर आत्मा शरीर एक माध्यम है आत्मा अज़र अमर है इसे कोई नहीं मार सकता अपना कर्म कर, और मरने मारने का डर छोड़ ।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।16.21।। (अध्याय 16 श्लोक 21)

काम क्रोध और लोभ-ये तीन प्रकारके नरक के दरवाजे जीवात्मा का पतन करनेवाले हैं| इसलिये मनुष्य को शांति पूर्वक जीवन जीने के लिए इन तीनों का त्याग कर देना चाहिये।

श्रद्धावान्ल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥ (चतुर्थ अध्याय, श्लोक 39)

इस श्लोक का अर्थ है: श्रद्धा(faith) रखने वाले मनुष्य, अपनी इन्द्रियों (Senses) पर संयम रखने वाले मनुष्य, अपनी तत्परता से ज्ञान प्राप्त कते हैं, ज्ञान मिल जाने पर जल्द ही परम -शान्ति को प्राप्त कर लेते हैं|

करन देवड़ा 7अ

स्वामी विवेकानंद

आधुनिकभारतस्य निर्माणकर्तृषु युगपुरुषस्य विवेकानन्दस्य नाम सर्वोपरि अस्ति। सः न केवलं भारते अपितु सम्पूर्णविश्वे आध्यात्मलोकं विकीर्णयति स्म। तस्य महापुरुषस्य जन्म 1863 तमे वर्षे अभवत्। विश्वनाथदत्तः तस्य पिता आसीत्। बाल्यकाले विवेकानन्दस्य नाम नरेंद्रनाथः आसीत्। बाल्यकालादेव सः अति मेधावी आसीत्। आध्यात्मविषये तस्य महती रुचिः आसीत्।

नरेन्द्रः यदा स्नातकोंऽभवत् तदा तस्य पिता परलोकम् अगच्छत्। एकदा एकस्यां सभायां सः रामकृष्णपरमहंसमहोदयस्य स्पर्शमधिगत्य समाधिस्थोऽभवत्। तस्यैव गुरोः स्पर्शेन च तस्य समाधिः समाप्तोऽभवत्। तस्मात् क्षणादेव नरेन्द्रः तं स्वगुरुम् अमन्यत तपः च आरभत।

1893 तमे वर्षे अमरीकादेशे 'शिकागो' नामनगरे विश्वधर्मसम्मेलनमभवत्। तस्मिन् सम्मेलन सः भारतस्य प्रतिनिधित्वम् अकरोत्। तस्मादेव कालात् तस्य कीर्तिः सर्वत्र प्रासरत्। अनेके जनाः तस्य भक्ताः अभवन्। विवेकानन्दः लोकसेवायाः उद्देश्यं 'रामकृष्णमिशन' संस्थापयत्। 4 जुलाई 1902 तमे वर्षे अयं दिव्यपुरुषः पंचतत्वं गतः।

सौम्य शर्मा कक्षा 7 ब

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी एकः महापुरुषः आसीत्। सः भारताय अजीवत्। भारताय एव च प्राणान् अत्यजत्। अस्य पूर्णं नाम मोहनदास कर्मचंद गांधी अस्ति। अस्य जन्म १८६९ तमे ख्रिस्ताब्दे अक्टूबर - मासस्य द्वितीयायां तिथौ पोरबंदर नाम्नि स्थाने अभवत्। तस्य पितुः नाम कर्मचंद गांधी मातुश्च पुतलीबाई आसीत्। तस्य पत्नी कस्तूरबा धार्मिका पतिव्रतानारी आसीत्।

बाल्यकालादेव एकः सरलः बालकः आसीत्। सः सदा सत्यम् वदति स्म। सः आचार्याणां प्रियः आसीत्। उच्चशिक्षायैः सः आंग्लदेशमगच्छत। स विदेशगमनसमये मातुः आज्ञया सः संकल्पितवान् यत् अहम् मद्यं न सेविष्ये, मांसस्पर्शमपि न करिष्यामि एवं सदा ब्रह्मचर्यं आचरिष्यामि। स्वदेशमागत्य सः देशस्य सेवायाम् संलग्नः अभवत्। अस्य ईश्वरे दृढः विश्वासः आसीत्। सः आंग्लशासकानां विरोधे सत्याग्रहांदोलनम् प्रावर्तयत। तस्य श्रद्धा अहिंसायाम् आसीत्। तस्य सर्वः समयाः, सर्वः शक्तिः, सर्वः धनम् च देशाय एवासीत्।

शीतल पाटीदार कक्षा 6 ब

वनस्य महत्वम्

भारतदेशः वनानां दृष्ट्या समृद्धः वर्तते। देशस्य सकलक्षेत्रफलस्य 25 प्रतिशतानि क्षेत्राणि वनाच्छादितानि सन्ति। वनम् अस्माकं महान् निधिः अस्ति। न केवलं वनानां रमणीयता मनांसि रंजयति, अपितु अनेन पर्यावरणमपि सुरक्षितं भवति। ये घटकाः पारिस्थितिकितंत्रं प्रभावयन्ति, तेषु घटकेषु वनं सर्वप्रमुखमस्ति। वस्तुतः वनं वसुन्धरायाः सुरक्षावलयमस्ति। वृष्टे मुख्यं कारणं वनमेव अस्ति। इदं शुद्धं वायुं प्रददाति। मृत्तिकायाः अपर्दनं न्यूनीकरोति। जगतः तापमानस्य नियन्त्रणं करोति। अतएव वनसंरक्षणम् अत्यावश्यकमस्ति।

विविधाभिः वनसम्पद्भिः सम्पन्नानि वनानि देशे विद्यन्ते। विधिकप्रबन्धदृष्ट्या वनानि त्रिवर्गेषु विभक्तानि - आरक्षितं वनं, संरक्षितं वनम् अवर्गीकृतं वनं च।

आरक्षितं वनम् - आरक्षितवनस्य प्रबन्धनं सुव्यवस्थितं भवति। अस्य सुरक्षायाः विकासस्य च निश्चिताः योजनाः भवन्ति। राष्ट्रियोद्यानम् अभ्यारण्यं च आरक्षितं वनम् एव स्तः।

संरक्षितं वनम् - संरक्षितवने संरक्षणेन सह उत्पादनाय गतिविधयः क्रियान्विताः भवन्ति। वनविभागः योजनानुसारं वैज्ञानिकविधिना वनोत्पादं प्राप्नोति। अत्र उत्पादनेन सह वनसंरक्षणं प्रथमं लक्ष्यमस्ति ।

अवर्गीकृतं वनम् - वनभूमेः व्यवस्थापनसमये यस्य वनक्षेत्रस्य वर्गीकरणं नाभवत् तदेव अवर्गीकृतवनम्। अत्र सर्वकारेण नास्ति कोऽपि प्रतिबन्धः। अस्मिन् वनक्षेत्रे जनार्थं काष्ठसंग्रहणस्य पशुचारणस्य च स्वतन्त्रता अस्ति ।

उपलब्धासु वनस्पतिषु ओषधिपादपाः प्रचुरमात्रायाम् उपलभ्यन्ते। प्रदेशस्य बहवः उद्योगाः वनोत्पादने एव अवलम्बिताः, यथा काष्ठं, कर्गदं, हरीतकी, वंशं, खदिरः च। वनानि एतानि जनेभ्यः आजीविकायाः साधनानि सन्ति ।

वन्यजीवानां बहुलता विविधता च देशस्य गौरवम्। एतेषाम् उपलब्धता तत्क्षेत्रे वनानां सुस्थितिः द्योतते। एतेषु वन्यजीवेषु प्रमुखतः व्याघ्रः, तरक्षुः, वनमहिषः, हरिणः, साम्भरः, गौरः, वनवराहः, भल्लूकः, पर्वतसारिका, नीलगौः चिंकारादयः चेति। वनमहिषः राजकीयपशुः पर्वतसारिका राजकीयपक्षी च घोषितौ। वन्यजीवानां रक्षणार्थमपि वनसंरक्षणं आवश्यकम्।

नूनं वनं जीवानाम् आश्रयस्थलमस्ति। तस्मात् कारणात् देशे राष्ट्रियोद्यानानि अभयारण्यानि च संस्थापितानि सन्ति।

अग्रिमा मिश्रा कक्षा 6 अ

!!!---: कल्पना चावला :---!!!

देवभूमिरियं भारत वसुन्धरा सर्वदा देवैः पूजिता अभिनन्दिता च । इयं यथा शूराणां देशभक्तानाम् महात्मनां चापि जनन्यस्ति तथैव भूमिरियं--वैज्ञानिकानामपि जनयित्री अस्ति । ये भारते जन्म लब्ध्वा स्वकर्मणा कीर्त्या च भारत भूमिमलमकुर्वन् । अस्यामेव शृंखलायामन्तरिक्ष वैज्ञानिक विशिष्टा गवेषिका कल्पना चावला प्रमुखं स्थानं लभते ।

भारतस्य हर्याणा-प्रान्ते करनाल नामाख्ये नगरे कल्पना चावलायाः जन्म अभवत् । बाल्यकाले पठने अस्याः विशेषरुचिरासीत् । 1976 ख्रिस्ताब्दे करनाल नगरस्य टैगोर-महाविद्यालयात् अनया स्नातक-परीक्षा समुत्तीर्णा ।

अध्ययने अस्याः रुचिमवलोक्य शिक्षकाः इमां प्राशंसन् । पंजाबीयाभियान्त्रिकी महाविद्यालयात् 1982 ई. वर्षे एरोनाटिकल अभियान्त्रिकी क्षेत्रे स्नातकोपाधिः अनया समुपलब्धः । 1984 ख्रिस्तीयः वर्षे कल्पना चावला टेक्सास विश्वविद्यालयात् एरोस्पेस अभियान्त्रिकी क्षेत्रे अधिस्नातक (मास्टर ऑफ साइंस) उपाधिः सम्प्राप्तः ।

कोलोरेडो विश्वविद्यालयात् 1988 ई. वर्षे एस्पेस अभियान्त्रिकी विषये विद्यावारिधि (पीएच.डी.) इत्युपाधिं प्राप्तवती ।

कल्पना चावला तस्मिन्नेव वत्सरे अमेरिका राष्ट्रस्य अन्तरिक्ष-शोध विभागे (नासा) सम्मिलिता अभवत् । तत्र तया अनेके शोधाः विहिताः । 1993 ई. वर्षे कैलिफोर्निया-विश्वविद्यालयस्य ओवरशेडमेथरडस इति शोध परियोजनायाः नेतृत्वमकरोत् । अस्याः साहसं पूर्णानि कार्याणि अवलोक्य अमेरिकीयान्तरिक्षानुसंधान-विभागस्य (नासा) वैज्ञानिकाः प्रासीदन् । 1984

ख्रिस्ताब्द्यां दिसम्बर मासे-अमेरिकीयान्तरिक्ष-शोध-विभागे कल्पना चावला चयनिता जाता ।

यशः शरीरेण सा अद्यापि अस्माकं मध्ये उपस्थिता प्राणपणेन विश्वकल्याणाय अन्तरिक्षस्य रहस्य गवेषणाय अस्मान् सततं प्रेरयति । कल्पनां प्रसूय भारत-माता अखर्वगर्वम् अनुभवति ।

P.T.O———-

1995 ईस्वीये वर्षे मार्च मासे पञ्चदश सदस्यीयान्तरिक्ष यात्रिणां समूहे सा सम्मिलिता अभवत् । इतश्च नासा संस्थानम् एकवर्षीय प्रशिक्षणानन्तरं कल्पनायै एस्ट्रानाट ऑफिसी रोबोटिक्स संगणक शाखायां तकनिकीय विषयाणां दायित्वं अददात् ।

कल्पना चावला 1997 ख्रिस्तीय वर्षस्य नवम्बर मासस्य एकोनविंशतिः तारिका दिने कोलम्बिया नामाख्येन अन्तरिक्षयानेन षड्खगोलविद्भिः अमेरिका वास्तव्यैः सह अन्तरिक्षमगच्छत् । तत्रान्तरिक्षे विविधविषयकान् शोधान् कृत्वा सकुशलं ततः समायाता । इतश्च पुनरियं 2003 ख्रिस्तीय वर्षे जनवरी मासस्य 16 तारिकायां दिने अमेरिका-राष्ट्रस्य कोलम्बिया-नाम्ना अन्तरिक्षयानेन अनुसंधानकार्यं कर्तुं केपकेनरेवल-यान-प्रक्षेपण-केन्द्रात् पुनः अन्तरिक्षमगच्छत् ।

तत्रान्तरिक्षे षोडश दिनानि यावत् महत्त्वपूर्णानि शोधकार्याणि कृत्वा सहयोगिभिः सह पृथिवीं प्रत्यागच्छन्ती आसीत्, तदैव दैवदुर्विपाकेन प्रक्षेपण केन्द्रात् अन्तरिक्षयानस्य सम्पर्कः विछिन्नः अभूत् । फरवरीमासस्य प्रथमायां तारिकायां यानं दुर्घटनाग्रस्तं जातं तेन कारणेन सहयोगिभिः सार्धं कल्पना चावला पञ्चत्वं गता । अखिलं विश्वं दुर्घटनां इमां विज्ञाय शोके निमग्नमभूत् ।

यद्यपि कल्पना चावला पाञ्च-भौतिक-देहं विहाय स्वर्गमगच्छत् किञ्च तत्कार्याणि सर्वदैव अविस्मरणीयानि स्थास्यन्ति ।

देशना चौधरी कक्षा 6 अ

प्राथमिक विभाग

Funny questions

Q.1 What two things can you never eat for breakfast ?

Ans. Lunch and dinner

Q.2What word is spelled in correctly in every single dictionary ?

Ans. In correctly.

Q.3 What never asks a questions but gets answered all the time ?

Ans. Your cellphone.

Q.4 What goes up but never ever comes down ?

Ans. Your age.

Q.5 What two keys can not open any door ?

Ans. A monkey and a donkey.

Q.6 If I drink, I die.If I eat ,I'm fine.What am I ?

Ans. Fire.

Q.7 What can run but not walk ?

Ans. Rains drop.

Q.8 How many months have 28 days ?

Ans. All 12 months

Q.9 What gets sharper the more you use it ?

Ans.Your brain.

Q.10 I have teeth but can not eat ,What am I ?

Ans. A comb

Name -Dev Kumar Rathor

Class - 5th A

LIFE AFTER PANDEMIC

1. Earlier, I used to feel like studying in school, but now I can't think much of it.
2. Previously, school work used to be complete, but now school work gets a little delayed.
3. Earlier in school, we used to go to the open ground to play in the games period with friends which is not possible now.
4. Earlier, there was a daily schedule but now there is no schedule to be followed.
5. Earlier, on the way to school, we used to walk. It's not possible now.
6. Physical activity was a part of our life when we used to go to school. Physical activity is reduced after the pandemic situations.
7. After having dinner, we used to play with colony friends but now we cannot go.
8. Earlier there was a get together with all friends and family at different occasions and festivals but now all celebrations are at home.
9. We used to play outdoor games before pandemic, now we can only play indoor games.
10. Earlier parents used to refuse to run mobiles, now they do not because all the studies are done through the phone only.
11. Now days Friendships is only possible on video call and WhatsApp chats.

Before pandemic life was much more interesting, it is boring now. My mother and father say that the pandemic will go away soon and we will be able to live our lives like before. I hope that we will be able to go to the school back and have a good time with teachers and friends soon.

Geetali Porwal

Class 5th A

शीर्षक
विद्यालय न जाने की पीड़ा

① तू आया कोरोना क्यों
हमको आया रोना क्यों
भारत मे शिक्षा से होता वंचित, कोना-कोना क्यों
तू आया कोरोना ---------..

② स्कूल मेरा रूठ गया, सपना मेरा टूट गया
पढ़ने लिखने खातिर मेरा, आना जाना छूट गया
मेरे देश मे आया; ऐसा जादू टोना क्यों
तू आया कोरोना ----------

③ कलम हमारी बोल रही, खुद बस्ते को खोल रही
मैं कन्धे पर उसे टाँग कर, घर के भितर डोल रही
मेरी शाला के आँगन मे; सूना पड़ा खिलौना क्यों
तू आया कोरोना ----------..

④ खेल-खेल मे विद्या पाते, कभी-कभी कट्टी हो जाते
खाली टिफिन बोल रहा, क्यो न मुझमे खाना खाते
बार-बार किचिन मे जाकर; इन हाथो को धोना क्यों
तू आया कोरोना ----------.

⑤ ऑनलाईन ये शिक्षा आई, हम सब कैसे करे पढ़ाई
क्लास रूम को भूल रहे, इन बच्चो मे मायुसी छाई
नन्ही-नन्ही इन आँखो को, मोबाईल मे खोना क्यों
तू आया कोरोना क्यों
हमको आया रोना क्यों

नाम = रितुष कामरिया
कक्षा = V'A'

सूर्य को जल चढ़ाना अंधविश्वास या इसके पिछे विज्ञान

प्राचीन समय में हमारें धर्म ग्रंथों में सूर्य देव को जल चढ़ाने का महत्व बताया गया है।

ज्योतिष के आधार पर भी उदय होते सूर्य को जल चढ़ाने से मनुष्य की जन्म कुण्डली में सूर्य ग्रह बलवान होता है।

लेकिन आज के समय में इसे अंधविश्वास माना जाता है।

जबकि इसके पिछे वैज्ञानिक कारण भी है जो इस प्रकार है।

1. सूर्य को जल चढ़ाने से शरीर के ऊर्जा चक्र को सक्रिय करने में मदद मिलती है।
2. सूर्य की किरणें शरीर में मोजुद बेक्टीरिया को दुर निरोगी बनाने का कार्य करती है।
3. सूर्य को जल चढ़ाने से शरीर को विटमीन डी की पर्याप्त मात्रा मिलती है।
4. प्रातः काल सुर्य को जल चढ़ाने से सूर्य कि किरणें हमारे पुरे शरीर पर पडती है इससे हार्ट,त्वचा,आंखे,लिवर और दिमाग जैसे सभी अंग सक्रिय हो जाते है।
5. सुर्य को जल चढ़ाने के पिछे रंगो का विज्ञान छिपा है। मानव शरीर में रंगो का सन्तुलन बिगडने से कई प्रकार के रोग हो जाते है सूर्य को जल चढ़ाने से सूर्य के प्रकाश से हमारे शरीर में रंगो का सन्तुलन बना रहता है।
6. सूर्य को जल चढ़ाते समय आंखे खुली रखना चहीए और सूर्य से आती हुई सूर्य की किरणों को देखना चहिए जब सूर्य कि किरणे जल की धारा को पार कर हमारी आंखों में प्रवेश करती है तो आंखों को बहुत ज्यादा फायदा होता है।

नाम–प्रितेश शर्मा

कक्षा–5 वी (अ)

शीर्षक
विद्यालय न जाने की पीड़ा

① तू आया कोरोना क्यों
हमको आया रोना क्यों
भारत मे शिक्षा से होता वंचित, कोना-कोना क्यों
तू आया कोरोना ----------

② स्कूल मेरा रूठ गया, सपना मेरा टूट गया
पढ़ने लिखने खातिर मेरा, आना जाना छूट गया
मेरे देश मे आया; ऐसा जादू टोना क्यों
तू आया कोरोना ----------

③ कलम हमारी बोल रही, खुद बस्ते को खोल रही
मैं कन्धे पर उसे टाँग कर, घर के भितर डोल रही
मेरी शाला के आँगन मे; सूना पड़ा खिलौना क्यों
तू आया कोरोना ----------

④ खेल-खेल मे विद्या पाते, कभी-कभी कट्टी हो जाते
खाली टिफिन बोल रहा, क्यो न मुझमे खाना खाते
बार-बार किचिन मे जाकर; इन हाथो को धोना क्यों
तू आया कोरोना ----------

⑤ ऑनलाईन ये शिक्षा आई, हम सब कैसे करे पढ़ाई
क्लास रूम को भूल रहे, इन बच्चो मे मायुसी छाई
नन्ही-नन्ही इन आँखो को, मोबाईल मे खोना क्यों
तू आया कोरोना क्यों
हमको आया रोना क्यों

नाम = रितुप्रभा कामरिया
कक्षा = V 'A'

स्व पर गर्व

भूतपूर्व सोवियत संघ के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बोच्योव ने अपनी बायोग्राफी में लिखा है।

यूरोप में अध्ययन के दौरान उन के साथ कुछ जापानी भी पढते थे। 2nd वर्ल्ड वॉर के बाद जापान का पतन हो चुका था। आर्थिक प्रतिबंध थे। जब क्लास चल रही होती थी तो ये दो जापानी छात्र बारी बारी से लिखते थे क्योंकि एक लिखता था तो दूसरा पेंसिल छीलकर तैयार करता था क्योंकि जापानी पेंसिल उस समय तक अच्छी गुणवत्ता की नही थी इसलिए पेंसिल बार बार टूट जाती थी।

दूसरे छात्रों ने कहा तुम अच्छी पेंसिल (इंग्लैंड वाली /अमेरिका वाली) क्यों नहीं काम लेते इतनी महंगी भी नही।

जापानी छात्रों की आंखों में आंसू थे। जब हमारी चीज को हम ही नहीं खरीदेंगे तो दूसरा क्यो खरीदेगा । भले ही आज हम अच्छे नहीं फिर भी एक दिन ऐसी पेंसिल बनाएंगे की दुनिया उपयोग करेंगी।

स्व पर गर्व करना ही पड़ेगा तभी दुनिया तुम पर गर्व करेगी।

बिना उपयोग के कैसे अच्छे प्रोडक्ट बना लोगे ?

जहाँ उपयोग होता है वहीं रिसर्च व डेवलपमेंट की संभावनाएं ज्यादा होती है ।

काव्य चपरोत

5 A

हमारे शिक्षक

भगवान ने दी जिंदगी, माता-पिता ने दिया प्यार
लेकिन जिंदगी की राह पर चलना सिखाने के लिए
अपने गुरु की हूँ मैं शुक्रगुजार।

शिक्षक के बिन ये दुनिया क्या,
कुछ भी नहीं बस, अंधकार यहाँ!!
शत-शत नमन उन शिक्षकों को!!
जिनके कारण रोशन सारा जहाँ!!
सूरज की किरणें तेज दें आपको!!
खिलते हुए फूल खुशबू दें आपको,
हम जो भी देंगे वो भी कम होगा,
देने वाला जिंदगी की हर खुशी दे आपको,
हम आपके कर्जदार हैं।

नाम - अदिती सिसोदीया
कक्षा - चौथी (अ)

"हम स्कूल पढ़ने जाएंगे"

हम स्कूल पढ़ने जाएंगे।
पढ़ाई करके घर वापस आयेंगे॥
हमारा के.वी.एस. है सबसे न्यारा।
हमारा स्कूल है सबसे प्यारा॥
देश में है कोरोना महामारी।
पर ना इलाज नहीं है कोरोना बिमारी॥
कोरोना में भी चल रही है ऑनलॉइन पढ़ाई।
सारे चेप्टर अच्छे से पढ़ाई है शिक्षक सारे॥
हमको लगता है स्कूल प्यारा।
एक दिन भी शाला जाना नहीं है गवारा॥
स्कूल में पूरी पढ़ाई करेंगे।
पापा-मम्मी के सपने पूरे करेंगे॥

कनिष्का नागरिया
कक्षा - 4th 'A'
केन्द्रीय विद्यालय मन्दसौर

Name - Jhalak Jain
Class 4th A (सहायता करने का फल)

एक बार मैं अपनी मम्मी के साथ मंदिर जा रही थी मंदिर हमारे घर से थोड़ी दूरी पर था जिसमे एक बड़ी सड़क बीच में पड़ती थी जिसे हमेशा पार करके जाना पड़ता था। हर रोज की तरह मैं सुबह अपनी मम्मी के साथ मंदिर जा रही थी तो मैंने देखा कि एक बुजुर्ग महिला रोड़ पार करने की कोशिश कर रही थी परन्तु रोड पर बहुत सारे वाहन आ-जा रहे थे जिससे वह बुजुर्ग महिला रोड़ पार नहीं कर पा रही थी। तब मैं अपनी मम्मी के साथ उस बुजुर्ग महिला के पास जाकर उनका हाथ पकड़कर रोड पार करने मे मदद करी और आराम से रोड़ पार करके उस बुजुर्ग महिला ने मेरे सिर पर हाथ रखकर चली गई उसके बाद मे अपनी मम्मी के साथ मन्दिर चली गई।

अगले दिन जब मे अपने स्कुल जाने के लिए घर से बाहर निकली तब मैंने देखा कि बहुत जोर से बारिश हो रही है और उसी दिन मेरी स्कुल की परिक्षा का दिन था। मैं निराश होकर बैठ गई और सोचने लगी की मैं स्कुल कैसे जाऊगी तभी मैंने देखा कि अचानक मेरे घर के पास एक कार रुकी और उसमें से वही बुजुर्ग महिला ने कहा कि बेटी आप हमारे साथ चलो हम आपको स्कुल छोड़ देगे तभी मैंने देखा कि वह बुजुर्ग महिला हमारे घर के पास रहने वाली मेरी सहेली की नानी है उस बुजुर्ग महिला ने मेरी मम्मी को कहा कि हम आपकी बच्ची को स्कुल छोड़ देगे मेरी मम्मी ने मुझे उनके साथ जाने की आज्ञा दे दी और मैंने स्कुल पहुचकर अच्छे से अच्छा परीक्षा का पेपर देकर घर आ गई।

शिक्षा → हमेशा अच्छा और भला करने से भगवान हमारे साथ हमेशा अच्छा ही करता है

Date 10-12-20

नाम – भावना मलानिया
कक्षा – 1A
केन्द्रीय विद्यालय मन्दसौर

Day Thursday

एक चिड़िया ले उन्चे-चार !
घर से निकले परंव -पसारे !
पूर्व से पश्चिम को जाए !
उत्तर से दक्षिण को आए !
आके माँ को बात बताए !
देख लिया हमने जग सारा !
सबसे प्यारा देश हमारा !

Prabodh

समर्थ वर्मा - कक्षा - प्रथम क 'अ'

कविता
'माँ'

त्याग की मूर्ति, प्रेम की छाया
माँ के जैसा कोई नहीं पाया
ऋण है उसका जन्मों-जन्मों से
उऋण कोई भी हो नहीं पाया ।

करुणा की देवी, सुख की बरसा
पाकर जिसे हुए अभिभूत
शब्द नहीं वे बने अकथन
कहें जो उसका रूप स्वरूप ।

वात्सल्य रस से सराबोर वह
नित बहाती स्नेह की धारा
कोमल हृदया ममतामयी वह
है कुटुंब की पालनहारा ।

क्षमाशील वह स्वाभिमान तज
निज सुख पर हित देने वाली
पावन सरिता सी पुण्य सलिला
संतति का दुख हरने वाली ।

माँ ही जग का है आधार
माँ ही जीवन रेखा
देखा बहुतों को है किंतु
माँ सम रूप कहीं ना देखा ।

(संकलन - संजीता वर्मा 'वास')

कविता का शीर्षक

माँ

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशिया देती सारी माँ।

चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।

सबसे मीठा बोल है माँ,
दुनिया से अनमोल है माँ।

खाना हमें खिलाती है माँ,
लोरी गाकर सुलाती है माँ।

प्यारी जग से प्यारी माँ,
खुशिया देती सारी माँ।

नाम - अविका गुप्ता
कक्षा - दूसरी अ

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी

आँधी आई जोर शोर से,
डाली टूटी है झकोर से।
उड़ा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुख की बात कहेगी।
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

हमने खोला आलमारी को,
बुला रहे हैं बेचारी को।
घर वो चीं-चीं करती है
घर में तो वो नहीं रहेगी।

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ
कैसे यह घोंसला बनाएँ।
कैसे फूटे अंडे जोड़े,
किससे यह ~~बात~~ सब बात कहेगी।
अब यह चिड़ियाँ कहाँ रहेगी?

नाम- धवनेश दायमा

कक्षा - दूसरी 'अ'

GANGA TAEN
GANGA NOW

STAYHOME STAYSAFE

Fitness Isnt a Seasonal hobby Fitness is a lifestyle
STAY HOME
STAY SAFE

Save electricity
Rachit Verma

Hum Fit Toh India Fit

VEDIC PANDIT
CLASS - 4th A
KENDRIYA VIDYALAYA
MANDSAUR

कला शिक्षा विभाग

संपादक गण:-

श्रीमती प्रतिमा तकियार

(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक -कला शिक्षा)

साक्षी यादव कक्षा 10 अ

दिव्या डामर कक्षा 10 अ

निखिल कुमार 10 अ

अ आ इ ई
ए ऐ ओ औ
अ अः
क ख ग घ
ड़ च छ ज
झ ञ ट ठ
ड ढ ण त
थ द ढ ण
Basic Education
तमसो मा ज्योतिर्गमय
Literacy
Equivalency
असतो मा सद्गमय
Skill Development
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥
गणित
अंग्रेजी

भारत की विभिन्न लोक कलाएँ

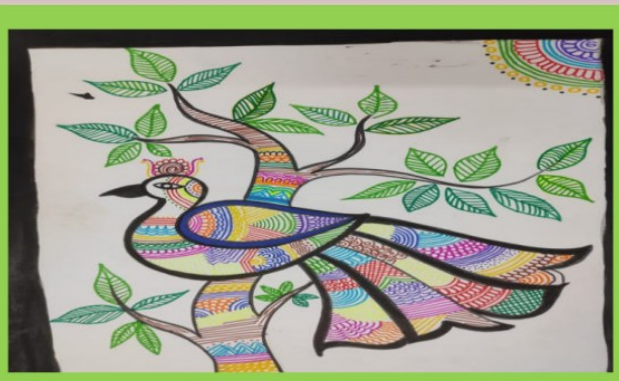

भारत की विभिन्न लोक कलाएँ

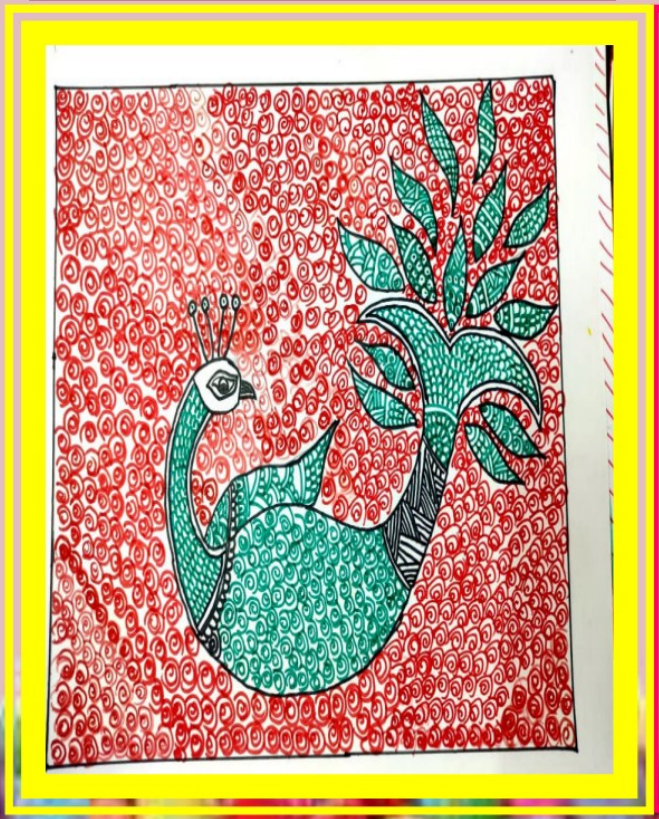

पेस्टल , स्केच पेन एवं पेन्सिल कलर पेंटिंग

पेस्टल , स्केच पेन एवं पेन्सिल कलर पेंटिंग

कोविड वारियर्स ड्राइंग कम्पीटीशन

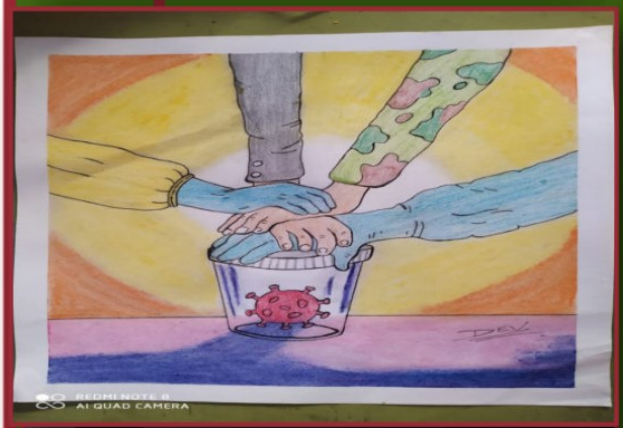

कोविड वारियर्स ड्राइंग कम्पीटीशन

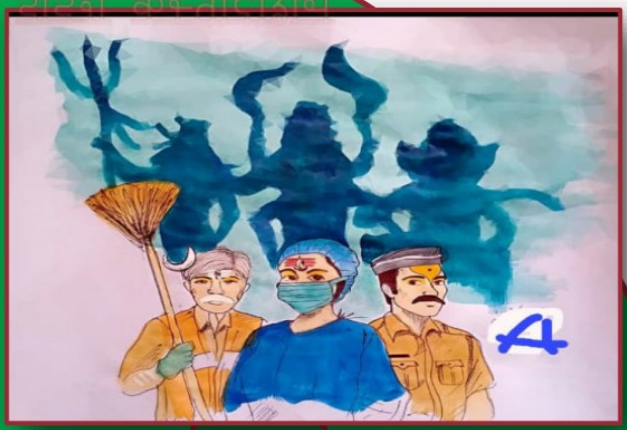

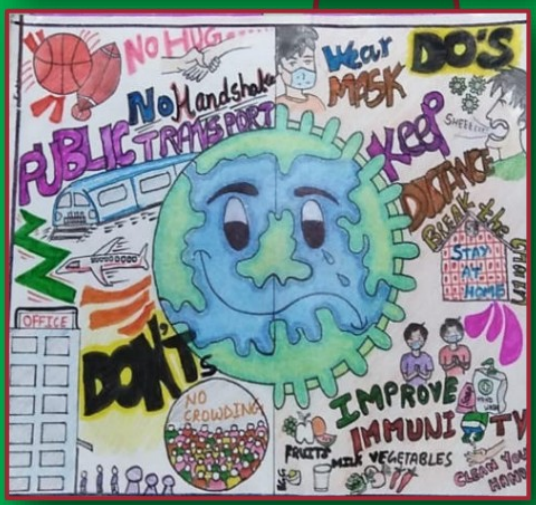

पेन्सिल शेडिंग

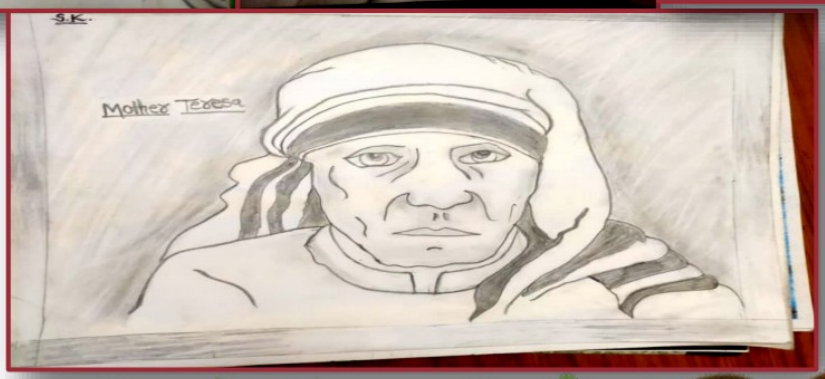

पॉट डेकोरेशन

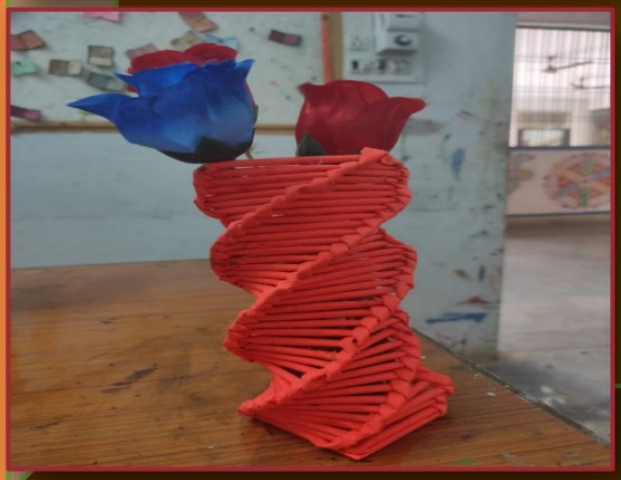

हिन्दी दिवस पेंटिंग

स्प्रे पेंटिंग

स्टोन पेंटिंग

BALA PROJECT

BALA PROJECT

कला शिक्षा से सम्बन्धित YOU TUBE लिंक		
1	Stone painting	https://youtu.be/vJUPEWGl5lA
2	Colorful warli painting	https://youtu.be/KF8LIp9vJJI
3	Hindi diwas poster	https://youtu.be/gMhaqr8hPQk
4	Pencil shading	https://youtu.be/ucBVb8y4YEU
5	Spray painting	https://youtu.be/kxyxSZxbVq0
6	Number drawing	https://youtu.be/BALTLqVHAu0
7	Sunrise painting	https://youtu.be/7M-NQ-ZA8Yw
8	Sunset painting	https://youtu.be/rD5Xtcvq5lA
9	Poster colour painting	https://youtu.be/ftTbnhgqy5A
10	Art exhibition KV MANDSAUR 2020-21	https://youtu.be/Y3wGvBf3p_I
11	Art exhibition on covid-19	https://youtu.be/KbKV5-a6PPo

Subir Debnath is presenting
altamash ali qur... and 91 more
11:45 AM
You
FIT INDIA MOVEMENT
KV MANDSAUR
sanjay dixit
bhavana Singh
M
Mridul Pathak
Subir Debnath

Subir Debnath is presenting
FIT INDIA MOVEMENT
• Fit India Movement is a nation-wide movement in India to encourage people to remain healthy and fit by including physical activities and sports in their daily lives.
• Motto: to make Indians Healthy & Fit.
• Fit India Movement encourages:
- People to intake healthy food & lifestyle and
- to maintain Physical and mental Fitness.
FIT INDIA MOVEMENT
DISCOVER THE NEW YOU
Shivani Yadav has left the meeting

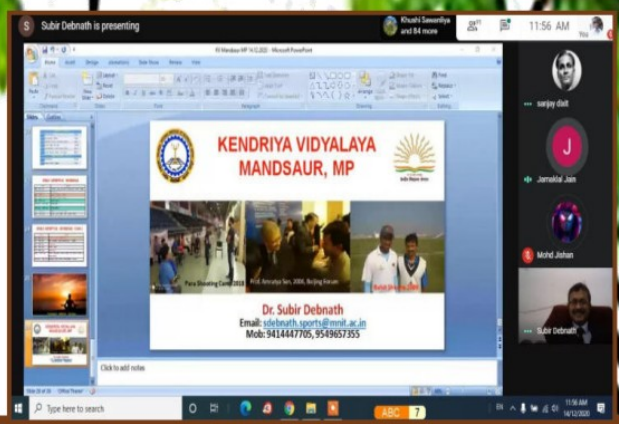
Subir Debnath is presenting
KENDRIYA VIDYALAYA
MANDSAUR, MP
Dr. Subir Debnath

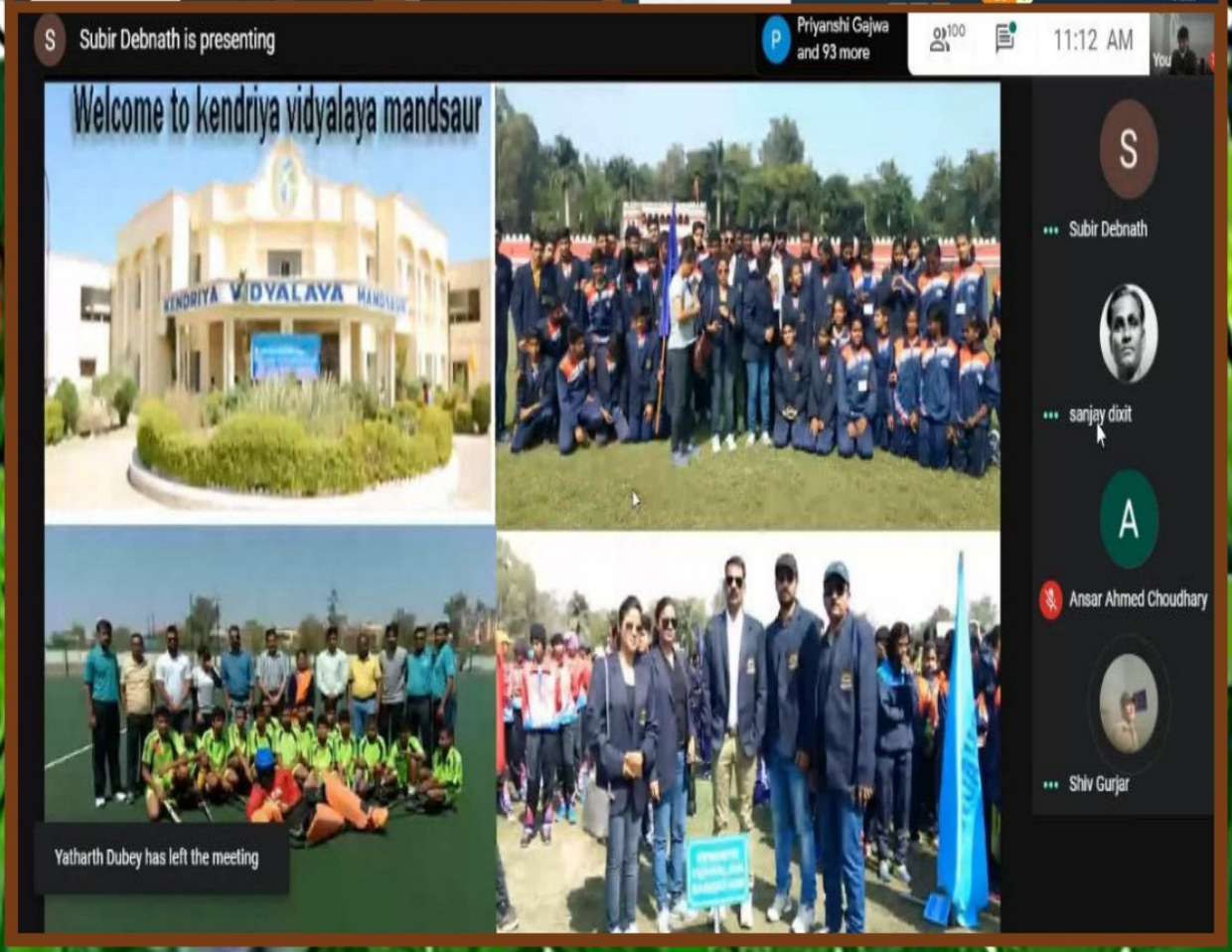
Subir Debnath is presenting
Priyanshi Gajwa and 93 more
11:12 AM
Welcome to kendriya vidyalaya mandsaur
Subir Debnath
sanjay dixit
Ansar Ahmed Choudhary
Shiv Gurjar
Yatharth Dubey has left the meeting

Meeting details
People (51)
Chat
rakesh yadav
KENDRIYA VIDYALAYA MANDSAUR
jitendra chapdot
Prashant Pandey
Hamilton Masih
Ruchi Pandey
BHUPENDRA PUROHIT

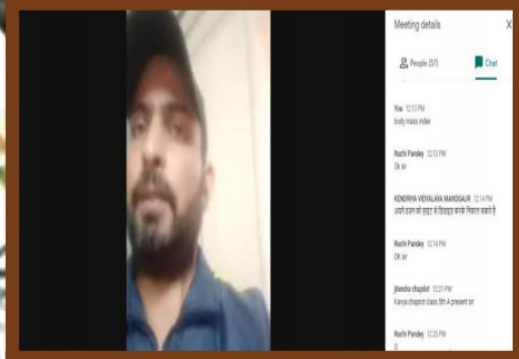
Meeting details
People (57)
Chat

SCHOOL ACTIVITIES DURING COVID-19 LOCKDOWN

Save Earth
50' EARTH DAY
DESHNA CHAUDHARY (6A) K.V. MANDSAUR
SAVE EARTH
SAVE LIFE

SAVE EARTH
SAVE WATER
WHOLE WORLD
Save Water
DON'T BE GREEDY TO BE GREENY
5 June ,2020
World
Environment
Day
Let's plan for the planet !!
"Being nature -lover "
Scouts and Guides corner
K V Mandsaur

Let's join hands !!
#Reduce Reuse Recycle
KV Mandsaur

Go Green

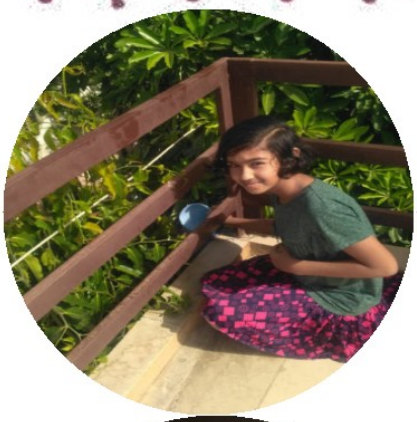

Pallav Agrawal
III A

विद्यालय के शिक्षक गण

ऑनलाइन कक्षाएँ लेते हुए

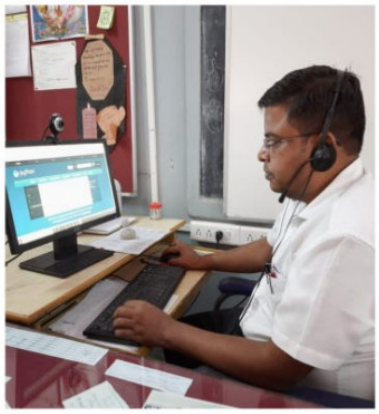

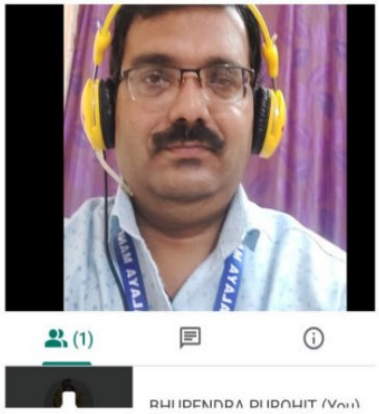

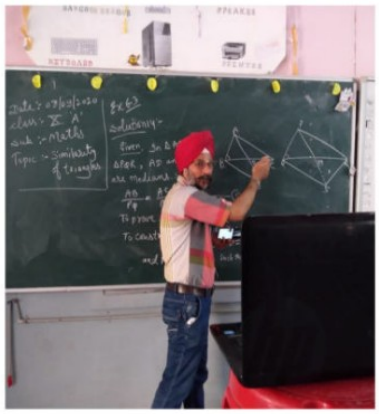
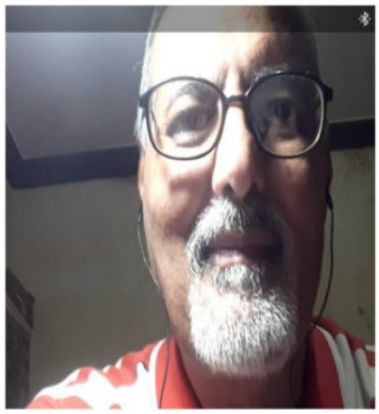

Lab Incharge :
Mrs. Mukta Sharma
MOLARITY
MATHS CLASS-IV - CHAPTER-3
A Trip to Bhopal
Q A Small ant Climbs 3 cm in 1 minute but slips down 2 cm. How much time will it take to climb to 26 cm.
Sol:-
2 minutes
MUSIC
2020-9-3 15:3
mayur vachhani
Aadarsh
Shev
Payal
20 others
Polygon

MS SEEMA MEENA

MRS SANGEETA VERMA

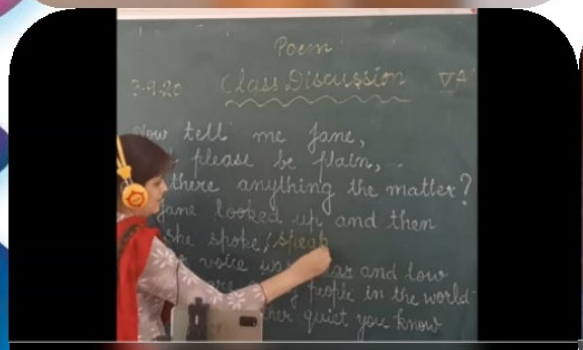
MRS TAMANNA SEVALDASANI

MR RITVIK AGRAWAL

MR KULDEEP GAHALOT

MS LAXMI

MRS PRATIMA TAKIYAR

MR BALRAM PATIDAR

MR SOMLA BHURIYA

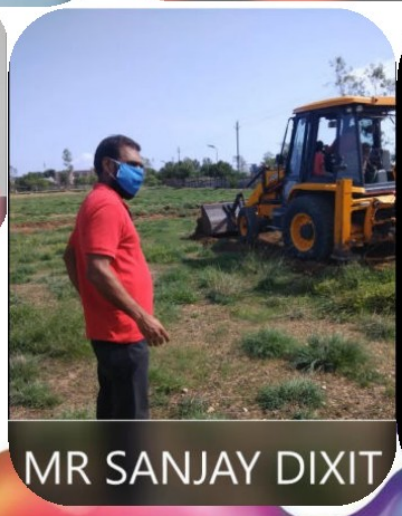
MR SANJAY DIXIT

MR HEMILTON MASIH

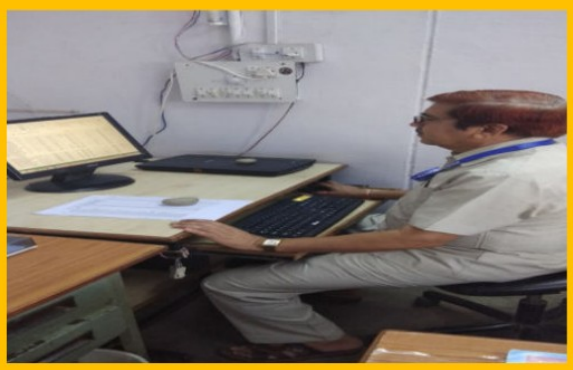

JCB

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर में
विधायक निधि द्वारा निर्मित बास्केटबॉल कोर्ट का
लोकार्पण
शपाल सिंह जी सिसौदिया
विधायक मंदसौर द्वारा
दिनांक 03.08.2020 को किया गया।

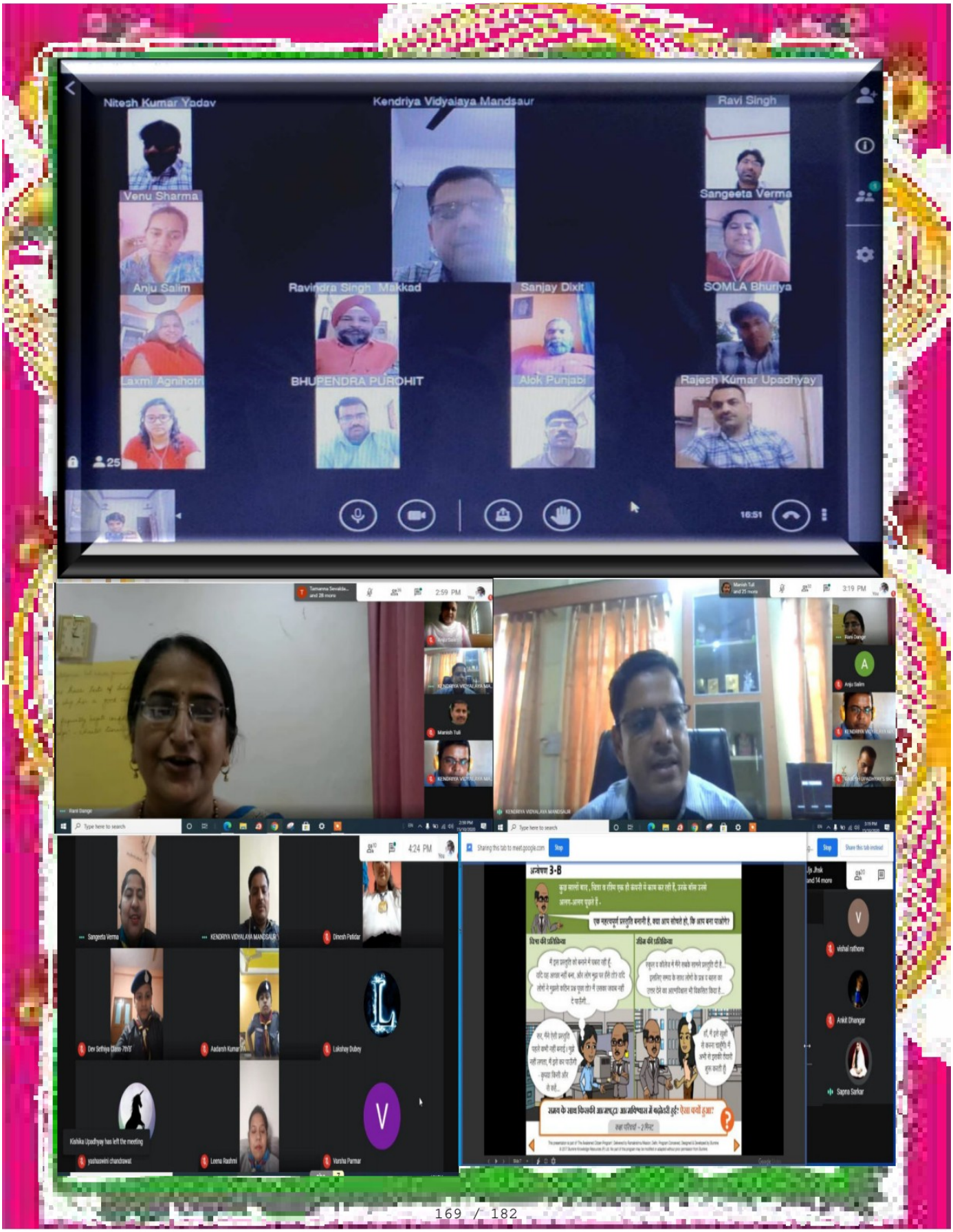
Nitesh Kumar Yadav
Kendriya Vidyalaya Mandsaur
Ravi Singh
Venu Sharma
Sangeeta Verma
Anju Salim
Ravindra Singh Makkad
Sanjay Dixit
SOMLA Bhuriya
Laxmi Agnihotri
BHUPENDRA PUROHIT
Alok Punjabi
Rajesh Kumar Upadhyay
अनुभाग 3-B

BLOCK
ADD
22 APRIL 2020
Messages to this chat and calls are now secured with end-to-end encryption. Tap for more info.
Dear Madam ,
We are happy & satisfied for your support through online classes,
This time your online classes is very good on this lockdown period.
From - Tikam Chand Arya
My Daughter Name - Kiran Arya
Class - 6th B
8:25 am
TODAY
Messages to this chat and calls are now secured with end-to-end encryption. Tap for more info.
In this lockdown period we are able to continue our studies through these online classes. Material provided by you is very useful for us to study, we are able to understand the chapters easily. Thank you ma'am.....By Mridula Punjabi 12th science 12:06 PM
Sir, your altruistic efforts are so productive . As you are colaborating us . I respect your helping nature. This is splendid utilization of this lockdown period .so we are easily continue our study. As you are invigorating .
Thankyou so much sir ....by jhanvi
Write a message
Namish rao Class II 4:54 pm
Good 7:48 pm
22 APRIL 2020
Music class is very entertaining class pls continue it. 11:29 am
My ward is like it. 11:30 am
Prabhakar rao father of namish rao class II 11:30 am
XIICOMM KV MANDSA...
Anju Salim Mam Kv Mds
GUNJAN PALIWAL XI
Sir I am studying and making notes in rough copy as I don't have fair copy now and watching the rec...
Keep it up 9:12 PM
AMAN SINGHANWAL XI
Sir by this online study I am utilising my time by engaging in studying and this is very helpful for our 12 board exams .I am trying to watch all study materials which was send by teachers and making notes of them .As I have no books at that time so e-pathshala app is very useful for me during study.
very good
Try to make best utilisation of your time
Best of luck
CLASS 2 A
Aysha Father
Vedyanshi Mom
Hello mam I am Bhawna Paliwal
From class 8A 2:04 pm
I have a doubt for you 2:05 pm
Sometime before I have not maths copy 2:06 pm
So I can do my work in a rough copy 2:07 pm
But today I am arrange maths copy 2:07 pm
So I can do my maths work in the copy 2:08 pm
+91 93023 94410
So I can do my maths work in the copy
Yes 4:46 pm
Ok 7:02 pm
Mam hobbies aim or thought ke liye page chorna h 7:05 pm
Or not 7:05 pm
Tell me 7:05 pm
Mam 7:05 pm
+91 93023 94410
Mam hobbies aim or thought ke liye page chorna h
Yes
Type a message
327 responses
Insights
1. शब्दपरिचय:-I
1,073 responses
Insights
Total points distribution
We all are enjoying online classes and it is helpful in our study's. It is great full that in lockdown we are studying best thanks for your effort.
The study material is very beneficial for us. This step of kendriya vidyalaya is good for studentsin their study's.
Thank you
-Tiya khichi
5th B
Virat Chouhan 1s...
Very helpful video lectures through which we can easily understand the topics and study them...thnku sir for providing such useful lectures and important questions for practice...
Thanks sir for providing this lectures
Sir I am studying and making notes in rough copy as I don't have fair copy now and watching the recommended videos and I am also studying by e-pathshala aap
Very good

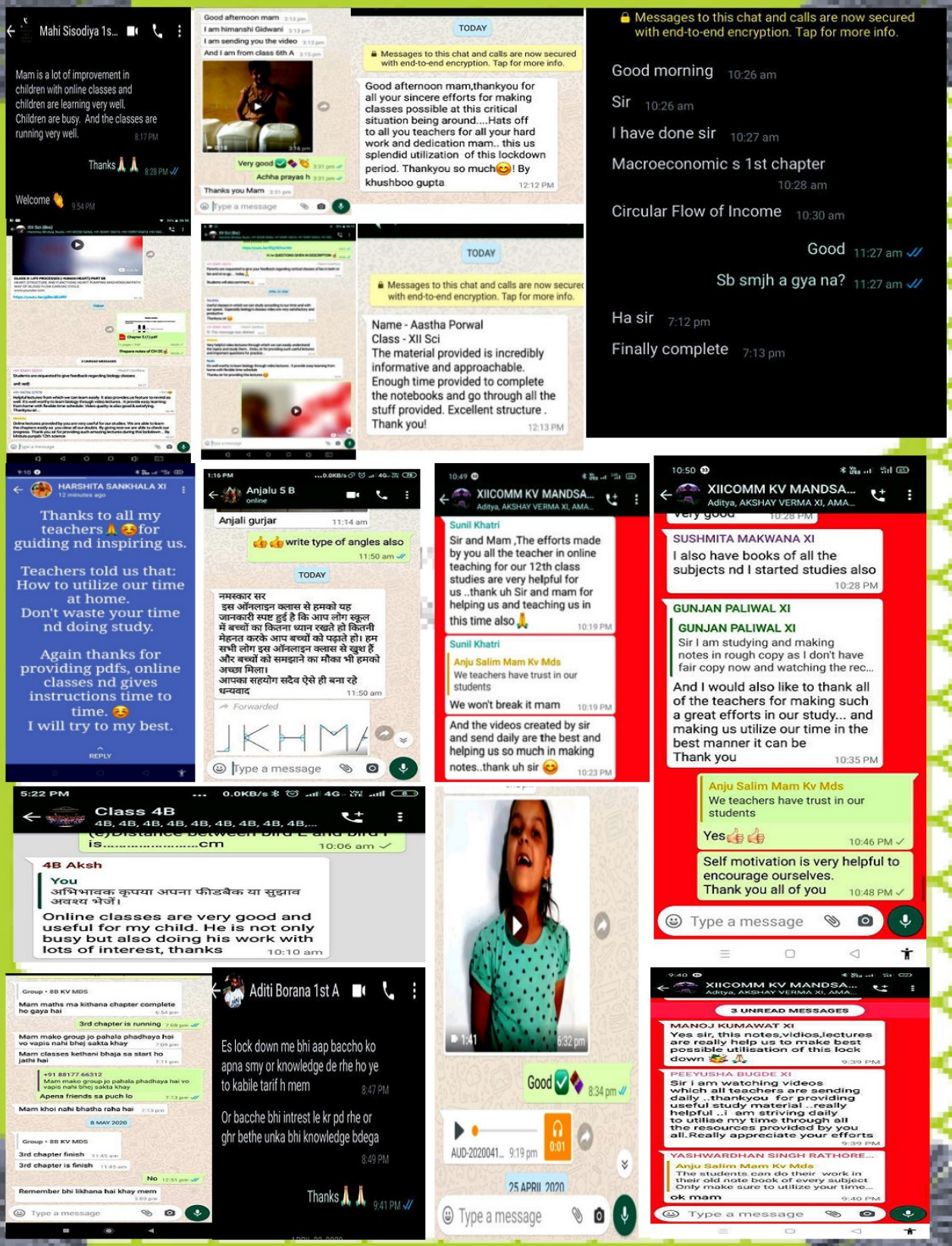
Mahi Sisodiya 1s...
Mam is a lot of improvement in children with online classes and children are learning very well. Children are busy. And the classes are running very well.
Thanks
Welcome
Good afternoon mam
I am himanshi Gidwani
I am sending you the video
And I am from class 6th A
Very good
Achha prayas h
Thanks you Mam
TODAY
Messages to this chat and calls are now secured with end-to-end encryption. Tap for more info.
Good afternoon mam,thankyou for all your sincere efforts for making classes possible at this critical situation being around....Hats off to all you teachers for all your hard work and dedication mam.. this us splendid utilization of this lockdown period. Thankyou so much! By khushboo gupta
Messages to this chat and calls are now secured with end-to-end encryption. Tap for more info.
Good morning
Sir
I have done sir
Macroeconomic s 1st chapter
Circular Flow of Income
Good
Sb smjh a gya na?
Ha sir
Finally complete
TODAY
Name - Aastha Porwal
Class - XII Sci
The material provided is incredibly informative and approachable. Enough time provided to complete the notebooks and go through all the stuff provided. Excellent structure . Thank you!
HARSHITA SANKHALA XI
Thanks to all my teachers for guiding nd inspiring us.
Teachers told us that: How to utilize our time at home. Don't waste your time nd doing study.
Again thanks for providing pdfs, online classes nd gives instructions time to time.
I will try to my best.
REPLY
Anjalu 5 B
Anjali gurjar
write type of angles also
TODAY
नमस्कार सर
इस ऑनलाइन क्लास से हमको यह जानकारी स्पष्ट हुई है कि आप लोग स्कूल में बच्चों का कितना ध्यान रखते हो कितनी मेहनत करके आप बच्चों को पढ़ाते हो। हम सभी लोग इस ऑनलाइन क्लास से खुश हैं और बच्चों को समझाने का मौका भी हमको अच्छा मिला।
आपका सहयोग सदैव ऐसे ही बना रहे
धन्यवाद
Forwarded
Type a message
XIICOMM KV MANDSA...
Aditya, AKSHAY VERMA XI, AMA...
Sunil Khatri
Sir and Mam ,The efforts made by you all the teacher in online teaching for our 12th class studies are very helpful for us ..thank uh Sir and mam for helping us and teaching us in this time also
Sunil Khatri
Anju Salim Mam Kv Mds
We teachers have trust in our students
We won't break it mam
And the videos created by sir and send daily are the best and helping us so much in making notes..thank uh sir
SUSHMITA MAKWANA XI
I also have books of all the subjects nd I started studies also
GUNJAN PALIWAL XI
GUNJAN PALIWAL XI
Sir I am studying and making notes in rough copy as I don't have fair copy now and watching the rec...
And I would also like to thank all of the teachers for making such a great efforts in our study... and making us utilize our time in the best manner it can be
Thank you
Anju Salim Mam Kv Mds
We teachers have trust in our students
Yes
Self motivation is very helpful to encourage ourselves.
Thank you all of you
Class 4B
4B, 4B, 4B, 4B, 4B, 4B, 4B, 4B,...
is.....cm
4B Aksh
You
अभिभावक कृपया अपना फीडबैक या सुझाव अवश्य भेजें।
Online classes are very good and useful for my child. He is not only busy but also doing his work with lots of interest, thanks
Good
AUD-20200041... 9:19 pm
25 APRIL 2020
Type a message
Group • 8B KV MDS
Mam maths ma kithana chapter complete ho gaya hai
3rd chapter is running
Mam mako group jo pahala phadhaya hai vo vapis nahi bhej sakta khay
Mam classes kethani bhaja sa start ho jathi hai
Apena friends sa puch lo
Mam khoi nahi bhatha raha hai
8 MAY 2020
3rd chapter finish
3rd chapter is finish
No
Remember bhi likhana hai khay mem
Aditi Borana 1st A
Es lock down me bhi aap baccho ko apna smy or knowledge de rhe ho ye to kabile tarif h mem
Or bacche bhi intrest le kr pd rhe or ghr bethe unka bhi knowledge bdega
Thanks
3 UNREAD MESSAGES
MANOJ KUMAWAT XI
Yes sir, this notes,vidios,lectures are really help us to make best possible utilisation of this lock down
PEEYUSHA BUGDE XI
Sir i am watching videos which all teachers are sending daily ..thankyou for providing useful study material ..really helpful ..i am striving daily to utilise my time through all the resources provided by you all.Really appreciate your efforts
YASHWARDHAN SINGH RATHORE...
Anju Salim Mam Kv Mds
The students can do their work in their old note book of every subject Only make sure to utilize your time...
ok mam

विद्यालय समाचार पत्रों में

ऑनलाइन विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

मंदसौर। 31 अक्टूबर को केंद्रीय विद्यालय मंदसौर में ऑनलाइन विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में कक्षा छठवीं से बारहवीं तक के बच्चों के द्वारा लगभग 60 से अधिक मॉडल्स प्रदर्शित किए गए जो कि विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित थे। प्राचार्य प्रियदर्शन गर्ग ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि किसी पुरस्कार या प्रशंसा के लिए कार्य न करें अपितु कुछ नया सीखने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। प्रदर्शनी में बच्चों के द्वारा मॉडल्स की जानकारी देते हुए उनके वैज्ञानिक सिद्धान्त की व्याख्या की गई। प्रदर्शित मॉडल्स का अवलोकन एवं मूल्यांकन अर्पिता शर्मा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन डॉ वेणु शर्मा द्वारा किया गया।

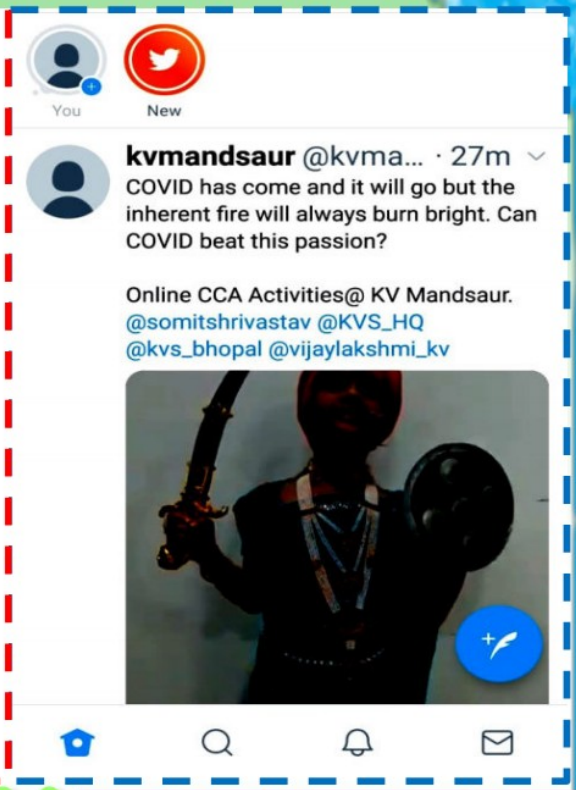

केंद्रीय विद्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन

मंदसौर। केंद्रीय विद्यालय मंदसौर में कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए ऑनलाइन हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि डॉ उर्मिला तोमर ने संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे देश का गौरव है। इसने सभी प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों को पूरा स्नेह दिया है। हिंदी को जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है। नई शिक्षा नीति में हिंदी और मातृभाषाओं को महत्व दिया गया है जो इसके प्रसार में प्रभावी कदम साबित होगा। साहित्यकारों और हिंदी के विद्वानों ने इसके प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया है। प्राचार्य पीडी गर्ग ने कहा कि हिंदी हमारी पहचान है। मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़कर हम हिंदी के विशाल और चमत्कारिक शब्द भंडार से परिचित हो सकते हैं। मधुसूदन शर्मा, सीमा मीना और अक्षिता बैराठी ने इस विषय पर विचार व्यक्त किए। संगीता वर्मा ने हिंदी भाषा पर कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन हेमिल्टन मसीह ने किया।

Tweets Tweets & replies Media

kvmandsaur @kvman... · 2s

केंद्रीय विद्यालय मंदसौर में आज विधायक माननीय श्री यशपालसिंह सिसोदिया ने बास्केटबॉल कोर्ट का भूमि पूजन किया। उन्होंने बास्केटबॉल कोर्ट के लिए विधायक निधि से 4 लाख रुपए प्रदान किए हैं। इस अवसर पर उन्होंने इस कोर्ट में दर्शक दीर्घा बनवाने के लिए भी विधायक निधि से 2 लाख मंजूर किए।

kvmandsaur @kvmands... · 2h

केंद्रीय विद्यालय मन्दसौर में कक्षा 5 वी की छात्रा हिमांशी गिडवानी ने अपनी गुलक की संपूर्ण राशि को पीएम केयर फंड में जमा करने के लिए लायंस क्लब मंदसौर से सम्पर्क किया। लायंस क्लब ने बालिका की इच्छा अनुरुप गूलक की राशि को पीएम केयर में ऑनलाइन ट्रांसफर की।

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर में भारतीय सेना के शहीदों की अमर स्मृति में बास्केटबॉल कोर्ट का लोकार्पण

मंदसौर। भारतीय सेना के शहीदों की अमर स्मृति में केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर में विधायक निधि द्वारा निर्मित बास्केटबॉल कोर्ट का लोकार्पण यशपालसिंह सिसोदिया विधायक मंदसौर द्वारा किया गया। इस अवसर पर यशपालसिंह सिसोदिया ने भारतीय सेना के परमवीर चक्र विजेताओं को पुष्पांजलि दी एवं खेल मशाल प्रज्जवलित की। उन्होने खेलों के जीवन में महत्व पर विचार व्यक्त किए साथ ही बास्केटबॉल कोर्ट के लिए दर्शक दीर्घा हेतु विधायक निधि से 2 लाख रूपए प्रदान करने की भी घोषणा की। इस अवसर पर लायन्स क्लब मंदसौर के अध्यक्ष विकास भण्डारी तथा अन्य पदाधिकारियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। प्राचार्य प्रियदर्शन गर्ग ने बताया कि विद्यालय में बास्केटबॉल कोर्ट की मांग बहुत समय से लंबित थी जिसे विधायक निधि से पूर्ण किया गया। प्राचार्य ने विधायक एवं लायन्स क्लब का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन संजय दीक्षित ने किया। इस अवसर पर लायन्स क्लब के सदस्य तथा विद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा।

फिटनेस का डोज आधा घंटा रोज

मंदसौर @ पत्रिका . फिट इंडिया स्कूल वीक के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय मंदसौर में फिटनेस का डोज आधा घंटा रोज की थीम के साथ देश केख्याति प्राप्त फिटनेस विशेषज्ञों की तीन दिवसीय वेबिनार श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। इस श्रृंखला के पहले दिन 14 दिसंबर को राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन से जुड़े फिटनेस एक्सपर्ट एवं लेखक डॉ सुबीर देबनाथ ने संतुलित खान-पान और फिटनेस के मंत्र प्रदान किए। डॉ सुबीर देबनाथ ने फिटनेस के लिए एक्ससाइज़ के सही तरीकों के साथ उचित कैलोरी के साथ बैलंस डाइट के बारे में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की जिज्ञासा का समाधान किया। संचालन संजय दीक्षित ने किया।

केंद्रीय विद्यालय में सांसद ने ओपन जिम तो कलेक्टर ने अटल लैब का किया शुभारंभ

लैब में ड्रोन, थ्रीडी प्रिंटर, हाई पावर टेलीस्कोप, ऐरो मॉडलिंग किट उपलब्ध

भास्कर संवाददाता | मंदसौर

केंद्रीय विद्यालय में सोमवार को ओपन जिम का शुभारंभ किया गया। इसमें बच्चों के शारीरिक विकास के लिए कई उपकरण लगाए हैं। इनके द्वारा कंधों, कलाइयों, घुटनों, पैरों और सीने के विभिन्न शारीरिक अभ्यास किए जा सकते हैं। इसी तरह कलेक्टर ने अटल टिंकरिंग लैब का शुभारंभ किया।

विद्यालय परिसर में ध्यान योग केंद्र की स्थापना में अभिभावक जितेंद्रसिंह पंवार ने 10 हजार रुपए की सहयोग राशि दी। सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए व्यायाम, निरंतर शारीरिक अभ्यास और योग जरूरी है। हमारे देश ने अध्यात्म और योग के क्षेत्र में विश्व में विशिष्ट पहचान बनाई है। नालंदा और तक्षशिला का गौरवपूर्ण इतिहास हमें सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

केंद्रीय विद्यालय में सांसद ने ओपन जिम का शुभारंभ किया।

कलेक्टर ने प्रबंध समिति की बैठक ली

कलेक्टर मनोज पुष्प ने अटल टिंकरिंग लैब का शुभारंभ किया। विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक ली और शिक्षकों द्वारा ली जा रही ऑनलाइन कक्षाओं के बारे में जानकारी ली। कहा कि विद्यार्थियों द्वारा मोबाइल का उचित उपयोग किया जाए इसके लिए शिक्षकों और अभिभावकों को सतर्क रहना जरूरी है। प्राचार्य प्रियदर्शन गर्ग ने बताया कि लैब के लिए राष्ट्रीय नीति आयोग अटल इनोवेशन मिशन से 10 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में विभिन्न दक्षताओं का विकास करना है। इस लैब में ड्रोन, थ्रीडी प्रिंटर, हाई पावर टेलीस्कोप, ऐरो मॉडलिंग किट आदि उपलब्ध हैं। कार्यक्रम का संचालन संजय दीक्षित ने किया।

केंद्रीय विद्यालय में दर्शक दीर्घा का लोकार्पण

पत्रिका सिटी हैपनिंग

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मंदसौर. केंद्रीय विद्यालय मंदसौर में बास्केटबॉल कोर्ट के सामने विधायक निधि से निर्मित दर्शक दीर्घा का विधायक यशपालसिंह सिसोदिया द्वारा लोकार्पण किया गया।

उन्होंने कहा कि जीवन में खेल और अध्ययन दोनों का समान महत्व है। खेल जीवन में स्फूर्ति, उत्साह और अनुशासन लाते हैं। किसी भी संस्था में विकास के लिए जनता की जागरूकता और प्रशासन के प्रयास दोनों ही जरूरी होते हैं। हम सभी मिलकर प्रयत्न करें तो तस्वीर को बदलना मुमकिन है। उन्होंने केंद्रीय विद्यालय में स्क्वेश कोर्ट के लिए विधायक निधि से चार लाख रुपए प्रदान करने की भी घोषणा की। स्क्वेश कोर्ट की सुविधा आस पास कहीं नहीं है और विद्यालय में इसके बनने से विद्यालय के बच्चों को लाभ मिलेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कलेक्टर मनोज पुष्प ने की। उन्होंने कहा कि विद्यालय में बच्चों के लिए विभिन्न सुविधाओं का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है जो सराहनीय है। इन खेल सुविधाओं से बच्चे लाभ उठाकर प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालय के लिए खेलने जाएंगे। बच्चों को जब अवसर मिलते हैं तभी उनकी प्रतिभाओं को पंख लगते हैं। प्राचार्य श्री प्रियदर्शन गर्ग ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं और इनका सम्पूर्ण विकास करना हमारा दायित्व है। हम बच्चे में अलग अलग प्रतिभा होती है जिनको पर्याप्त अवसर मिले तो वे अपना बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। कार्यक्रम का संचालन संजय दीक्षित ने किया और आभार प्राचार्य प्रियदर्शन गर्ग ने माना।

REDMI NOTE 9 PRO MAX
QUAD CAMERA

केन्द्रीय विद्यालय में गणतंत्र दिवस मनाया-केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर में गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जिलाधीश श्री मनोज पुष्प ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि जीवन में कई बड़ी चुनौतियाँ आती हैं और जो धैर्यपूर्वक उनका मुकाबला करते हैं वे जीत हासिल करते हैं। हमारे सामने भी कोरोना महामारी एक चुनौती बनकर आई है। इसका सामना हम कर रहें हैं और जल्द ही इससे उबरेंगे भी। प्राचार्य श्री प्रियदर्शन गर्ग ने कहा कि हमे अपने अधिकारों के प्रयोग के साथ साथ कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए जब हम कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करते हैं तो अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। कुमारी गुंजन पालीवाल ने इस अवसर पर कविता एवं करिश्मी सोलंकी ने नृत्य प्रस्तुत किया। शहीद सिपाही भीम सिंह राठौर की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती पूनम कुँवर को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री हेमिल्टन मसीह ने किया और आभार श्री संजय दीक्षित ने माना।

kvmandsaur @kvmands... · 2h

केंद्रीय विद्यालय मन्दसौर में कक्षा 5 वी की छात्रा हिमांशी गिडवानी ने अपनी गुलक की संपूर्ण राशि को पीएम केयर फंड में जमा करने के लिए लायंस क्लब मंदसौर से सम्पर्क किया। लायंस क्लब ने बालिका की इच्छा अनुरुप गूलक की राशि को पीएम केयर में ऑनलाइन ट्रांसफर की।

ऑनलाइन पोस्टर बनाकर दिया संदेश

उदयपुर | गीतांजली इंस्टीट्यूट आफ टेक्निकल स्टडीज ने ऑनलाइन पोस्टर प्रतियोगिता कराई और इसमें प्रतिभागियों ने पोस्टर बनाकर कई संदेश दिए। संस्थान के निदेशक डॉ विकास मिश्र ने बताया कि इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य जन जन के साथ बच्चों तक कोरोना वारियर्स के योगदान को पहुंचाना था। संयोजक मोहित माथुर के अनुसार इस ऑनलाइन पोस्टर प्रतियोगिता में राजस्थान व मध्य प्रदेश के 250 से ज्यादा स्कूल के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार सेंट मैरी उदयपुर के छात्र नमन सिंघवी व केंद्रीय विद्यालय मंदसौर की छात्रा भूमिका सोनी को मिला।

आयोजन

केन्द्रीय विद्यालय में हर्षोल्लास से मनाया गया गणतंत्र दिवस

मंदसौर @ पत्रिका . केंद्रीय विद्यालय में गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जिलाधीश मनोज पुष्प ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि जीवन में कई बड़ी चुनौतियां आती हैं और जो धैर्यपूर्वक उनका मुकाबला करते हैं वे जीत हासिल करते हैं। हमारे सामने भी कोरोना महामारी एक चुनौती बनकर आई है। इसका सामना हम कर रहें हैं और जल्द ही इससे उबरेंगे भी। प्राचार्य प्रियदर्शन गर्ग ने कहा कि हमे अपने अधिकारों के प्रयोग के साथ साथ कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए। जब हम कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करते हैं तो अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाते हैं। कुमारी गुंजन पालीवाल ने इस अवसर पर कविता एवं करिश्मी सोलंकी ने नृत्य प्रस्तुत किया। शहीद सिपाही भीम सिंह राठौर की स्मृति में उनकी प%ी पूनम कुंवर को स्मृति चिंह प्रदान किया गया। संचालन हेमिल्टन मसीह ने किया।

SCOUTS & GUIDES ACTIVITIES

KV MANDSAUR

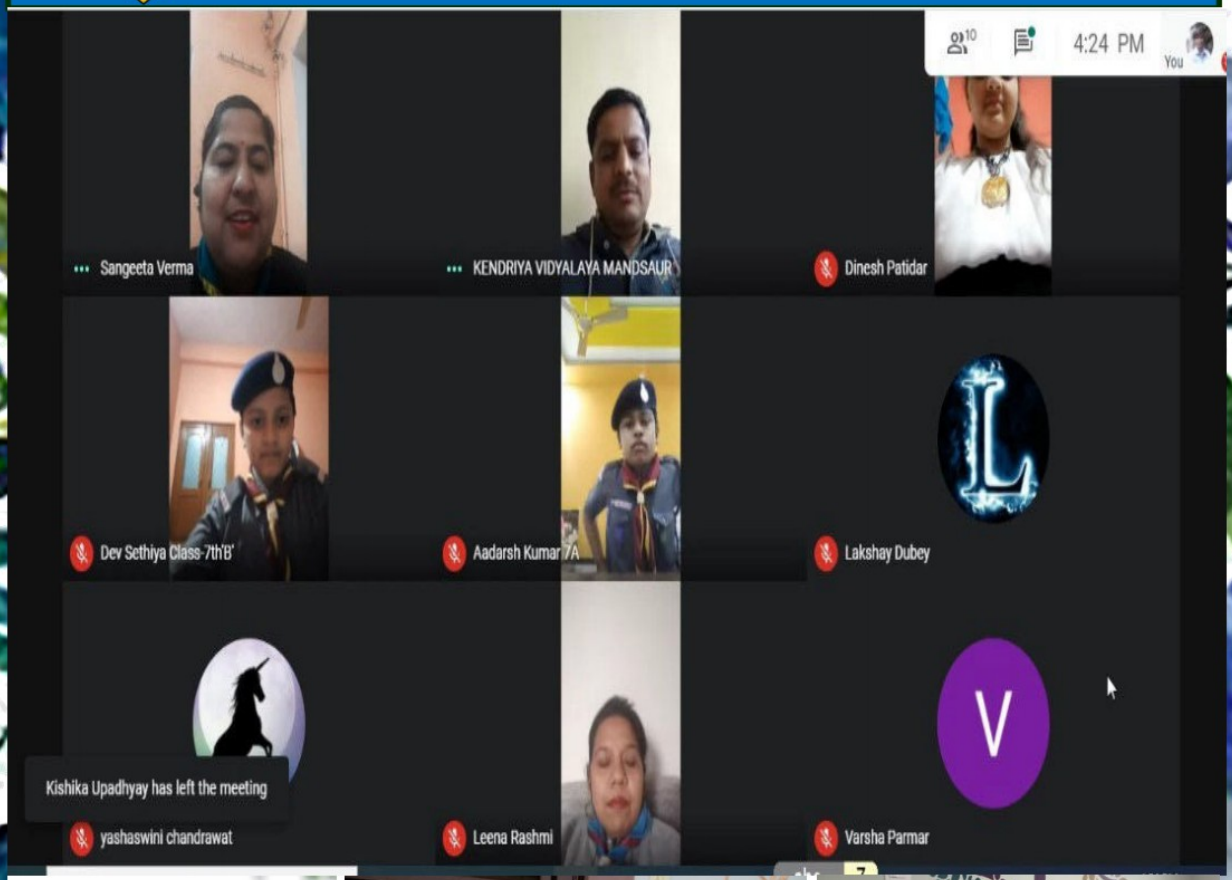

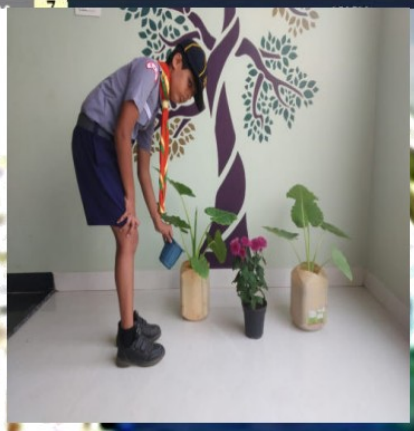

Save Water
The World not to destroy it.
We Were CORONA To help THE World not to destroy It.
WE WERE BORN TO HELP THE WORLD, NOT TO DESTROY IT
K.V. MANDSAUR

plastic ban pledge

World Peace Is Possible

Fighting against Covid - 19

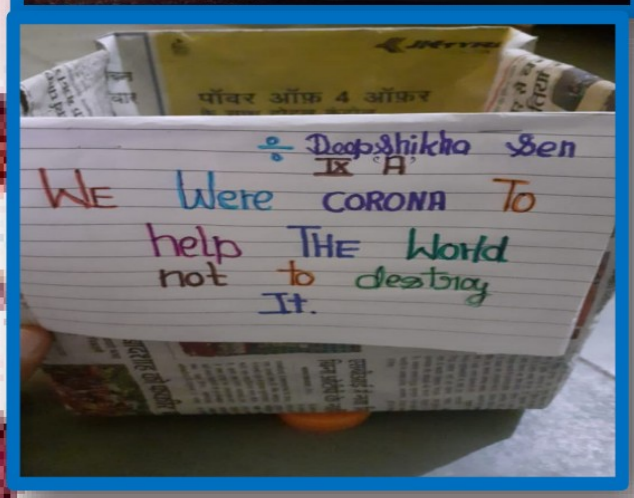
Deepshikha Sen
IX 'A'
We Were CORONA To
help THE World
not to destroy
It.

Save Water
THE World not to destroy it

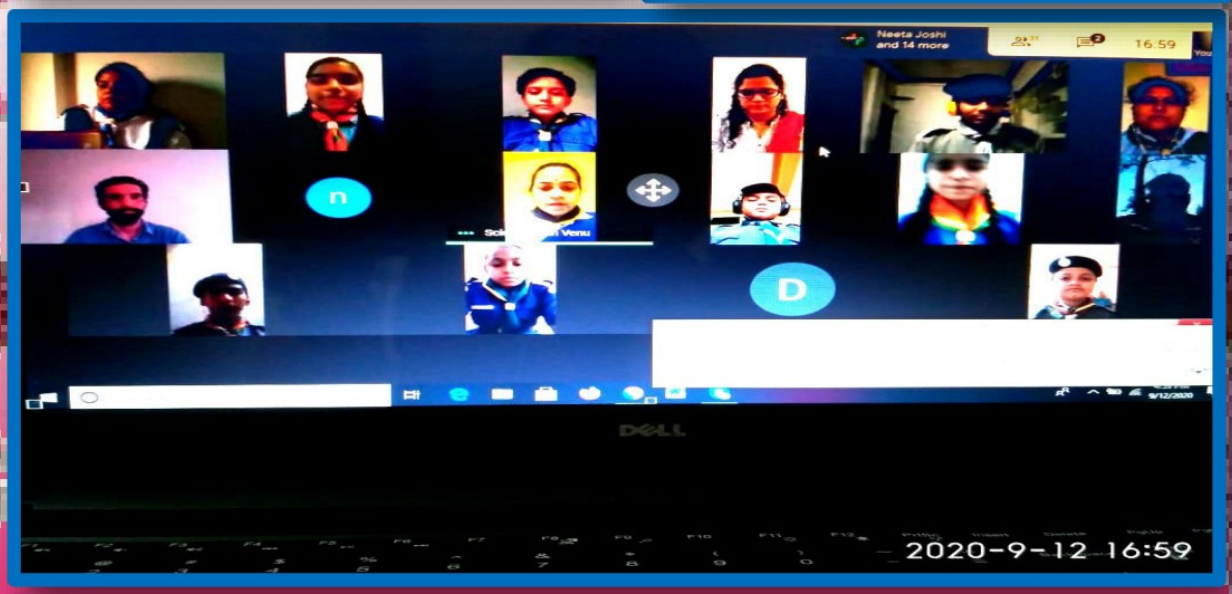
Neeta Joshi and 14 more
16.59
2020-9-12 16:59

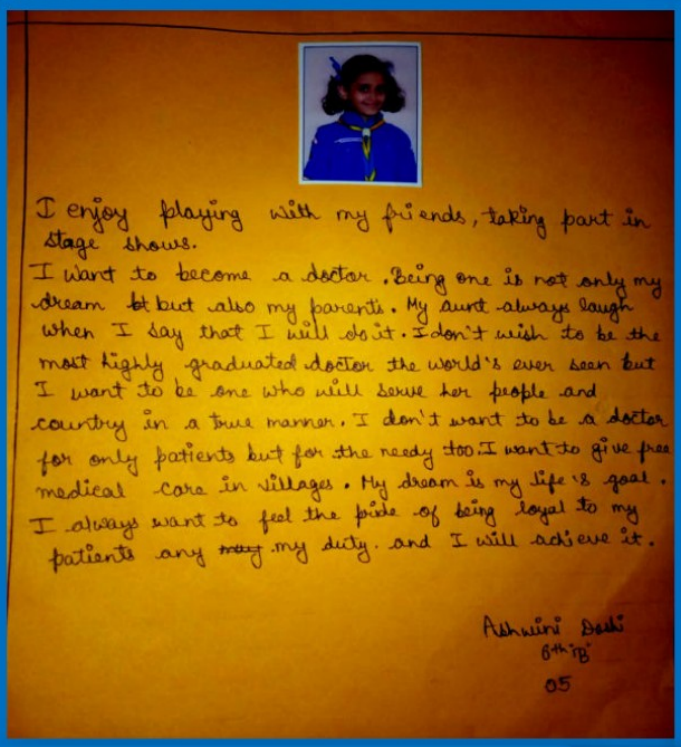

I enjoy playing with my friends, taking part in stage shows.
I want to become a doctor. Being one is not only my dream but also my parents. My aunt always laugh when I say that I will do it. I don't wish to be the most highly graduated doctor the world's ever seen but I want to be one who will serve her people and country in a true manner. I don't want to be a doctor for only patients but for the needy too. I want to give free medical care in villages. My dream is my life's goal. I always want to feel the pride of being loyal to my patients any ~~may~~ my duty. and I will achieve it.

Ashwini Dadi
6th 'B'
05

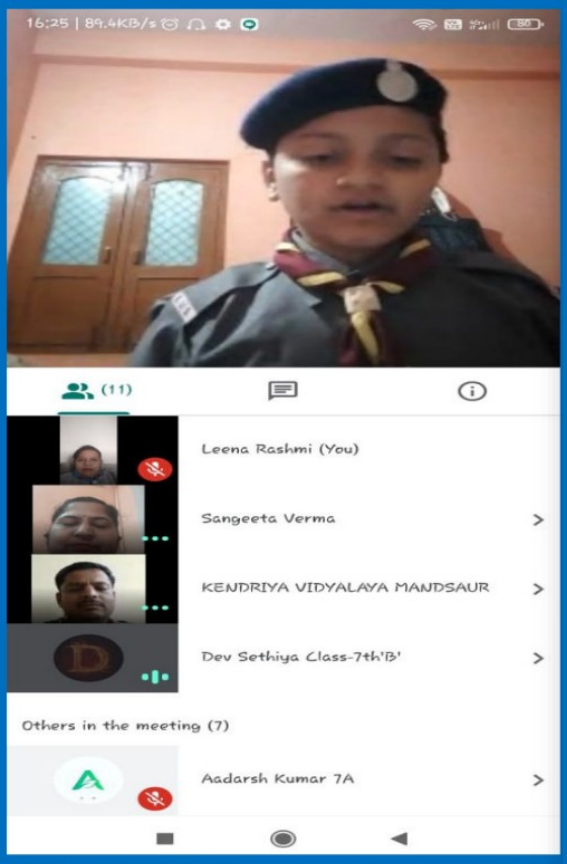

शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों द्वारा शुभकामनाएं

कक्षा 6 अ और ब सत्र 2020–21 के छात्रों के द्वारा की गई सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

संकलन कर्ताः– श्री मयूर वच्छानी टी जी टी सामाजिक विज्ञान एवं श्रीमती लीना रश्मी चौहान टी जी टी अंग्रेजी

कक्षा 6 अ और ब सत्र 2020–21 के छात्रों के द्वारा की गई सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

संकलन कर्ता:– श्री मयूर वच्छानी टी जी टी सामाजिक विज्ञान एवं श्रीमती लीना रश्मी चौहान टी जी टी अंग्रेजी

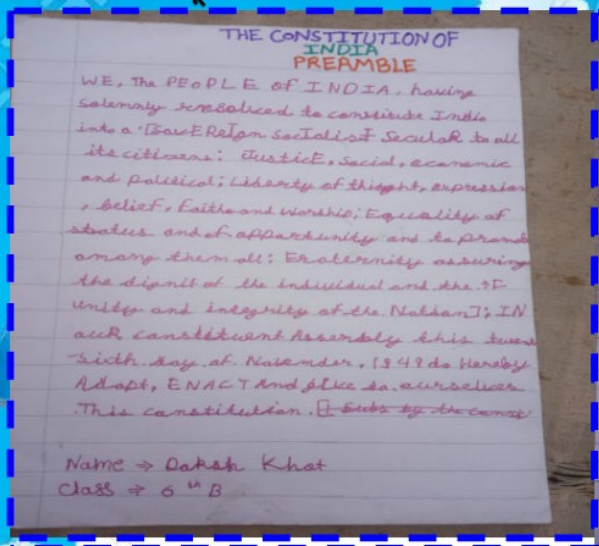

THE CONSTITUTION OF INDIA
PREAMBLE

WE, The PEOPLE of INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR to all its citizens: JUSTICE, social, economic and political; Liberty of thought, expression, belief, faith and worship; Equality of status and of opportunity and to promote among them all: Fraternity assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation; IN our CONSTITUENT Assembly this twenty sixth day of November, 1949 do Hereby Adopt, ENACT and give to ourselves This constitution.

Name ⇒ Daksh Khot
Class ⇒ 6th B

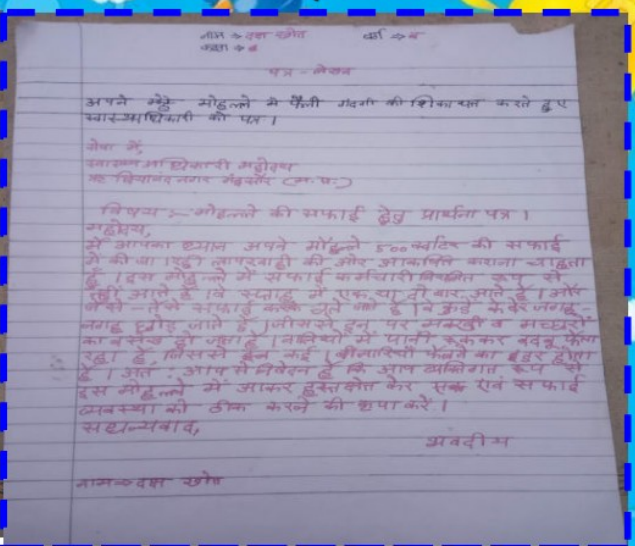

नाम ⇒ दक्ष खोत
कक्षा ⇒ 6 ब

पत्र - लेखन

अपने मोहल्ले में फैली गंदगी की शिकायत करते हुए स्वास्थ्याधिकारी को पत्र।

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
[illegible]

विषय :- मोहल्ले की सफाई हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,
मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले 500 व्यक्ति की सफाई में की जा रही लापरवाही की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस मोहल्ले में सफाई कर्मचारी निश्चित रूप से नहीं आते हैं। वे सप्ताह में एक या दो बार आते हैं। और जैसे-तैसे सफाई करके चले जाते हैं। वे कूड़े के ढेर जगह-जगह छोड़ जाते हैं। जिससे इन पर मक्खी व मच्छरों का बसेरा हो जाता है। नालियों में पानी रुककर बदबू फैला रहा है, जिससे कई बीमारियाँ फैलने का डर होता है। अतः आप से निवेदन है कि आप व्यक्तिगत रूप से इस मोहल्ले में आकर हुसकोत केर एवं सफाई व्यवस्था को ठीक करने की कृपा करें।

सहयोगवाद,
भवदीय
नाम ⇒ दक्ष खोत

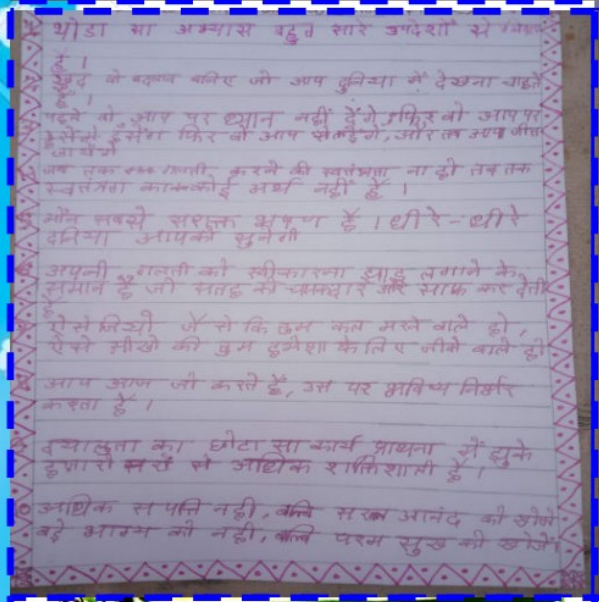

थोड़ा सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।

खुद को बदलाव करिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

पढ़ने वो आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वो आप पर हँसेंगे हँसेंगे फिर वो आप सुनेंगे, और तब उनका जीत जाओगे

जब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।

मौन सबसे सशक्त भाषण है। धीरे-धीरे दुनिया आपको सुनेगी

अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह से चमकदार और साफ कर देती है

ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो, ऐसे सीखो की तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।

आप आज जो करते हैं, उस पर भविष्य निर्भर करता है।

दयालुता का छोटा सा कार्य प्रार्थना से हमारे सपनों से अधिक शक्तिशाली है।

आशीक सम्पत्ति नहीं, बल्कि सरल आनंद की खोजें बड़े भाग्य की नहीं, बल्कि परम सुख की खोजें।

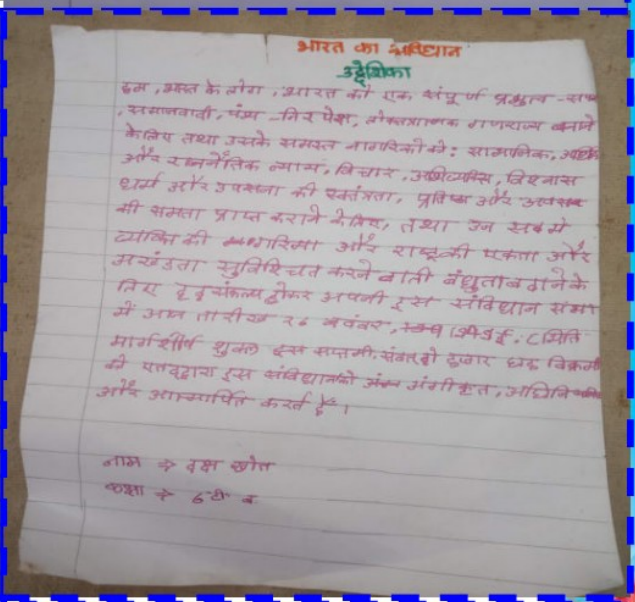

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी संवत दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

नाम ⇒ दक्ष खोत
कक्षा ⇒ 6th ब

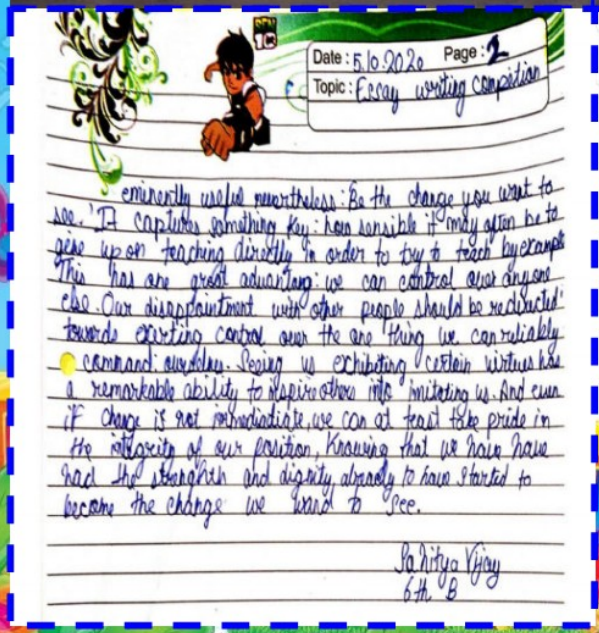

Date : 5.10.2020 Page : 2
Topic : Essay writing competition

eminently useful nevertheless: Be the change you want to see. It captures something key: how sensible it may often be to give up on teaching directly in order to try to teach by example. This has are great advantage: we can control over anyone else. Our disappointment with other people should be redirected towards exerting control over the one thing we can reliably command: ourselves. Seeing us exhibiting certain virtues has a remarkable ability to inspire others into imitating us. And even if change is not immediate, we can at least take pride in the integrity of our position, knowing that we have have had the strength and dignity already to have started to become the change we wish to see.

Sahitya Vijay
6th B

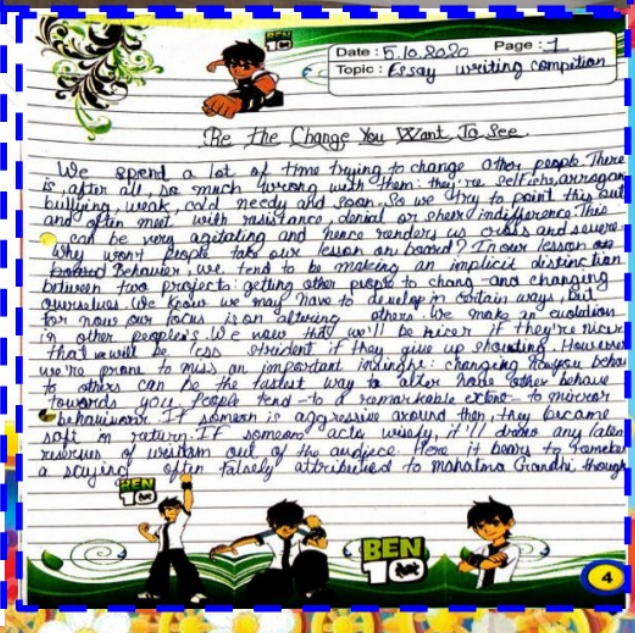

Date : 5.10.2020 Page : 1
Topic : Essay writing competition

Be The Change You Want To See.

We spend a lot of time trying to change other people. There is, after all, so much wrong with them: they're selfish, arrogant, bullying, weak, cold, needy and so on. So we try to point this out and often meet with resistance, denial or sheer indifference. This can be very agitating and peace renders us cold and severe. Why won't people take our lesson on board? In our lesson on Behavior, we tend to be making an implicit distinction between two projects: getting other people to chang and changing ourselves. We know we may have to develop in certain ways, but for now our focus is on altering others. We make an evaluation in other people's. We now that we'll be nicer if they're nicer, that we will be less stressed if they give up shouting. However we're prone to miss an important insight: changing how you behave to others can be the fastest way to alter how they behave towards you. People tend to a remarkable extent to mirror behaviours. If someone is aggressive around them, they become soft in return. If someone acts wisely, it'll draw any latent reserves of wisdom out of the audience. Here it bears to remember a saying often falsely attributed to Mahatma Gandhi, though

कक्षा 6 अ और ब सत्र 2020–21 के छात्रों के द्वारा की गई सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

संकलन कर्ताः– श्री मयूर वच्छानी टी जी टी सामाजिक विज्ञान एवं श्रीमती लीना रश्मी चौहान टी जी टी अंग्रेजी

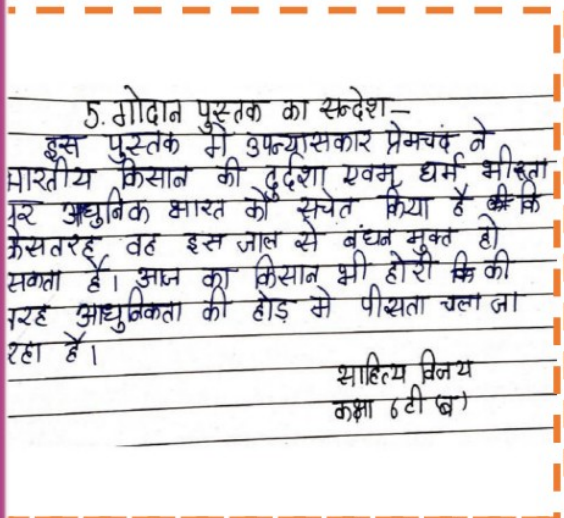

5. गोदान पुस्तक का सन्देश–

इस पुस्तक में उपन्यासकार प्रेमचंद ने भारतीय किसान की दुर्दशा एवम् धर्म भीरुता पर आधुनिक भारत को सचेत किया है कि किसतरह वह इस जाल से बंधन मुक्त हो सकता है। आज का किसान भी होरी की तरह आधुनिकता की होड़ मे पीसता चला जा रहा है।

साहित्य विनय
कक्षा 6 टी (ब)

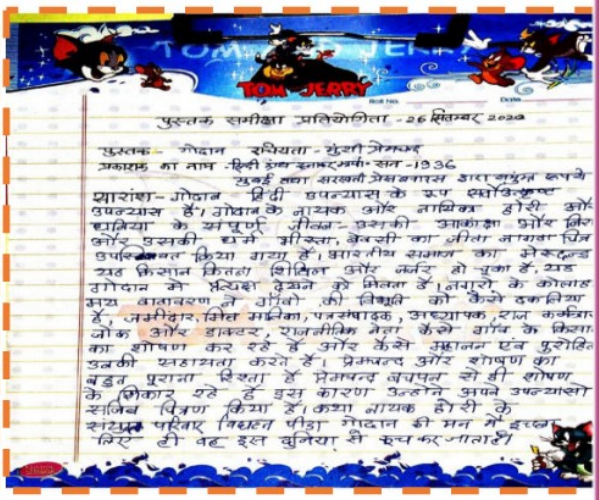

पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता - 26 सितम्बर 2020

पुस्तक - गोदान रचयिता - मुंशी प्रेमचन्द
प्रकाशक का नाम - हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्रा. सन - 1936
मुंबई तथा सरस्वती प्रेस बनारस द्वारा मुद्रित अपने

सारांश - गोदान हिंदी उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध उपन्यास है। गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया के संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा और उसकी धर्म भीरुता, बेटी का जीवन नाशक चित्र उपस्थित किया गया है। भारतीय समाज का भेदभाव यह किसान कितना शिथिल और जर्जर हो चुका है, यह गोदान से स्पष्ट देखने को मिलता है। नगरों के कोलाहल मय वातावरण ने गाँवों की विभूति को कैसे दमनित है, जमींदार, सिंह मालिक, पत्रसंपादक, अध्यापक, राज कर्मचारी जोंक और डाक्टर, राजनीतिक नेता कैसे गाँव के किसान का शोषण कर रहे हैं और कैसे मुखानन एवं पुरोहित उनकी सहायता करते हैं। प्रेमचन्द और शोषण का बहुत पुराना रिश्ता है प्रेमचन्द बचपन से ही शोषण के शिकार रहे हैं इस कारण उन्होंने अपने उपन्यासों सजीव चित्रण किया है। कथा नायक होरी के सपूर्ण परिवार विद्रोह पीड़ा गोदान की मन में इच्छा लिए ही वह इस दुनिया से कूच कर जाता है।

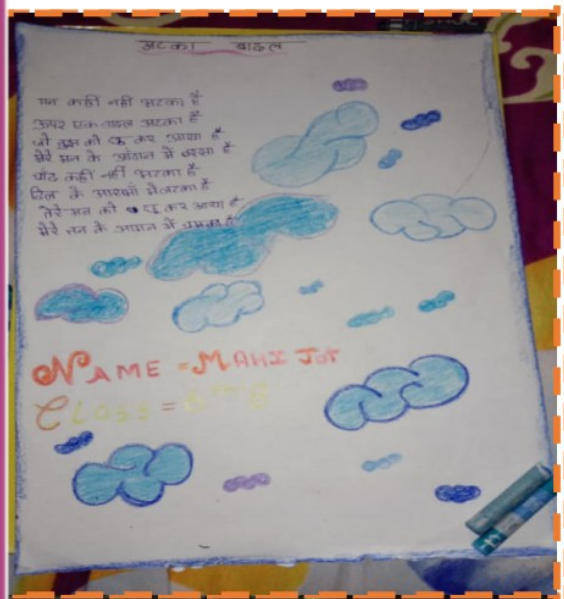

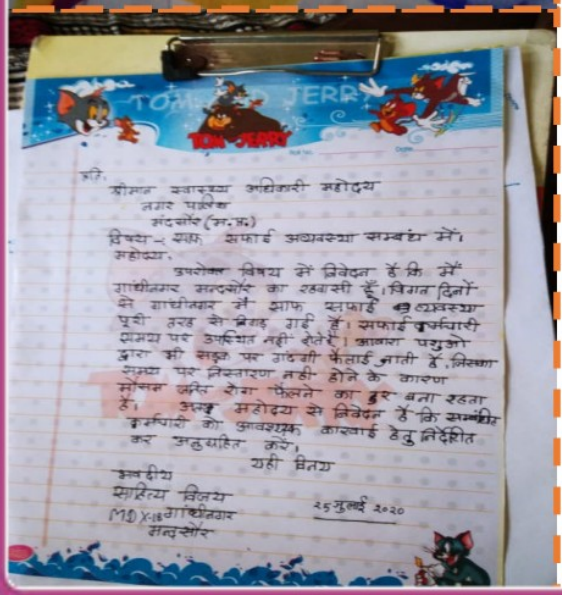

प्रति,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
नगर पालिका
मंदसौर (म.प्र.)

विषय - शहर सफाई अव्यवस्था सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि मैं गांधीनगर मन्दसौर का रहवासी हूँ। विगत दिनों से गांधीनगर में साफ सफाई अव्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ गई है। सफाई कर्मचारी समय पर उपस्थित नहीं होते हैं। आवारा पशुओं द्वारा भी सड़क पर गंदगी फैलाई जाती है, जिसका समय पर नियंत्रण नहीं होने के कारण मौसम जनित रोग फैलने का डर बना रहता है। अतः महोदय से निवेदन है कि सम्बंधित कर्मचारी को आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित कर अनुग्रहित करें।

यही विनय

भवदीय
साहित्य विनय
(7B) X-18 गांधीनगर
मंदसौर

25 जुलाई 2020

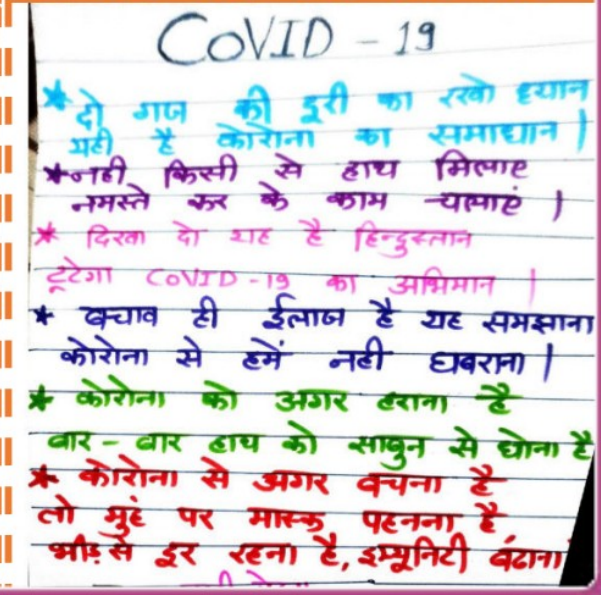

COVID - 19

* दो गज की दूरी का रखो ध्यान
यही है कोरोना का समाधान।
* नहीं किसी से हाथ मिलाए
नमस्ते कर के काम चलाएं।
* दिखा दो यह है हिन्दुस्तान
टूटेगा COVID-19 का अभिमान।
* बचाव ही ईलाज है यह समझाना
कोरोना से हमें नहीं घबराना।
* कोरोना को अगर हराना है
बार-बार हाथ को साबुन से धोना है
* कोरोना से अगर बचना है
तो मुंह पर मास्क पहनना है
भीड़ से दूर रहना है, इम्यूनिटी बढ़ाना

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

Anshika verma 10 A

रंगोली प्रतियोगिता

Anshika verma 10 A

पत्र लेखन

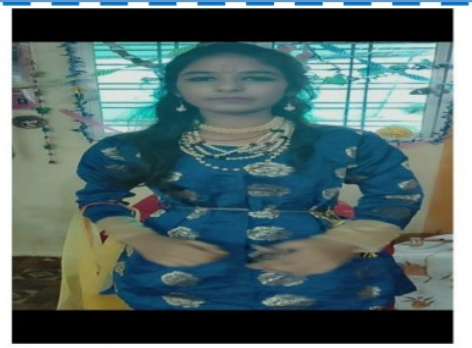

Anshika verma 10 A

पुस्तक समीक्षा

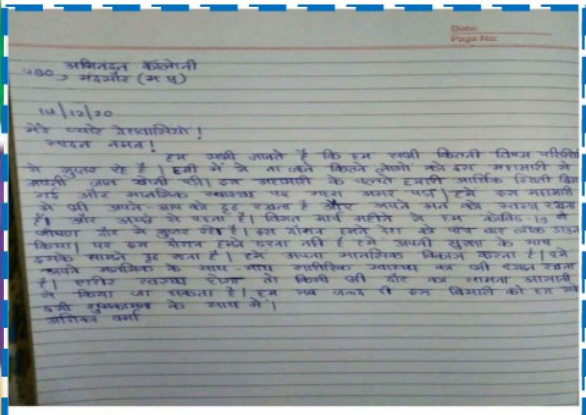

Anshika verma 10 A

एकल अभिनय

Anshika verma 10 A

वह परिवर्तन जो आप दुनिया में देखना चाहते है

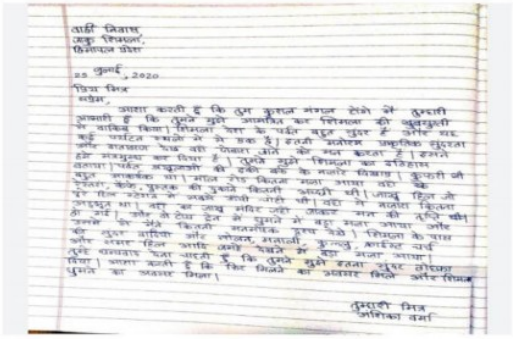

Anshika verma 10 A

पत्र लेखन (विषय :महामारी के दौरान और पश्चात् शारीरिक और मानसिक सुदृढ़ता)

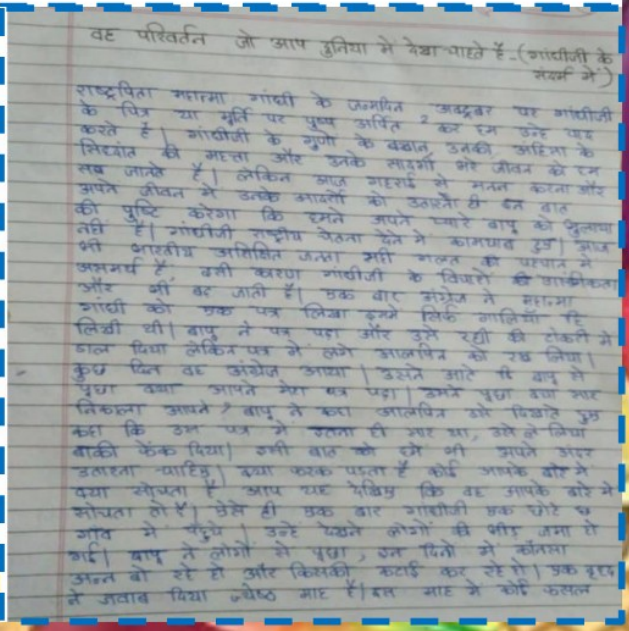

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

SOLO SONG COMPETITION

HARSHITA TELKAR (12 A)

POEM RECITATION

HARSHITA TELKAR(12 A)

Harshita Telkar

Payal Gehlot
10th 'A'

Rangoli Competition

Payal Gehlot
10th 'A'

निबंध (वह परिवर्तन जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं)

Rangoli competition
Sakshi Garwal
12th Science

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

Payal Gehlot
10th 'A'

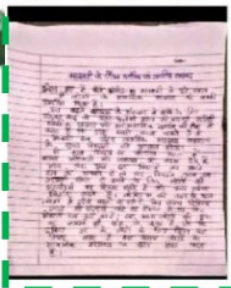

निबंध

...कविता...

प्रकृति

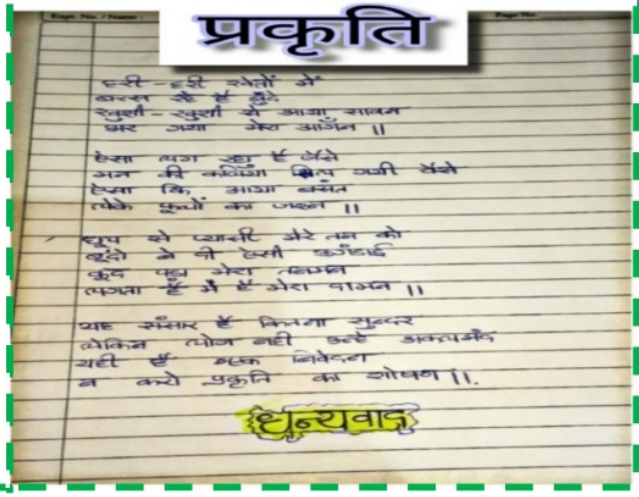

धन्यवाद

Salad decoration competition

HARSHITA TELKAR (12 A)

Khushi porwal
11 'B' COMMERCE
Gandhi ji ke Anmol Vachan

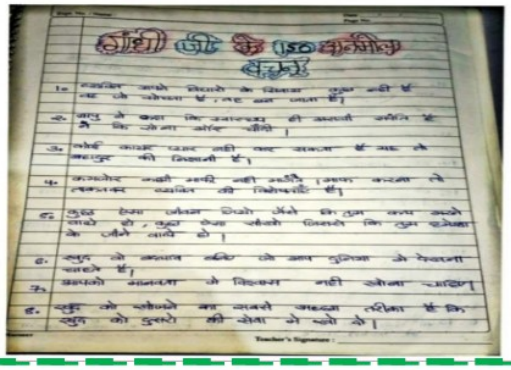

Anshika verma 10 A

कहानी लेखन एवं वाचन

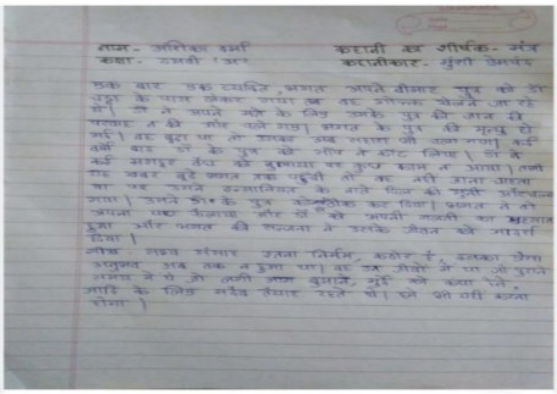

Nibandh

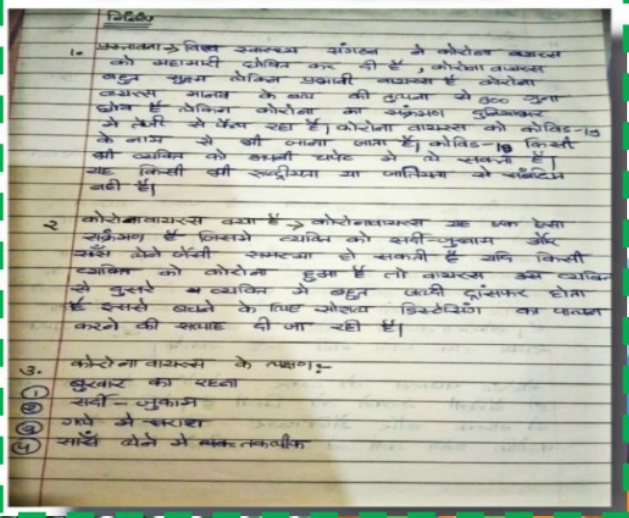

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

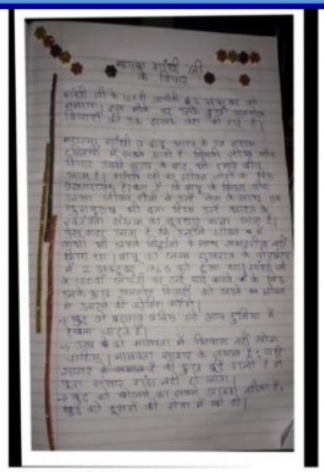

- SAKSHI DHANGAR
- 11TH COMMERCE

बाल राम कथा

-मृदुला पंजाबी 12वी विज्ञान

Hemadri vyas

11 science

Rangoli competition

Priyanshi bairagi

11 commerce

Rangoli competition

गांधी जी के अनमोल विचार

साक्षी गरवाल
12 वीं विज्ञान

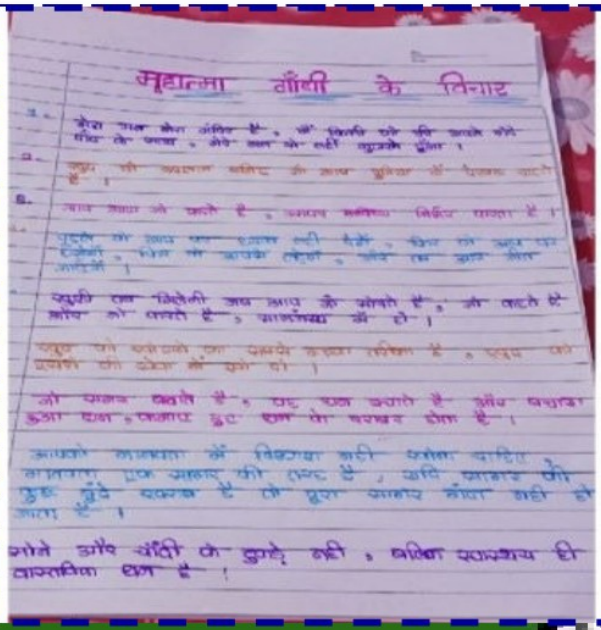

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

Name : Aditi Paliwal
Class : 10th B
Rangoli Competition

Sneha Jain
II B COMMERCE
RANGOLI COMPETITION

Rachana Sinam
XI commerce
Rangoli
competition

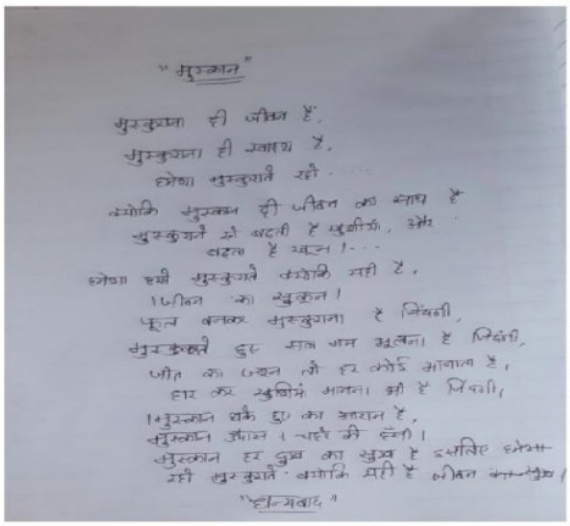

"मुस्कान"

मुस्कुराना ही जीवन है,
मुस्कुराना ही स्वास्थ्य है,
इसलिए मुस्कुराते रहो ...
क्योंकि मुस्कान ही जीवन का सार है
मुस्कुराने से बढ़ती है खुशियाँ, और
बढ़ता है अपना !...
इसलिए हमें मुस्कुराने क्योंकि यही है,
जीवन का सुकून।
फूल बनकर मुस्कुराना है जिंदगी,
मुरझाकर दूसरों को खुशियाँ देना है जिंदगी,
जीत का जश्न तो हर कोई मनाता है,
हार कर मुस्कुराने में मजा ही है जिंदगी,
मुस्कान वक्त के दुःख का निदान है,
मुस्कान आँसू, चहरे की हँसी।
मुस्कान हर दुःख का सुख है इसलिए हमेशा
यही मुस्कुराते क्योंकि यही है जीवन का सुख।

"धन्यवाद"

साक्षी टेपण (12वी 'विज्ञान')

1.पुस्तक समिक्षा

2.हिंदी काव्य पाठ

नारा लेखन

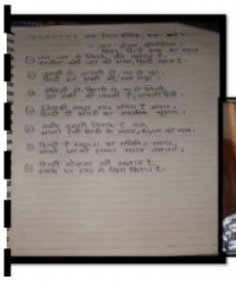

Name-Ishan kaushik
Class-10th b

Neelam Qureshi
11th Science
Rangoli Competition

संकलन कर्ता:- श्री हेमिल्टन मसीह पी जी टी हिंदी (सहशैक्षणिक गतिविधियाँ)

नारा लेखन

1. "पर्यावरण की हो सुरक्षा,
   जिससे बढ़कर नहीं तपस्या।"
2. पर्यावरण की रक्षा,
   दुनियाँ की सुरक्षा
3. आओ हो रही है कम,
   आओ पेड़ लगाए हम।
4. "हम सब मिलकर प्रदूषण को मिटाएंगे,
   और अपने पर्यावरण को स्वच्छ बनाएंगे।"
5. "पर्यावरण का रखे ध्यान,
   तभी लगेगा देश महान।"
6. "प्रकृति का ना करे हरण,
   आओ बचाए पर्यावरण"
7. "जिस दिन पृथ्वी में पर्यावरण पर खतरा होगा,
   उस दिन पृथ्वी में जीवन भी नहीं होगा!!"

हम वीर सपूत भारत माता के,
तूफान उठा देंगे।
भारत माँ की रक्षा के खातिर,
दिल जान लुटा देंगे।
छाती इसकी है वतन हमारा।
माटी इसकी है तिलक हमारा।
इस माटी के खातिर हम सब,
खुद की पहचान मिटा देंगे।

हम वीर सपूत भारत माता के,
तूफान उठा देंगे।
भारत माँ की रक्षा के खातिर,
दिल जान लुटा देंगे।

कश्मीर इसका है चमन हमारा।
भारत माँ के मस्तिष्क का तारा।
इसके खातिर हम अपने जीवन का,
हर सुख चैन श्रृंगार मिटा देंगे।

हम वीर सपूत भारत माता के,
तूफ़ान उठा देंगे।
भारत माँ की रक्षा के खातिर,
दिल जान लुटा देंगे।

Kashvi saxena 10th "A"

Khushi porwal
11 'B' COMMERCE

Gandhi ji ke Anmol Vachan

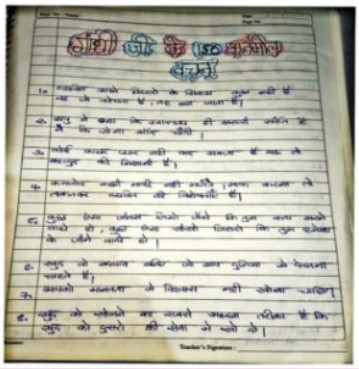

वह परिवर्तन हो जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्होंने अहिंसा और सत्य का मार्ग लोगों को दिखाया उनकी कही हुई बात में एक बात यह भी शामिल है कि वह परिवर्तन खुद में भी करो जो तुम दुनिया में देखना चाहते हो। बात सच की है। यदि हम सामने वाले से ईमानदारी की उम्मीद करते हैं तो हमें स्वयं भी ईमानदारी होना पड़ेगा। यदि हम ईमानदार नहीं और सामने वाले से ईमानदारी चाहे तो यह बेईमानी होगा। जैसा बर्ताव हम दूसरों से खुद के प्रति चाहते हैं वैसा ही बर्ताव हमें स्वयं को करना चाहिए, इसके लिए पहले हमें स्वयं को बदलना होगा, यदि हम दुनिया में बदलाव चाहते हैं।

असलन, हम अपने देश को साफ, सुथरा देखना चाहते हैं, चाहते हैं कि आम लोग सार्वजनिक स्थानों पर यह वहां कचरा न फेंके तो हमें चाहिए कि पहले वैसा गलती हम स्वयं करें, हम चाहते हैं हम से दुनिया प्रभावित बनी रहे, लोग हमारी तारीफ करें, तो इसके लिए सबसे पहले हमें तारीफों में कंजूसी की आदत को प्राप्त करना चाहिए, देखा गया है कि अगर कोई चीज सामने वाले व्यक्ति की अच्छी होती है तो तारीफ करने के बजाय जलन महसूस करने लगते हैं। हम शिकायत करते हैं। समाज में कह रहा है। लोग ऐसे सोचते हैं। इसकी विचारधाराएं ऐसी हैं। कोई ऐसे नहीं सोचता। समाज हमसे ही तो मिलके बना है।

कहानी कथन

- कथाकार मन्नू भंडारी

कहानी ~**मजबूरी**

- **गरिमा शर्मा{12वी वाणिज्य}**

"व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं,
बल्कि उसके चरित्र से होती है।"

पहली बात जो आपको पता होनी चाहिए कि अंतर एकमात्र स्थिर चीज है। हम कुछ बदलाव से गुजर रहे हैं प्रतिदिन। हो सकता है, हम इन बदलावों को अपनी नग्न आँखों से नहीं देख सकते, लेकिन छोटे-छोटे बदलाव हर समय हो रहे हैं।

हालाँकि, हम जो कर सकते हैं वह है सकारात्मक बदलाव का विकल्प चुनना ठीक है, मनुष्य के रूप में, हम हमेशा अपनी उंगलियों को दूसरों का इंगित करते हैं। लेकिन हम अपने नकारात्मक लक्षणों को नोटिस करने में विफल रहते हैं। हमें समझना होगा कि, हमें पहले खुद को बदलने की जरूरत है। उसके बाद हम दूसरों की गलतियों को इंगित करने की स्थिति अर्जित करेंगे।

"मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है,
सत्य मेरा भगवान है,
अहिंसा उसे पाने का साधन.."
— महात्मा गांधी

स्वतंत्रता एक जन्म की भांति है।
जब तक हम मृत्यु में स्वतंत्र नहीं हो जाते
तब तक हम परतंत्र ही रहेंगे।
— महात्मा गांधी

Annu Jat
12th Commerce

केन्द्रीय विद्यालय मंदसौर